महोबा जनपद का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान

(सन् 1857 से 1947 ई0 तक)

बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय, झांसी में राजनीति विज्ञान विषय में पी-एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

t 2008

2005

निर्देशक
डॉ० भवानीदीन
रीडर-राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर (उ०प्र०)

गवेषक
लाल चन्द्र अनुरागी
प्रवक्ता-राजनीति विज्ञान
वीर भूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर (उ०प्र०)

बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय, झांसी

📱 ९४१५१७०२०२, ९८३८७१३४९१

डॉ० भवानीदीन
रीड़र - राजनीति विज्ञान

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर (उ०प्र०)

प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री लाल चन्द्र अनुरागी, प्रवक्ता - राजनीति विज्ञान, वीर भूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महोबा (उ०प्र०) ने पी-एच०डी० की उपाधि हेतु शोध कार्य मेरे निर्देशन में किया है, इनका शोध प्रबन्ध "महोबा जनपद का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान (१८५७ से १९४७ तक)," मेरी दृष्टि में मौलिक तथा पी-एच०डी० की उपाधि हेतु पूर्णतः उपयुक्त है।

वर्ष - २००५

डॉ० भवानीदीन
शोध - निदेशक
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हमीरपुर (उ०प्र०)

आमुख

स्वतन्त्रता के अभाव में किसी के भी विकास का कोई नियोजन नहीं हो सकता। यह राष्ट्र के हर नागरिक के समुन्नत विकास की मेरुदण्ड होती है। स्वाधीनता का सम्बल ही किसी भी देश का प्रमुख आलम्ब होता है। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्ड इसकी रक्षा के दो प्रमुख कवच होते हैं। आपसी कलह, भितरघात एवं स्वार्थपरता किसी भी देश की स्वतन्त्रता को परतन्त्रता में परिवर्तित करने के लिए पर्याप्त मानी जा सकती है, लगभग दो सदियों तक भारत का ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहकर पिसते रहना देश के राष्ट्रीय बिलगाव का ही प्रतिफल था।

अत्याचार, अनीति, अन्याय एवं अधर्म से पीड़ित, दमित एवं तृसित जनता दासता के बंधन से मुक्त होने के लिए मुक्ति - संग्राम का ताना - बाना बुनने लगी। स्वातन्त्र्य प्राप्ति के इसी भाव ने भारत के भावी संघर्ष के लिए आवश्यक जमीन तैयार की। आसेतु हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक हर वर्ग के व्यक्ति ने अपना - अपना दायित्व समझा और उसने अपने को यथा सम्भव उत्सर्ग के लिए उद्यत किया।

इस तरह से शीघ्र ही सारा भारत स्वातन्त्र्य चेतना की भावना से अभिभूत हो उठा। भारत के इस मुक्ति - समर में देश के हृदय प्रदेश के रूप में विश्रुत उत्तर प्रदेश की प्रभावी भूमिका रही। उत्तर प्रदेश के हर मण्डल की स्वाधीनता की लड़ाई में जुझारू पहल रही, जंगे आजादी में जनपदीय पुरोधत्व को

भुलाया नहीं जा सकता। अन्ततः देश की आजादी का सपना समवेत सहयोग से साकार हुआ। भारत वर्ष का प्रमुख प्रान्त उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड का अतीत गौरवशाली रहा है। हर काल खण्ड में इस क्षेत्र की अपनी एक अलग पहचान रही है, अतीत से लेकर वर्तमान तक इसके इतिहास का हर पन्ना अविस्मरणीय गाथा को अन्तस्थ किये हुए है। बुन्देलखण्ड के जनपदों में महोबा एक नव सृजित जनपद है, यह ११ फरवरी १९९५ में जिला के रूप में अस्तित्व में आया, चन्देल, मुगल, बुन्देल एवं आँग्ल काल के हर चरण में महोबा वीर भूमि के रूप में लोक विश्रुत रहा है। ९वीं सदी से लेकर १२वीं सदी तक इस भूभाग में चन्देलों का शासन रहा, मध्य युग में चन्देलों का शासन भारतीय इतिहास में अपनी एक अलग प्रसिद्धि के लिए विख्यात रहा है। चन्देल नरेशों में चन्द्रवर्मन एक ऐसे शासक हुए हैं, जिनके समय में चन्देल कीर्ति बहुआयामी रही। इसी चन्देल शासक ने १८३१ में महोबा को बसाया था, कुछ अन्य अभिलेखों में महोबा को महोत्सव नगर, महोबक एंव महोदय के नाम से भी जाना जाता है।

आल्हा - ऊदल जैसे सूरों, मदन सागर, कीरत सागर एवं विजय सागर जैसे सुरम्य सरोवरों के शहर तथा पुरावैभव के पर्याय के रूप में विश्रुत इस नगर का वैभवशाली इतिहास रहा है। महोबा जनपद कुलपहाड़ तथा महोबा नामक दो तहसीलों में विभक्त है। इस जनपद के पहाड़िया, कुलपहाड़, सुगिरा, गौरहारी, महुआ बाँध, पिपरामाफ, अजनर, भड़रा, महोबा, मकरबई एवं विलबई जैसे अनेक ऐसे गाँव रहे हैं, जिन्होंने भारत के स्वाधीनता संघर्ष में पूरे मनोयोग से भाग लिया है, किन्तु

इस जनपद के संघर्षी योगदान के अछूते, अंजाने एंव अज्ञात तथ्यों की ओर किसी शोधार्थी का ध्यान नहीं गया है, यद्यपि स्फुट रूप से यत्र - तत्र कुछ तथ्य अवश्य मिल जाते हैं परन्तु प्रामाणिकता के अभाव में वे जन सामान्य के लिए विश्वास एवं प्रेरणा के स्रोत नहीं बन सके। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए मैंने अपने शोध का विषय "महोबा जनपद का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान (१८५७ से १९४७)" चयन किया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का गहन अध्ययन, साक्षात्कार एवं पुस्तकालय पद्धति पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन आठ अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय में १८५७ के स्वातन्त्र्य संघर्ष में महोबा के अनुदाय का विवेचन किया गया है। हमीरपुर और महोबा जनपद का १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम में योगदान का उल्लेख बहुत कम दृष्टव्य है। स्वातन्त्र्य समर के अनुशीलन से यह तथ्य सुस्पष्ट हुआ है कि महोबा का सत्तावनी संघर्ष का ग्राफ बहुत ऊँचा है। महोबा जनपद के अजनर थाने के गाँव झींझन के महान सपूत दिमान देशपत बुन्देला ने १८५७ के महान संग्राम में गोरी सरकार की नाक में दम कर रखा था। दिमान देशपत के स्वातन्त्र्य संघर्ष की युयुत्स - यज्ञ में इसके भाई नन्हे दिमान, भांजा कुंजलशाह, भतीजा रघुनाथ सिंह तथा अन्य क्रांतिवीरों में फरजन्दअली, बखत सिंह, मुकुन्द सिंह तथा बरजोर सिंह आदि ने संघर्षी सहभाग की समिधायें डाली थीं।

जैतपुर के महाराज पारीछत की रानी फत्तमवीर ने भी १८५७ के स्वातन्त्र्य समर में कम योगदान प्रदान नहीं किया। उसने भी अंग्रेजों से लोहा ले कर अपनी लौह - ललकार से उनको कई बार अवगत कराया। प्रस्तुत अध्याय के

अन्तर्गत उन संघर्षी शूरों का उल्लेख है जिनका इतिहास में स्फुट उल्लेख भी नहीं मिलता।

दिमान देशपत बुन्देला के साथ भितरघात हुआ था, उसके साथ दौनी गाँव के मिहीलाल पुरोहित द्वारा यदि भितरघात न किया जाता तो बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों के न पैर जम पाते और न ही वे भारत को अधिक दिनों तक गुलाम बनाकर रख सकते थे। इस तरह अन्त में यही कहा जा सकता है कि १८५७ के स्वातन्त्र्य समर में प्रभिागिता की दृष्टि से महोबा पौरुष के ऊँचे पायेदान पर खड़ा है।

दूसरे अध्याय में असहयोग आन्दोलन में महोबा की भूमिका का उल्लेख किया गया है। गाँधी जी के स्वातन्त्र्य आन्दोलनों में वैसे तो पूरे बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) ने प्रभावी पहल की किन्तु इस क्षेत्र में महोबा पीछे नहीं रहा। यहाँ के पं० बैजनाथ तिवारी, नाथूराम तिवारी, रज्ज़ब अली आजाद, बैजनाथ सक्सेना, दीनदयाल तिवारी, पूरन लाल अग्रवाल, बृजगोपाल सक्सेना तथा विशेश्वर दयाल पटेरिया जैसे अनेक स्वातन्त्र्य शूरों ने गाँधी जी के आन्दोलनों में महती भूमिका निभायी। कुलपहाड़ के १६३० के ऐतिहासिक आन्दोलन में भगवानदास बालेन्दु अरजरिया तथा उनकी पत्नी किशोरी देवी अरजरिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इस अध्याय में किये गये अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि महोबा जनपद के स्वातन्त्र्य सेनानियों का संघर्षी सहभाग किसी भी दृष्टि से कम नहीं रहा।

तीसरे अध्याय में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में जनपद की प्रतिभागिता को रेखांकित किया गया है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में

वैसे तो बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) का सदैव प्रतिनिधित्व होता था। अधिवेशन में हर जनपद से प्रतिनिधि पहुँचते थे, जहाँ तक महोबा की अधिवशनों में सहभागिता का प्रश्न है तो इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन इस तथ्य पर बल देता है कि हर कांग्रेस अधिवेशन में महोबा का प्रतिनिधित्व रहा है, जहाँ से दिशा निर्देश लेकर स्वातन्त्र्य सेनानियों ने हर आन्दोलन में और जोर - सोर से प्रतिभाग किया है। महोबा के शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, पं० बैजनाथ तिवारी एवं भगवानदास बालेन्दु अरजरिया जैसे अनेक स्वातन्त्र्य वीर हुए हैं, जिन्होंने अधिवेशनों में भाग लेकर महोबा की पहचान को राष्ट्रीय आरेख में शामिल किया है।

चौथे अध्याय में जनपद में सम्पन्न हुए राजनैतिक सम्मेलनों का वर्णन किया गया है। आजादी के संघर्षकाल में राष्ट्रीय स्तर पर, जिस तरह से कांग्रेस के अधिवेशनों ने सारे देश के लिए भावी आन्दोलन के स्वरूप हेतु कलेण्डर घोषित करते थे, उसी तरह जिले स्तर पर आयोजित जिला राजनैतिक सम्मेलनों के आयोजन का भी उद्देश्य यही रहता था कि कार्यकर्ताओं के लिए जिले स्तर पर दिशा - निर्देश जारी हो जायें और उन्हीं के अनुसार स्वतन्त्रता संग्राम का अनुगमन अनुमन्य हो।

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन से यह उजागर होता है कि जिला राजनैतिक सम्मेलनों की संस्कृति महोबा मे भी रही है। झाँसी के १६२१ के राजनैतिक सम्मेलन में महोबा का प्रतिनिधित्व हुआ था, इसके अतिरिक्त महोबा में १६२२ में भी राजनैतिक सम्मेलन हुआ था, जिसके आयोजन के मूल में महोबा के

पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन और भगवानदास बालेन्दु अरजरिया सहित कई स्वातन्त्र्य वीरों का सराहनीय सहभाग रहा।

पाँचवे अध्याय में स्वातन्त्र्य संघर्ष के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महोबा की भूमिका का विवेचन किया गया है। गाँधी जी द्वारा आयोजित आन्दोलनों के कई चरण रहे हैं, जिनमें असहयोग आन्दोलन से लेकर १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन तक लगभग ढाई दशकों के संघर्षी - सफर ने कई उतार - चढ़ाव देखे हैं। गाँधी आन्दोलनो में १६३० से आयोजित सविनय अवज्ञा आन्दोलन का अपना एक अलग महत्व रहा है। सविनय अवज्ञा आन्दोलन गाँधी जी के आन्दोलनों में एक प्रभावी पहल थी, जिसमें सारे देश ने सिरकत की थी। इस दृष्टि से महोबा पीछे नहीं रहा।

इस अध्याय के अध्ययन से इस बिन्दु को बल मिलता है कि यहाँ के बहुत से सेनानियों के सहभाग का कहीं पर उल्लेख नहीं है, जबकि अनुल्लिखित वीरों की संघर्ष में बराबर की भागीदारी रही है। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जिन अरेखांकित स्वातन्त्र्य सेनानियों का योगदान रहा है, उनमें मोहन लाल, हर प्रसाद, सोहन लाल, काशी प्रसाद, बालमुकुन्द, छोटे लाल, रामनरायण, गौरी शंकर, मुकुन्द लाल, देवी सिंह, हरजू, नाथूराम एवं हल्कू जैसे अनेक वीर उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने बिना किसी श्लाघा के संघर्ष कर देश को आजाद कराने में अहम् योगदान प्रदान किया है।

छठवें अध्याय में स्वाधीनता आन्दोलन में महोबा के प्रेस की भूमिका को रेखांकित किया गया है। प्रेस को लोकतन्त्र में चौथा स्तम्भ माना जाता है इससे, प्रेस

की कितनी बड़ी भूमिका होती है, समझा जा सकता है। सूरमाओं ने आन्दोलन को जहाँ भौतिक आधार प्रदान कर आगे बढ़ाया था, वहीं प्रेस ने आन्दोलन को मानसिक सहयोग प्रदान कर अग्रोन्मुख किया था। संघर्षी अभियान मे प्रेस की केन्द्रीय भूमिका रही है। प्रेस सदैव दिग्दर्शक की भूमिका निभाता है।

महोबा के स्वातन्त्र्य संघर्ष को आगे बढ़ाने में प्रेस कभी भी पीछे नहीं रहा है। 'बुन्देलखण्ड केसरी', 'सत्याग्रही' तथा 'क्रांतिकारी' जैसे समाचार पत्रों ने अग्निधर्मा आलेखों से महोबा में आजादी की अलख जगाने में बहुत शानदार भूमिका निभायी है। इन पत्रों के माध्यम से भगवानदास बालेन्दु अरजरिया, बैजनाथ तिवारी, नाथूराम तिवारी एवं बृजगोपाल सक्सेना जैसे कलम के सिपाहियों के अवदान को नकारा नहीं जा सकता।

सातवें अध्याय में १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में महोबा की संघर्षी भूमिका का उल्लेख किया गया है। भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास में तीन ऐसी क्रांतियाँ हुई हैं, जिनके उल्लेख के बिना आजादी के संग्राम का इतिहास अधूरा माना जाता है। वे संघर्ष, जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था, सदैव स्मरणीय रहेगें, उनमें १८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम, १६१५ का गदर-समर तथा १६४२ की अगस्त क्रांति प्रमुख है।

इस अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि १६४२ के भारत छोड़ों आन्दोलन में महोबा की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं रही। रज्ज़ब अली आजाद, भगवानदास बालेन्दु, बैजनाथ तिवारी तथा शंकर लाल जैन जैसे अनेक वीरों ने अगस्त क्रांति में प्रभावी पहल की थी।

आठवें अध्याय में वार फण्ड विरोधी अभियान के अन्तर्गत महोबा के सहभाग का वर्णन किया गया है। १६३६ में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ था, आँग्ल सरकार ने भारत को सदैव कोरे आश्वासनों के आधार पर मूर्ख बनाया है, उसके आश्वासन कभी भी साकार नहीं हुए। १६३६ के विश्व युद्ध काल में अंग्रेजों द्वारा भारत पर चन्दा जैसे बोझ लादने में भी चूक नहीं की गयी। गोरो ने भारतीयों से चन्दा वसूलना प्रारम्भ किया, जिसका भारतीयों ने विरोध किया था, यह सिलसिला पूरे देश में चल रहा था। इस क्रम में महोबा के एक जुझारू गाँव पहाड़िया का कम योगदान नहीं रहा, इस गाँव वार फण्ड के विरोध में गोरों तथा जनता के बीच संघर्ष हुआ था, जिसमें पुलिस ने जनता पर गोली चलायी थी, जिसमें ४५ वीरों को चोंटें आयी थी, इनमे से सुखई दाऊ लोधी गम्भीर रूप से घायल हुआ था, जिसकी जेल में मृत्यु हो गयी थी। इस बलिदानी पर आज भी पहाड़िया गाँव को गर्व है। छक्की लाल राजपूत, बाबू बैजनाथ सक्सेना, वीर सिंह लोधी, सुखई दाऊ तथा बल्देव कुम्हार इस वार फण्ड आन्दोलन के अगुवाकार थे।

इस अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महोबा का आन्दोलन के हर चरण में शानदार योगदान रहा है। इस तरह स्वातन्त्र्य संन्ग्राम में महोबा के १८५७ से १६४७ तक के योगदान को सिलसिलेवार शोध प्रबन्ध में स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रबन्ध के सम्पूर्ण कलेवर एवं पूर्णता के लिए मैं सर्व प्रथम अपने शोध निदेशक, डॉ० भवानीदीन, रीडर– राजनीति विज्ञान, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर के प्रति श्रद्धानवत हूँ, जिनके सुलभ, समुचित एवं गुणात्मक

निर्देशन में यह शोध कार्य पूर्ण हुआ, तत्पश्चात् मैं अपने पूज्य पिता स्व० श्री पंचम लाल व पूजनीया माता श्रीमती राधा रानी का भी कृतज्ञ हूँ, जिनके आशीष के फलस्वरूप यह दुरूह कार्य पूरा हुआ। मैं डॉ० रमेश चन्द्र, प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर तथा प्रो० एस०पी० गुप्ता, प्राचार्य, वीर भूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महोबा का भी हृदय से आभारी हूँ, जिनके सुभाशीष का सम्बल मेरे साथ सदैव रहा। मैं अपने मित्र श्री देवेन्द्र कुमार खरे एवं महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों का भी उपकृत हूँ, जिनकी प्रेरणा से यह शोध कार्य पूर्ण हुआ। राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली, उ०प्र० राज्य अभिलेखागार लखनऊ, क्षेत्रीय अभिलेखागार इलाहाबाद, शहीद शोध संस्थान लखनऊ एवं राजकीय पब्लिक लाइब्रेरी इलाहाबाद तथा हिन्दी भवन के पुस्तकालय अध्यक्षों, साथ ही जिला अभिलेखागार हमीरपुर के तत्कालीन अपर जिलाधिकारी श्री अखिलेश कुमार ओझा, वरिष्ठ लिपिक, मु० शाहिद, व एस०पी० तिवारी के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे शोध – सामग्री के अध्ययन की सुविधा प्राप्त कराई।

मैं मनोज कुमार गुप्ता, एम०के० कम्प्यूटर्स, जज़ी रोड हमीरपुर के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने समय से इस शोध कार्य को मुद्रित करने में पूरा सहयोग प्रदान किया।

वर्ष २००५

लाल चन्द्र अुनरागी
प्रवक्ता– राजनीति विज्ञान
वीर भूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यलय
महोबा (उ०प्र०)

अनुक्रम

सामाजिक बहिष्कार, संवादहीनता का अस्त्र, जिलाधीश की पहल, सविनय अवज्ञा के प्रमुख सहभागी सेनानी, भगवानदास बालेन्दु अरजरिया, सविनय अवज्ञा और शंकर लाल जैन, सविनय अवज्ञा और मुंशी मण्टी लाल, स्वातन्त्र्य संघर्ष और सरस्वती देवी, मुशी मण्टी लाल और जैतपुर का स्वातन्त्र्य संग्राम सम्मेलन, सविनय अवज्ञा और मोहन लाल, सविनय अवज्ञा और हर प्रसाद, सोहन लाल, काशी प्रसाद और बाल मुकुन्द, छोटे लाल, रामनरायन शिवराम और गौरी शंकर, सत्याग्रह और मुकुन्द लाल, स्वातन्त्र्य संघर्ष और देवी सिंह, जालिम ढीमर का साहस, हरजू का प्रयास, सत्याग्रह ओर नाथूराम, माधव का अभियान, सत्याग्रह और भरत जी, हल्कू की भूमिका, लक्ष्मन का लगाव, सत्याग्रह और बैजनाथ सक्सेना, व्यक्तिगत सत्याग्रह और बैजनाथ सक्सेना, सत्याग्रह और लाल बहादुर गोसांई, सत्याग्रह और पूरन लाल

प्रथम अध्याय

प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष और महोबा

प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष और महोबा

देश में प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष का शिलान्यास औचक नहीं था अपितु इसके मूल में शताधिक वर्षों का आँग्ल सत्ता का आम दमन, उत्पीड़न और अत्याचार अन्तर्निहित था।[१] इसके पूर्व कि महोबा का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में क्या अनुदाय रहा, के उल्लेख करने के पूर्व प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष पर एक दृष्टिपात करना प्रासंगिक होगा।

प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष : एक विहंगावलोकन

किसी भी देश का अतीत इस ऐतिहासिक सच को सदैव पृष्ठांकित रखता है कि पुरावैभव का विगलन विखण्डन की वीथिका से होकर गुजरता है। कोई भी देश तब तक पराभूत नहीं होता जब तक कि उसके पूत कपूत नहीं होते, भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि भारतीय प्रभुसत्ता तब तक अक्षुण्ण रही है जब तक भारतीयों में भितरघात की भित्तियां विनिर्मित नहीं हुईं।[२]

---

१. डॉ० सुभाष कश्यप, स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, १९९७, पृ०सं०- १२।

२. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, महोबा, बसन्त प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०- १०।

भारतीय नरेशों की निष्ठायें जब तक निष्प्रभावी रहीं तब तक देश दासता के दाह से दूर रहा किन्तु जैसे ही नृपों की नीति राष्ट्रगत न होकर आत्मगत हुई, वैसे ही राष्ट्रीय एकता की धारणा ध्वस्त हुई और राष्ट्र आपसी रार की भेंट चढ़ गया, तदुपरान्त दासता की दीवालों में कैद हो गया।

भारतीय इतिहास का हर चरण इस तथ्य का जीवन्त गवाह है कि जब जब आपस की एकजुटता जर्जर हुई है, तब तब बाह्य आक्रान्ता साफल्य के शिखर में आरूण होने में कामयाब हुए हैं। मुगल तथा आँग्लकाल की कहानी के कलेवर का कथानक भारतीयों के अन्तर्कलह का यथार्थ दस्तावेज रहा है, जिस समय मुगलकाल में भारतीय धरती ने पुर्तगाल, हालैण्ड, फ्रान्स तथा इंग्लैण्ड का वाणिज्यिक आगमन हुआ, उस समय हिन्दुस्तान के नवाब तथा नरेश नर्तकीय नीति के नेह-नीर में डूबे हुए थे, व्यापारिक कम्पनियों में ईस्टइण्डिया कम्पनी प्रगति के पायदान में सबसे आगे खड़ी थी।[१]

मुगलों के पराभव के बाद देशी उद्योगों को नष्ट किया जाने लगा, किसान दयनीय दशा को प्राप्त हो गये, किसानों की माली हालत का ग्राफ बहुत नींचे आ गया। रियासतों की आपसी रार तथा राग-द्वेष ने राजाओं को कहीं का नहीं छोंड़ा, वे एक-एक कर सभी पराजित होते गये। ''फूट डालो और राज करो की नीति साकार होने लगी।

१- अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली, मैकमिलन इण्डिया लिमि०,

आँग्ल वाणिज्य उत्कर्ष के सोपानों को पार करता गया। अंग्रेजो के दमन तथा उत्पीड़न की कोख से प्लासी-युद्ध का जन्म हुआ जो ब्रिटिश प्रपंच के पीयूष का पान कर प्राच्य-भूमि में सदियों तक सरसब्ज रहा।

१७५७ के प्लासी-युद्ध में लार्ड क्लाइव ने कूट-कला में कर्म-कूची से रार की जो छद्म रेखायें खींच कर सफलता के जिस आँग्ल चित्र को तैयार किया था, उसके पृष्ठ में भारत के क्षात्र धर्म के छीटों के आरेख भी अंकित हो गये थे, जो प्लासी-काल से ही बदले की पृष्ठ भूमि में विकसित होते रहे।[1] १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष के शिलान्यास कारक तत्वों में कारतूसों में चर्बी के प्रयोग तथा लार्ड डलहौजी की हड़प नीति को अहम् माना जाता है, जो सच नहीं है।[2] १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में कारतूसों में चर्बी के प्रयोग तथा डलहौजी की राज्यों को हड़पने की नीति को कारगर कारक तो कहा जा सकता है किन्तु कुछ भारतीय तथा आँग्ल इतिहासकारों के अनुसार इन्हें एक मात्र उत्तरदायी कारण माना जाता है, जो यथार्थ नहीं है। १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम के मूल में लार्ड हेस्टिंग्स, लार्ड वेलेजली तथा डलहौजी को भी जवाब देह कहा जाता है, जिनकी काली करतूतों ने सत्तावनी संघर्ष के लिए संघर्षी जमीन तैयार की थी।

---

१. डॉ० भवानीदीन, वैभव बहे बेतवा धार, कानपुर, साहित्य रत्नालय, १९९८, पृ०सं०- ०३।

२. डॉ० सुभाष कश्यप, स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, १९९७, पृ०सं०- १२

प्लासी - युद्ध से लेकर १८५७ के मध्यकाल में ईस्टइण्डिया कम्पनी ने भारत में चालबाजी, कलाबाजी तथा द.गाबाजी की जो बेल लगायी थी, उसी से १८५७ में उस बारुदी-वृक्ष का विकास हुआ, जिसने अंग्रेजों के फौलादी फौजी-भित्तियों को भूलुंठित कर विद्रोही भारत का आभास कराया।

१८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष को उद्दीप्त करने वाले तत्वों में स्वधर्म तथा स्वराज्य प्रमुख थे, धर्म पर आये बारुद को जानकर स्वधर्म की रक्षा हेतु दीन-दीन का निनाद आरम्भ हुआ।[1] मात्रभूमि को दासता की लोह-श्रृंखलाओं से मुक्त कराने हेतु स्वराज्य प्राप्ति की पावन अभिलाषा के लिए दास्य श्रृंखला पर किये गये प्रबल प्रहार ही प्रथम स्वतन्त्रा संग्राम के मूल कारण थे।

बुन्देलखण्ड : एक दृष्टि में

इसके पूर्व कि बुन्देलखण्ड के नामकरण का संक्षिप्त विवेचन किया जाय, इस भूभाग के माहात्म्य पर विहंगम् दृष्टि डालना समीचीन होगा। बुन्देली वसुधा बहुआयामी व्यक्तित्वों की विश्वा है। यह जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा योगिराज कृष्ण की कर्मधरा रही है, वहीं इसे तुलसी, केशव, बिहारी, मैथिलीशरण गुप्त एवं वृंदावनलाल वर्मा जैसे नर-रत्नों की रत्न-गर्भा होने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है।[2]

---

१. विनायक दामोदर सावरकर,१८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर, पूर्व उद्धृत पृ०सं-१४।

२. डॉ० भवानीदीन, वैभव वहे बेतवा धार, कानपुर, साहित्य रत्नालय, १९९८, पृ०सं०-०३।

आल्हा - ऊदल जैसे सूरमाओं, तानसेन जैसे संगीत शिरोमणि, चम्पतराय, छत्रसाल तथा जगतराज जैसे बुन्देलों की यह वसुधा महारानी लक्ष्मीबाई, अवन्तीबाई से लेकर पं० परमानंद, स्वामी ब्रह्मानंद, दीवान शत्रुघ्न सिंह एवं श्रीपत सहाय रावत जैसे पुरोधाओं की यह धरती आज किसी परिचय की मोहताज नहीं है।

नाकमरण के दर्पण में बुन्देलखण्ड के दर्शन के विविध रूप बिम्बित होते हैं। बुन्देलखण्ड का प्रथम नाम जुझौति के रूप में जाना जाता है।[१] इस तथ्य की पुष्टि अनेक इतिहासकारों ने की है। यह प्रदेश जुझौतिया ब्राह्मण बाहुल्य था, इस कारण इस प्रदेश का नाम जुझौति पड़ा, इस मत का समर्थन पुराविशेषज्ञ कनिंघम ने किया है। कहीं-कहीं पर इस भूक्षेत्र को चेदि देश के नाम से भी जाने जाने का उल्लेख आया है।[२]

कुछ मान्यताएं ऐसी भी रही हैं कि धसान नदी इस क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली एक प्रमुख नदी है, धसान के तट पर बसे होने के कारण इसे दशार्ण भी कहा गया है। कुछ लोगों ने इसे चर्मण्यवती अथवा चम्बल के किनारे बसा होने के कारण चन्द्रावती देश भी कहा है।

---

१. डा० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १९६८, पृ०सं०- ०५।

२. डॉ० एस०डी० चतुर्वेदी, बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, झाँसी, १९८४, पृ०सं- ०१।

एक अन्य धारणा के आधार पर यह कहा गया कि चन्देल वंश के शासक जेजा या जयशक्ति के नाम पर बुन्देलखण्ड का एक प्राचीन नाम जेजाक भुक्ति भी था। बुन्देलखण्ड के नामकरण को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मत भिन्नता है, पुराविद् डॉ० एस०डी०त्रिवेदी की दृष्टि में बुन्देलों का इस भूभाग में बहुलता होने के कारण १४वीं सदी में इसका नाम बुन्देलखण्ड पड़ा। इस भूक्षेत्र के नाम विभेद को लेकर कई मत एवं दन्त कथायें हैं, जिनके आधार पर इस क्षेत्र को बुन्देलखण्ड कहा गया, कुछ विचारकों का मत है कि विन्देला जाति के प्रथम राजा हेमकरण बुन्देला के नाम पर इसका नाम बुन्देलखण्ड हुआ। बुन्देलखण्ड के नामकरण का एक आधार भौगोलिक भी है, जिसे सर्वाधिक मान्यता प्रदान की गयी है। यह क्षेत्र विन्ध्येलखण्ड कहा गया, जो कालान्तर में बुन्देलखण्ड के रूप में परिवर्तित हो गया।[१] इस तरह बुन्देलखण्ड को उसके नामकरण तथा विश्रुत विभूतियों के आलोक में कौन नहीं जानता।[१]

प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम और महोबा

बुन्देलखण्ड की तरह महोबा भी नामकरण की दृष्टि से कई रूपों में जाना जाता रहा है, पौराणिक मान्यतानुसार इसे कैकेयुपर तथा पाटनपुर के नाम से भी जाना गया।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, वैभव वहे बेतवा धार, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०-०३।

२. वासुदेव चौरसिया, चन्देल कालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुरावशेष, महोबा, १९९४, पृ०सं०- ०१।

मध्य काल में महोबा गौड़ शासन के अधीन रहा। हर्षकाल में ब्राह्मण, गहरवार, प्रतिहार तथा चन्देल जैसे राजवंश के अस्तित्व में आये। इन राजवंशों में चन्देलयुग १२वीं सदी तक रहा। ये शासक अधिकांश शासन की केन्द्र भूमि अर्थात राजधानी में महोत्सवों का आयोजन करते थे, इसी कारण उन्होंने इसका नाम महोत्सव नगर रखा, अन्य उल्लेखों में इसे महोतस और महोबक भी कहा गया है।[१] चन्देल काल में ही महोबा अपने अग्निधर्मा अभीरूता के लिए विख्यात हो गया था, आज तक महोबा अपनी पुरापहचान के कारण जाना जाता है। चन्देलकाल के तीन सदियों के इतिहास का महोबा के कीर्तिकोष को समृद्ध बनाने में कोई सानी नहीं रहा। चन्देल शासन का ग्राफ बहुआयामी होने के कारण बहुत ऊँचा रहा, जिसकी समग्र विवेचना यहाँ संभव नहीं है। चन्देलयुगीन, आल्हा - ऊदल जैसे बनाफर सूरमाओं के शौर्य का जादू आज भी लोक कंठ में चढ़कर बोलता है। चन्देलकाल में आल्हा के समय वीरता का आदर्श प्रमुख था, उस लोकादर्श को निम्न पंक्तियों में निहारा जा सकता है[२]-

मरद बनाये मर जैबे को, खटिया पर के मरै बलाय।
जो मर जैहें रनखेतन मा, साकौ चलो अंगारु जाय।।

---

१. वासुदेव चौरसिया, चन्देल कालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुरावशेष, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ०१।

२. प्रो० नमर्दा प्रसाद गुप्त, चन्देल कालीन महाकाव्य आल्हा, भोपाल, म०प्र०, आदिवासी लोक कला परिषद, २००१, पृ०सं०- ६३।

११वीं सदी में हमीरपुर को हमीरदेव ने बसाया था, तब से लेकर आँग्ल आधिपत्य में आने तक हमीरपुर ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। वैभवशाली अतीत के आलोक में अविभाजित हम्मीरी जनपद की एक अलग छाप रही है। आल्हा-ऊदल जैसे महान योद्धाओं की युयुत्सा, उनके अश्वों की अगुवाई, बारुदी धमाकों की धंधार से कौन अपरिचित है? सांग्रामिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सांगीत के क्षेत्रों में ऐसा कोई क्षेत्र शेष नहीं रहा, जिसमें इस जनपद ने अपना नाम अंकित न करया हो।[१]

महान बुन्देला पारीछत, उद्भट योद्धा नौने अर्जुन सिंह परमार, अनेक स्वातन्त्र्य पुरोधा, पृथ्वी सिंह दाऊजू जैसे संगीतविद्, चरखारी रियासत के मानकवि, प्रतापशाह, हनुमंत प्रसाद, बिहारीलाल, हरिकेश कवि तथा मोहन लाल मिश्र इसी मेदिनी के अमूल्य मानव-मोती रहे।

इसके पूर्व कि महोबा की सत्तावनी समर में सिंहनाद की सहभागिता कैसी रही का उल्लेख किया जाय, यहाँ इस प्रसंग का विवेचन समीचीन होगा कि- महोबबी मेदिनी ने १८५७ में ही अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम बुन्देला-विद्रोह का बिगुल बजा दिया था, जिसे स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास में बुन्देल धरा का प्रथम प्रभावी पुरोधत्व प्रतिकार कहा जा सकता है।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, वैभव वहे बेतवा धार, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०-०६।

२. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, सुमेरपुर, सन्दर्शिता, २००१, पृ०सं०- ३४।

बुन्देल क्षेत्र की धरती में जब-जब ब्राह्य आक्रान्ताओं ने अत्याचारों की आधार शिला रखकर दमन का भवन खड़ा करना चाहा, तब-तब यहाँ के हर क्षेत्र से क्षात्र धर्म की लौह-ललकार के लावा के कहर ने आक्रमणकारियों के अरमानों पर पानी फेर दिया। बुन्देल भूमि में ब्रिटिश सत्ता स्थापित होने के बाद जब आँग्ल अत्याचारों का आरेख बढ़ने लगा तो बुढ़वा मंगल के आयोजनों के बैनर तले जैतपुर के राष्ट्र प्रेमी राजा पारीछत ने महोबा के एक गाँव सूपा में बुन्देल नरेशों की एक बैठक बुलायी, दासता के दारिद्रय दफन के लिए नरेशों से अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट होने का प्रभावी आग्रह किया, तत्पश्चात् महाराज पारीक्षत ने चिरगाँव के राव बखत सिंह, दिमान देशपत तथा चरखारी के सेनापति सबदल दौआ के सहयोग से राज्य बिलगाँव, सिवनी, पुरैनी, मुस्करा, पनवाड़ी एवं अच्छोल सहित महोबा जनपद के अनेक गाँवों में गोरों से डटकर मुकाबला किया।[१] पनवाड़ी संघर्ष को साहित्यधर्मी मोहन लाल मिश्र की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है-

धसन न देत धसान की दुधारी धार,
वारिवर बोर - बोर बैरिन बिदारी की।
अंग - अंग में उमंग जंग की भरीचोप,
चाप सी चढ़ी है पनवारी - पनवारी की।

---

१. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, सुमेरपुर, सन्दर्शिता, २००१, पृ०सं०- ५१।

मोहन भनत वीर बाँकुरे बुन्देलन की,

राखी आन-बान-शान कीरत उजारी की।

वीर पारीछत की रन मांह अंग अंगरेजन के,

साल हिये में धार कठिन कटारी की।

इस तरह महाराज पारीछत, उनके सहयोगी तथा सैन्य शूरों ने पनवाड़ी में घनघोर युद्ध किया। महाराज पारीछत के सहयोगियों में राव बख्त सिंह, उनके पुत्र तथा अनेक सरदारों ने माँ भारती के चरणों में अपने प्राण-प्रसून चढ़ाकर सार्थक संघर्ष- साधना की, नरेश पारीछत को विजय श्री मिली।[१]

इस तरह यदि देखा जाय तो इस ऐतिहासिक सच को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा सकता है कि महोबबी धरती ने डेढ़ दशक पूर्व ही बुन्देल भूमि में आँग्ल विरोधी संघर्षी जमीन तैयार कर दी थी।[२] जब देश दासता के दाह को भोगता हुआ, सहन की सीमा को पार कर दमन की दहलीज पर जा पहुँचा तो उसके अन्दर के पौरुष ने अंगड़ाई ली।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०) भोपाल, शांति प्रकाशन, १९९८, पृ०सं०- ०२।

२. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०) पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ०२।

उसके सरफरोश सपूतों ने १८५७ में संघर्ष की आधार शिला रखी, जिसमें देशवासियों की संघर्षी सहभागिता सराहनीय रही, जब पूरे देश में सत्तावन के महासमर में पाश्चात्य के प्रतिकार-प्रांगण में प्राच्य-पुरोधाओं ने पांचजन्य फूक दिया हो तो भला ऐसे में एक वीर प्रसवा वसुधा (महोबा) कैसे चुप रहती? महोबा के नर-नाहर संघर्ष की अलख जगाने में आगे रहे।

महोबा जनपद के जिन जाँ.बाजों ने १८५७ के स्वातन्त्र्य समर में प्रभावी पुरोधत्व का धर्म निभाया, उनमे दिमान देशपत, महाराज पारीछत की रानी फत्तमवीर, दिमान देशपत का भतीजा रघुनाथ सिंह, सबदल दौआ को निःसन्देह निर्णायक भूमिका निभाने वाले नाहर कहा जा सकता है, जिन्होंने छल, बल तथा सैन्य बल में महारत हासिल गोरी सत्ता को जीवन की अन्तिम साँसों तक छकाया।[१]

१८५७ के सूरमा

वनाफरी वसुधा में १८५७ के स्वतान्त्र्य-संघर्ष में जिन सूरमाओं की सर्वाधिक संघर्षी सहभागिता रही, उनमें दिमान देशपत के अप्रतिम योगदान को नकारा नहीं जा सकता है।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०) भोपाल, शांति प्रकाशन, १९९८, पृ०सं०- ०२।

बुन्देलखण्ड में मुगल सत्ता से लोहा लेने वालो में चम्पतराय तथा छत्रसाल का इतिहास के पृष्ठों में स्थान सदैव सुरक्षित रहेगा, इसी वीर वंशज का बहादुर बेटा था - दिमान देशपत। देशपत को क्रांतिकारी संस्कार विरासत में प्राप्त हुए थे।

क्रांतिनिष्ठ परिवार का क्रांतिधर्मी पूत

दिमान देशपत का जिस बुन्देला परिवार में जन्म हुआ था, वह अप्रितम पौरुष का प्रतीक रहा है। महाराज छत्रसाल के द्वितीय पुत्र जगतराज के बेटे हरी सिंह के पुत्र थे- अर्जुन सिंह। अर्जुन सिंह के पाँच बेटों में से दो बेटे ऐसे थे, जिन्हांने बुन्देल भूमि में आँग्ल सत्ता की चूलें हिला कर रख दीं थीं। ये दो प्रबल पराक्रमी पुत्र थे- दिमान देशपत तथा नन्हें दिमान। दिमान देशपत का झीझन की जिस जागीरी जमीन में जन्म हुआ था, उस सोंधी माटी ने उसे जीवटता की वह बाल घुट्टी पिलायी थी, जिसके पान से उसके शरीर में शौर्य का अद्भुत संचार हुआ था।[१]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०- १०।

मोहन चौबे की चाल

बाँदा का भूभाग जब आँग्ल सत्ता के अधीन हुआ, उस समय शक्तिशाली बुन्देलों की स्थिति कमजोर थी, समय का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने बुन्देलों को झींझन की एक मात्र लम्बरदारी दे दी, अर्जुन सिंह, जिस समय झींझन तथा टोरिया के लम्बरदार थे, उस समय मोहन चौबे के पूर्वज जमींदार थे, चौबे जमीदार सावक का पुत्र था, जो बहुत ही चालाक एवं चालबाज था, उसने अपने शब्दजाल में अर्जुन सिंह को फँसाकर उससे झींझन तथा टोरिया की लम्बरदारी अपने नाम अंकित करा ली, सीधे-सादे अर्जुन सिंह चौबे की चाल के शिकार हो गये। कुछ समय बाद मोहन चौबे ने अपनी असलियत दिखाते हुए अर्जुन सिंह से कर वसूलने लगा, यह झींझन के बुन्देलों को बहुत ही नागवार गुजरा।

अर्जुन सिंह के दो छोटे तथा बहादुर भाई देशपत एवं नन्हे बुन्देला तो चौबे द्वारा किये गये छल को बर्दाश्त ही नहीं कर पाये। उन्होंने चौबे के विनाश का संकल्प कर लिया।

टटम के ताने और देशपत का सँकल्प

देशपत बुन्देला की ससुराल टटम थी एक बार वे अपनी पत्नी को लेने पहुँचे। ससुराल में वहाँ के युवाओं ने ताने देते हुए कहा कि कहाँ महाराज छत्रसाल और कहाँ देशपत बुन्देला? इन दोनों में कोई तुलना नहीं है।[१]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १२-१४।

महाराज छत्रसाल ने तो मुगलों से बुन्देलखण्ड में घनघोर संग्राम किया था, युवकों के उन तानों के परिप्रेक्ष्य में दिमान देशपत ने उन्हें ललकारते हुए यह संकल्प लिया कि बुन्देलखण्ड से जब तक अंग्रेजों का खात्मा नहीं कर दूगाँ, तब तक न तो मैं और न मेरी रानी टटम आयेगी। इस तरह दिमान देशपत बुन्देला ने संकल्प को साकार रूप देने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी, देशपत बुन्देला ०३ दिसम्बर १८६२ तक अनवरत आँग्लों के दाँत खट्टे करते रहे।[१]

१८४७-४८ में दिमान देशपत ने सबसे पहले मोहन चौबे को खत्म किया, तत्पश्चात् उसने अपने भाई नन्हें दिमान, दिल्लीपत तथा पारीछत एवं अन्य साथियों के साथ जंगल की रास्ता नापी। सत्तावन के संघर्ष के एक दशक पूर्व ही १८४७ में देशपत आजादी के समर में कूद चुका था, इसलिए यदि उसे बुन्देल भूमि में स्वातन्त्र्य संग्राम का जनक कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।[२] देशपत बुन्देला ने सत्तावनी समर की आधार शिला रखते हुए अपने गाँव तथा आस-पास के बुन्देलों एवं अन्य देशभक्तों का स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए आह्वान किया, जिसका अनुकूल प्रभाव पड़ा। पूरे क्षेत्र के लोगों को देशपत के प्रति असीम श्रद्धा और विश्वास था।

---

१. दिमान देशपत के वंशज कृष्णपाल सिंह से झींझन सें प्राप्त जानकारी के आधार पर।

२. झींझन के मोतीलाल सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

दिमान देशपत ने धसान क्षेत्र की पूरी बागडोर अपने हाथ में ले ली थी। उस क्षेत्र के अन्य क्षत्रियों ने भी आगे आकर दिमान देशपत का साथ दिया। दिमान देशपत के वंशज, भाई तथा रिश्तेदारों ने आँग्ल विरोधी अभियान में पूरे मनोयोग से साथ दिया था।

नौगांव विद्रोह और देशपत

१८५७ की क्रान्ति के कार्यान्वयन के तारतम्य में नौगांव की १२वीं देशी फौज के सिपाहियों को अंग्रेजों के विरोध में उकसाने में देशपत का हाथ था,[१] सत्तावनी समर की सिंहनी रानी लक्ष्मीबाई ने सागर सिंह के माध्यम से दिमान देशपत को अपने पास बुला कर आवश्यक मदद उपलब्ध करायी थी, साथ ही नौगांव के पोलिटिकल एजेण्ट मेजर इलियास द्वारा पांच हजार फौज के साथ झाँसी पर आक्रमण, आगमन को भी रोकने के सन्दर्भ में दिमान देशपत से कहा, जिसे देशपत बुन्देला ने पूरी सिद्दत के सही अंजाम दिया, अंग्रेजों को अपने प्राण बचाकर भागना पड़ा।[२]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १५।

२. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ की क्रांति, नौगांव छानी से अंग्रेजों का पलायन, भोपाल, शांति प्रकाशन, २००२, पृ०सं०- १३।

चरखारी युद्ध और देशपत

स्वातन्त्र्य समर के महान सूरमा तांत्याटोपे ने जब चरखारी रियासत पर आक्रमण किया, उस समय दिमान देशपत दलबल के साथ चरखारी गया। दोनो वीरों ने मिलकर रियासत के राजा रतन सिंह को शानदार शिकस्त दी।[१] चरखारी युद्ध में दिमान देशपत के साथ छतरपुर राज्य के अनेकों सेनानी थे, जिन्होंने पूरे मनोयोग के साथ देशपत के साथ सामरिक सहभागिता निभायी। चरखारी नरेश रतन सिंह आँग्ल-हिमायती थे। इस तरह देशपत का संघर्ष अभियान निरन्तर बढ़ता रहा।

विटलॉक और दशपत के बीच झींझन का संग्राम

दिमान देशपत, तांत्या टोपे और मार्तण्ड राव सूबा के मध्य हुए आपसी पत्राचार से यह स्पष्ट होता है कि इन शूरों में देश के प्रति कितनी आस्था और श्रद्धा थी। तांत्या टोपे के साथ देशपत बुन्देला ने जनरल ह्यूज के साथ ओरछा के पास बेतवा घाट पर भयानक संग्राम किया, जिसमें तांत्या टोपे को भारी क्षति उठानी पड़ी तत्पश्चात् ११ अप्रैल १८५८ को झींझन से चार कोस दूर जनरल विटलॉक और देशपत बुन्देला के मध्य घनघोर युद्ध हुआ।[२]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०), भोपाल, शांति प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०- ०८।

२. झींझन के मोतीलाल सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

देशपत ने पूरे मनोयोग से विटलॉक का मुकाबला किया किन्तु सत्ता और सैन्य बल के आधिक्य ने देशपत तथा उसके साथियों को भारी क्षति पहुँचाई। इस समर में लगभग १०० क्रांतिकारियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, साथ ही ३६ सेनानियों को गिरफ्तार कर लिया गया। विटलॉक इतना प्रतिशोधी हो गया कि देशपत के गाँव झींझन को उसने पूरी तरह से नष्ट कर दिया।[1] वहाँ पर देशपत के पूर्वजों को बनी गढ़ी भी उसके कोप का शिकार हो गयी। इस तरह झींझन युद्ध भीषण रहा, फिर भी क्रांतिकारियों ने हार नहीं मानी।

देशपत का प्रबन्ध एवं सैन्य बल

देशपत के साथ हजारों क्रांतिकारी थे, जो झींझन, लटेवरी तथा किशनगढ़ के जंगलों में शरण लेते थे। देशपत के छिपने के दो स्थान और थे- राठ तथा पनवाड़ी के घने जंगल।[2]

देशपत की पूरे हमीरपुर में दशहत थी। उसने हमीरपुर के हर गाँव में सुरक्षाकर्मी तथा डाकिया का प्रबन्ध किया था। देशपत की डिवीजन में अच्छे खासे क्रांतिकारी रहते थे।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०), भोपाल, शांति प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०- ०८।

२. दिमान देशपत के वंशज पुष्पराज सिंह से झींझन प्राप्त जानकारी के आधार पर।

उनके साथ चार हजार क्रांतिकारी तथा साठ घुड़सवार थे एवं एक रेजीमेण्ट केवल पूर्वी लोगों की थी, देशपत के साथ एक गौड़ों की डिवीजन भी थी, जिसमें तीन हजार सैनिक थे, इस तरह देशपत के चार डिवीजन में करीब ग्यारह हजार की फौज थी।[1]

देशपत का गोरों पर भय व्याप्त था। देशपत का सैन्य बल तांत्या टोपे का साथ देता था। देशपत बुन्देलखण्ड के उत्तरी भाग में अपना संघर्षी अभियान अग्रसर रखता था। देशपत पश्चिमोत्तर प्रान्त के श्रीनगर, अलीपुऱ नौगाँव तथा जैतपुर क्षेत्रों को केन्द्र बना रखा था। झींझन तथा मेवातबंद का घना जंगल देशपत के शरण स्थलों में केन्द्रीय था। देशपत पुरोधा और पुजारी दोनो था। वह छतरपुर के निकट एक देवी मंदिर में पूजा-अर्चना किया करता था। वहाँ के लोग देशपत का दिल से स्वागत किया करते थे। देशपत की रक्षा नीति के अंग्रेज भी कायल थे, वह छत्रसाली युद्ध नीति- ''मारो और जंगल घाटियों की आड़ लो '' का समर्थक था। देशपत अक्सर अंग्रेजों को छकाते रहते थे। एक बार २५ अक्टूबर १८५८ को देशपत ने जनरल विटलॉक को अपने गाँव झींझन में बुरी तरह सकते में डाल दिया था, साथ ही अंगेजो की अनेक बैलगाड़ियों में लदकर आ रही खाद्य सामग्री को लूट लिया था।[2]

---

१. झींझन के रामशरण सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

२. झींझन के मोती लाल सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

बगौरा और मुराही का युद्ध

आँग्ल सत्ता देशपत बुन्देला के पीछे पड़ी हुई थी। आँग्ल कप्तान डिलियर्ड को पता चला कि जैतपुर के निकट बगौरा गाँव में देशपत, छतरसिंह तथा बरवत सिंह डेरा डाले हुए हैं। वह मद्रास सैन्य टुकड़ी के साथ ०५ जनवरी १८५६ को कप्तान साबर्स के साथ बगौरा जा धमका, जहाँ दोनो दलों में घमासान संघर्ष हुआ, जिसमें क्रांतिकारियों को अधिक क्षति उठानी पड़ी। इस युद्ध में ३० क्रांतिकारियों को अपनी जांन से हाथ धोना पड़ा तथा अनेकों घायल हुए। क्रांतिकारियों का सारा सामान यथा- घोड़े तथा ऊँट भी अंग्रेजों के हाथ लगे। गोरे देशपत, छतरसिंह तथा बरवत सिंह को नहीं पकड़ सके।[१] केन नदी के निकट बसा राजगढ़ क्रांतिकारियों का एक प्रमुख गढ़ बन चुका था। इस गढ़ के रणबांकुरे देशपत के सहयोगी थे। इन क्रांतिकारियों के दमन के लिए कप्तान रिशटन पन्ना की ओर से केन नदी को पार करता हुआ राजगढ़ पहुँचा किन्तु संयोग से कप्तान रिशटन अपना कुछ सैन्य सामान पन्ना में छोंड़ आया था, उसने उस सामान को लाने के लिए अपने एक दल को पन्ना भेजा, सामान ला रहे अंग्रेज दल को क्रांतिकारियों ने मुराही गाँव के निकट लूट लिया। उस हमले में ०३ अंग्रेज सैनिक मारे गये तथा सारा सामान भी क्रांतिकारियों के हाथ लग गया।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- २६।

इस लूट की सूचना पर कप्तान रिशटन अपनी सैन्य टुकड़ी लेकर मुराही गाँव की ओर कूच कर दिया, उन्हें दो अग्रेज कप्तान भी मदद कर रहे थे, योजनाबद्ध तरीके से क्रांतिकारियों को घेरने की नीति बनायी गयी किन्तु पन्ना तथा केन की दुर्गम घाटियाँ तो देशभक्तों के साथ थीं। क्रान्तिकारियों का मीलों पीछा किया गया, देशपत को एक प्रमुख क्रान्तिकारी मुकुन्द सिंह का साथ मिल रहा था। कप्तान अथ्रोप मुकुन्द सिंह के पीछे पड़ा हुआ था, किन्तु जब वह केन की दुर्गम घाटियों में प्रवेश कर गया तो सभी अंग्रेज कप्तान मन मसोस कर रह गये और वापस हो गये। देशपत तथा मुकुन्द सिंह अंग्रेज कप्तानों की पकड़ से बाहर रहे। देशपत वहाँ से निकलकर पुनः किशनगढ़ के जंगल में प्रवेश कर गया।[१]

इमलियानी गाँव का संघर्ष

किशनगढ़ के जंगल में भी अंग्रेज देशपत के पीछें पड़े हुए थे, क्योंकि देशपत ही तो अंग्रेजों की आँखों में मूल रूप से खटक रहा था। २१ मार्च १८५८ को कप्तान टी० राइट तथा कप्तान जान्सटर्न ने मिलकर इमलियानी गाँव को घेरा और क्रांतिकारियों पर धावा बोला, क्रान्तिवीरों ने बड़ी हिम्मत से मुकाबला किया किन्तु अंग्रेजी तोपों के सामने वे न टिक सके।[२]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०), पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १०।

२. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- २६।

इस युद्ध में ५० के लगभग क्रांतिकारियों को मौत के घाट उतार दिया गया तथा अनेक विद्रोही पकड़े गये। इसी तरह मडियादो के क्षेत्र तथा घेरी पटोरी गाँव में आँग्ल सेना ने क्रांतिकारियों को घेरा किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिल पायी। यह घेराबन्दी २५ अक्टूबर १८५६ को हुई, जिसमें से रनवीर सिंह तथा ईश्वरी सिंह जैसे क्रांतिकर्मी-पुत्र अंग्रेजों की पकड़ से बाहर रहे, अंग्रेज हाथ मलते रह गये।

सिजावरी तथा गोपालपुरा नाम के गाँव में विद्रोहियों पर हुए आँग्ल हमले में लगभग १० क्रांतिकारी मारे तथा कई पकड़े गये किन्तु घेरी गाँव में अंग्रेजों की नहीं चली।[१]

देशपत का बढ़ता दबाव

बुन्देलखण्ड में देशपत का खौफ अंग्रेजों को खाये जा रहा था, देशपत तथा उनके साथियों के खात्मे के लिए अंग्रेज सैन्य अधिकारियों में ले० अलेक्जेण्डर, कर्नल प्राइमरोज, विग्रेडियर व्हीलर और कर्नल नाट जैसे कुशल सैन्य प्रमुख किशनगढ़ के क्षेत्र में इन क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए डेरा डाले हुए थे।[२]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०), पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १०।

२. झींझन के मोती लाल सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

२३ अक्टूबर १८५६ को किशनगढ़ क्षेत्र में गोपालपुरा गाँव में कर्नल प्राइमरोज तथा दिमान देशपत के बीच मुठभेड़ हुई किन्तु वह क्रांति शिरोमणि को पकड़ने में नाकाम रहा। देशपत का दल किशनगढ़ में इतना सशक्त था कि उसके अनुमान का आगणन आँग्ल आवेष्टन से लगाया जा सकता है। विजावर क्षेत्र के हर सम्भावित स्थान में ५० से लेकर १०० फौजियां को लगाया गया था ताकि अवसर आने पर देशपत साथियों के साथ भाग न सके।[१]

बाजना तथा मड़ियादों का भूक्षेत्र इतना घना तथा घाटियों से से घिरा था कि वहाँ पर आसानी से पहुँचना तक दुर्लभ था। क्रांतिकारियों को वहाँ के भूगोल का पूरा संज्ञान था, वे शुत्र पक्ष पर आसनी से आक्रमण कर सकते थे। देशपत तथा उसके साथियों के लिए यह क्षेत्र सर्वाधिक संरक्षित तथा सुरक्षित था, इसी कारण उसने इसे अपने अभियान का केन्द्रीय स्थल बनाया था। अंग्रेज सैन्य अधिकारियों ने अपनी फौज की टुकड़ियों के साथ किशनगढ़ के निकट के गाँव में घेरा डालकर इन्हें पकड़ने का अभियान तेज किया।[२]

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार, के सन्दर्भ पालिटिकिल प्रोसिडिंग्स ३०.१२.१८५६, भाग–७, (अनुक्रमांक १३००) के आधार पर।

२. राष्ट्रीय अभिलेखागार, के सन्दर्भ पालिटिकिल प्रोसिडिंग्स ३०.१२.१८५६, भाग–७, (अनुक्रमांक १२७०) के आधार पर।

देशपत और लुगासी

लुगासी का जागीरदार अंग्रेजों का परम भक्त तथा हितैषी था, वह क्रांतिकारियों की समस्त जानकारी अंग्रेजों को देता था, इसी कारण से देशपत लुगासी के जागीरदार से नाराज रहता था। उसने २१ फरवरी १८५६ को लुगासी के पाँच गाँवों को लूट कर नष्ट कर दिया। छतरपुर सरकार से लूट-प्रकरण का ब्योरा मांगे जाने पर उसने आँग्ल सत्ता को जवाब दिया था कि वहाँ पर लूट जैसी कोई घटना नहीं घटी।

गवर्नर जनरल द्वारा लूट काण्ड की जाँच की गयी, साथ ही छतरपुर रानी को इससे अवगत कराया गया। रानी ने उस मुआवजा की भरपायी कर दी, किन्तु इस लूट-काण्ड से यह तथ्य उद्घाटित हुआ कि छतरपुर राज्य के क्षत्रिय तथा अन्य अधिकारी अपरोक्ष रूप से देशपत की मदद करते थे।[१]

देशपत के साथ संयुक्त सामरिक सहभागिता

१८५७ के स्वातन्त्र्य समर में देशपत अकेला समर-सपूत नहीं था, उसे बाँदा, छतरपुर, झांसी तथा जालौन जिले के जांबाजों का भी सहयोग प्राप्त था। जालौन का प्रमुख संघर्षी शूर बरजोर सिंह ६ सितम्बर १८५६ को देशपत का साथ निभाने हमीरपुर आ गया था।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- ६५/६७ जून १८६३ के आधार पर।

अलीपुरा में देशपत, बरजोर सिंह तथा छतर सिंह की अंग्रेज सैन्य अधिकारी कप्तान हाथर्न और मेजर डेविस के साथ मुठभेड़ हो गयी, जिसमें देशभक्तों को काफी क्षति उठानी पड़ी।

राठ संघर्ष

मार्तण्डराव तांत्या के बैनर तले देशपत का भतीजा क्रांति का निर्देशन कर रहा था, राठ के युद्ध में क्रांतिकारियों का मुकाबला चरखारी सेना के साथ हुआ, जिसका नायकत्व अर्जुन सिंह कर रहे थे, जहाँ चरखारी राजा की सेना के पास तोपें अधिक थीं, वहीं देशपत के भतीजे वाली विद्रोही टुकड़ी के साथ केवल दो छोटी तोपें थीं, राजा की भारी फौज तथा बड़ी तोपों के सामने क्रांतिकारी अधिक समय तक नहीं ठहर सके। इस युद्ध में क्रांतिकारियों को भारी क्षति उठानी पड़ी, इस युद्ध कें नायक मार्तण्डराव तथा लगभग १५ क्रांतिकारी शहीद हुए, इसके अतिरिक्त अन्य प्रमुख क्रांतिवीर थे- लक्ष्मण राजपूत, मुरली ब्राह्मण, बालाजी पन्त मराठा, विनायक पन्त मराठा इत्यादि।[१]

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- १७८, दिनांक ०४ नवम्बर १८५६ - फारेन पोलिटिकल पत्र क्रमांक १३२ दिनांक २० नवम्बर १८५६ के आधार पर।

बुन्देल भूमि के महावीर देशपत बुन्देला को महाराज छत्रसाल के वंशज दिमान लोकपाल सिंह, मुकुन्द सिंह तथा अजयगढ़ के वकील मीर फरजंद अली भरपूर सहयोग कर रहे थे, इस कारण देशपत की देश के प्रति देश भक्ति ऊर्ध्वगामी रही, उसमें कमी नहीं आयी। राठ- संघर्ष के बाद अजयगढ़ क्षेत्र के बिछोन में भी अंगेजों तथा क्रांतिकारियों के बीच सामरिक सामना हुआ। जैतपुर से नौगाँव तक की पहाड़ियाँ देशपत के लिए बहुत ही सहायक थीं, क्योंकि इन श्रंखलाओं के बारे में गोरो को अधिक ज्ञान नहीं था। मीरफरजंद अली ने जब से इटवा के रेल कर्मी को मौत के घाट उतार दिया था, तब से गोरे उसके पीछे पड़ गये थे। देशपत के संघर्षी अभियान की सीमा सीमित नहीं थी, वह अपने अभियान को किशनगढ़, बक्सवाहा के अतिरिक्त मालथेन और धमौनी तक फैलाये हुए था।[१]

आँग्लों की एक और चाल

मीरफरजंद अली देशपत पर अधिक विश्वास करता था। फरजंद अली की योजना किशनगढ़ में देशपत को सशक्त करने की थी। गोरी सरकार ने एक अपनी चाल की चौपड़ में कूटनीति का एक और पांसा फेका, जिसके तहत आँग्ल सरकार मुकुन्द सिंह को जीवन-दान का लालच देकर देशपत से दर किनार करना चाहती थी, किन्तु वह सफल नहीं हो सकी।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०- ४६।

मुकुन्द सिंह ने न तो अंग्रेजों का प्रस्ताव माना ओर न ही वह झुका। उधर छतरपुर रियासत की मझली रानी देशपत को पकड़ने के लिए पीछे पड़ी हुयी थी। उसने अपने मिशन को अंजाम देने के लिए कई बार फौज भेजी। छतरपुर की मझली रानी अपने मकसद में सफल न हो सकी, देशपत उसकी पकड़ से दूर रहे, उन्हें किशनगढ़ के जंगल के पास गाँव से आवश्यक मदद मिलती रहती थी। यह उनकी लोकप्रियता का खुला प्रमाण था।

तहसीलदार तथा आँग्ल सैन्य प्रमुख से संघर्ष

एक दिन जटाशंकर के तहसीलदार ने मडियादों की बाजार में देखा कि एक बनिया देशपत के एक साथी को आवश्यक सामान दे रहा है, उसने बनिया को पकड़ लिया, जिस पर वहाँ उपस्थित क्रांतिकारियों ने तहसीलदार पर आक्रमण कर दिया। उस हमले में तहसीलदार के तीन व्यक्ति मारे गये तथा अन्य सात घायल हो गये। तहसीलदार बच निकला।[१]

देशपत बुन्देला को केवल गोरों से सावधान नहीं रहना पड़ता था अपितु उसे अपनों अर्थात देशद्रोहियों से भी सतर्क रहना पड़ता था। एक बार जब देशपत तथा उसके समर्पित साथी मीर फरजंद अली घेरी तथा पटोरी के नाले में विश्राम कर रहे थे।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ३४ दिनांक २६ अक्टूबर १८५८ के आधार पर।

वहाँ पर दिमान लोकपाल सिंह भी अपने सैकड़ों घुड़सवारों तथा बन्दूकचियों के साथ मौजूद था। इस उपस्थिति की सूचना एक भितरघाती जानकी चौधरी ने ब्रिटिश सरकार को दे दी, जिसके आघात को देशभक्तों को झेलना पड़ा। ०६ अक्टूबर १८५९ को भी इसी प्रकार की एक और घटना घटी। किशनगढ़ क्षेत्र के जंगल की एक पहाड़ी पर क्रांतिकारी अपना पड़ाव डाले हुए थे। क्रांतिकारियों के इस प्रकार के एकत्रित होने की सूचना एक भितरघाती ने सरकार को दे दी, जिस पर देशपत, मुकुन्द सिंह तथा मीर फरजंद अली को, जिनके पास सैकड़ों साथी थे, अंग्रेज सैन्य अधिकारियों से लोहा लेना पड़ा। इन वीरों के पूर्वी क्षेत्र के सैन्य वीरों ने गोरों के साथ इतने जोर से फायरिंग की कि आँग्ल सैनिकों को बिखर जाना पड़ा। इस आक्रमण में एक आँग्ल सैनिक तथा पाँच क्रांतिकारी मारे गये।[१]

अक्टूबर १८५९ में देश के अन्य भूभागों में जब क्रांति के स्वर धीमे पड़ चुके थे, तब भी बुन्देल धरा में सत्तावनी समर की अग्नि धधक रही थी, इसके मूल में देशपत, मीर फरजंद अली, मुकुन्द सिंह तथा देशपत के भाई नन्हें दिमान की संघर्षी सक्रियता प्रमुख थी। इधर आँग्ल समर का व्यूह दिन प्रतिदिन मजबूत होता जा रहा था, किशनगढ़ के क्षेत्र में गोरी फौजों का दबाव बढ़ता जा रहा था।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स पार्ट- ५, दिनांक ३० दिसम्बर १८५९ के क्रमांक ११३० के आधार पर।

गोरों की देशपत के दमन की योजना

जनरल विटलॉक सहित अनेक आँग्ल सैन्य अधिकारियों का अब एक मात्र लक्ष्य था- देशपत का सफाया, जिस पर सभी का ध्यान केन्द्रित था। १६ अक्टूबर १८५६ को जनरल विटलॉक चरखारी में अपना पड़ाव डाले हुए था। विटलॉक की चरखारी से चलकर पनवाड़ी आने की योजना बनी, जहाँ उसे देशपत पर आक्रमण करना था। उस समय देशपत तथा बख्त सिंह जैतपुर के निकट टोला पातुर में पड़ाव डाले थे। चरखारी राजा तो इन देशभक्तों के पीछे पड़ा हुआ था। उसने इन्हें पकड़ने के लिए कुलपहाड़ में दो हजार सैनिकों तथा तोपों की व्यवस्था कर दी थी।[१]

२४ अक्टूबर १८५६ को विजावर रियासत के अधिकारियों ने एक क्रांतिकारी पकड़ लिया, जिसने मजबूरी में क्रांतिकारियों की कार्यशैली का खुलासा किया। उसने मुकुन्द सिंह, फिरोजशाह, आदिल मोहम्मद खाँ तथा देशपत के सम्बन्ध में आवश्यक सूचनायें दी। ले० प्राइमरोज ने देशपत पर आक्रमण करने की योजना बनायी। उस समय देशपत स्वयं अपने सैन्यबल का नेतृत्व कर रहा था। उस काल में देशपत के साथ एक हजार क्रांतिकारी तथा दो सौ तिलंगें थे, जो युद्ध कला में माहिर थे।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- ११२१, दिनांक ३१ दिसम्बर, १८५८, पार्ट- ११, क्रमांक २१४० के आधार पर।

उस समय देशपत के साथ मुकुन्द सिंह, फरजंद अली तथा नन्दा ढीमर थे, जो उसका पूरे मनोयोग से साथ दे रहे थे। सैन्य प्रमुख अलेक्जेण्डर ने भी देशपत के सफाये की इसी तरह की एक और योजना बनायी, जिसमें उसने दो हजार सैनिकों के साथ किशनगढ़ के जंगल में अपना पड़ाव डाला। उस समय इस क्षेत्र में लगभग पाँच सौ क्रांतिकारी थे, जिनमें से कुछ पूर्विया थे, जो युद्ध विद्या में सिद्धहस्त समझे जाते थे। आँग्ल योजनाओं का पाश देशपत को बांध नहीं सका।[१]

आँग्लों की बढ़ती चिन्ता

उत्तर पूर्व में बाँदा नवाब के भगने तथा उत्तर पश्चिमी बुन्देलखण्ड में झाँसी की क्रांति नेत्री रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान के बाद १८५७ की क्रांति बहुत कुछ कमजोर पड़ गयी, जनरल ह्यूरोज के मध्य भारत के सैन्य दल को भी हटा दिया गया था, अब बुन्देलखण्ड में सारा दारोमदार देशपत, मीर फरजंद अली, बखत सिंह, मुकुन्द सिंह, राधा गोविन्द, बरजोर सिंह, और दौलत सिंह जैसे बुन्देलवीरों पर था।[२]

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- ६१, दिनांक २२ नवम्बर, १८५६, के आधार पर।

२. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- ४३३४, दिनांक ३० दिसम्बर, १८५६, के आधार पर।

गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने जुलाई १८५८ में बुन्देलखण्ड के इन क्रांतिकारियों के हालात पर विस्तार से अपने पत्र के माध्यम से ब्रिटिश सरकार को अवगत कराया, साथ ही अपने कुछ महत्वपूर्ण सुझावों से भी सरकार को रुबरू कराया। एजेण्ट ने सैन्य प्रबन्धन के बारे में भी लिखा। एजेण्ट ने अपने पत्र में सरकार को यह सुझाव दिया कि जगम्मनपुर, जालौन, कोंच, दमोह, मोठ, उरई, मऊरानीपुर, नौगाँव, जैतपुर, पनवाड़ी तथा राठ में विशेष रूप से सैन्य व्यवस्था को प्रभावी बनाया जाय ताकि इन क्रांतिकारियों का दमन किया जा सके।

एजेण्ट ने यह भी बताया कि छतरपुर की रानी लगातार देशपत को मदद कर रही है, उसने कई प्रमाण देकर यह सिद्ध किया कि रानी छतरपुर कृतघ्नी है, अतः उसकी रियासत को जब्त कर लिया जाय। एजेण्ट के पत्र से यह साफ झलकता था कि बुन्देलखण्ड में देशपत के बढ़ते दबाव से ब्रिटिश सरकार की चिन्ता बढ़ रही है।[1]

देशपत पर तीन ओर से आक्रमण

२१ अगस्त १८५८ को बुन्देलखण्ड के महान सपूत देशपत पर गोरी फौजों ने तीन ओर से हमला बोला। पहला आक्रमण चरखारी राजा की फौज ने किया, जिसमें एक हजार बन्दूकची तथा दो तोपें थीं।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- १४१५, दिनांक १७ नवम्बर, १८५६, के आधार पर।

देशपत पर यह आक्रमण श्रीनगर के किले पर किया गया, जिस पर वह अपने साथियों सहित ठहरा हुआ था। चरखारी सेना का नेतृत्व कमोद सिंह तथा अर्जुन सिंह कर रहे थे। यह मुकाबला भीषण था। क्रांतिकारियों को किला खाली करना पड़ा। क्रांतिकारियों ने अपना अगला पड़ाव राठ में डाला, जहाँ पर तीन हजार के लगभग संख्या आँकी गयी। देशपत पर दूसरा आक्रमण झींझन पर किया गया, वहाँ से भी क्रांतिकारियों को हटना पड़ा। सितम्बर १८५८ में अजनर में देशपत को तीसरा आक्रमण झेलना पड़ा। वहाँ पर भी देशपत को असफलता हाथ लगी। इस पराजय के बाद उसके तीन सौ बन्दूकची छतरपुर राज्य में सेवा करने लगे।

देशपत मई १८५७ से मई १८५८ तक पूरे एक वर्ष झींझन में अपना आधिपत्य रखा, उसने वहाँ पर अंग्रेजों की एक भी न चलने दी। इस एक वर्ष के अन्तराल में उसने अपने सैन्य प्रबन्धन में वृद्धि तथा चातुर्य को तरजीह दी। देशपत का एक और वसूल था, किसी भी स्थान पर पूरे दिन न ठहरना। इसी कारण अंग्रेजों को देशपत के सम्बन्ध में तथा उसकी भावी योजना का पता नहीं चल पाता था। वह एक दिन तथा रात में कई बार अपने स्थान बदलता था, वह कभी भी एक स्थान पर बहुत देर तक शयन नहीं करता था।[१]

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स दिनांक १३ दिसम्बर, १८५८, पार्ट- ११, क्रमांक २१५० के आधार पर।

देशपत अपने अभियान को हमीरपुर, राठ, पनवाड़ी, नौगाँव, लौड़ी, राजनगर, छतरपुर, गुलगंज, विजावर, किशनगढ़, बक्सवाहा, हीरापुर की सीमाओं तक संचालित करता था। देशपत बहुत फुर्तीले एवं सुडौल शरीर का मालिक था। उसकी स्फूर्ति के गाँव वाले तथा अंग्रेज दोनो कायल थे।

देशपत के गाँव झींझन की स्थिति सामरिक दृस्टि से बहुत मजबूत थीं, क्रांतिकारियों के लिए झींझन बहुत अनुकूल स्थल था, वे जब चाहते थे आक्रमण कर सकते थे, बाहर भी आसानी से निकल सकते थे, झींझन के भूगोल की जानकारी विद्रोहियों को ही थी, अंगेजों को नहीं।[१]

अंग्रेजों ने यह भी प्रयास किया कि सजातीय विद्रोहियों को रियासत के प्रभारी या तो उन्हें पकड़ कर अंग्रेजों को सौंपे या फिर उन्हें अपने यहाँ से निकाल दें। देशपत ब्रिटिश आधिपत्य क्षेत्रों में लूट करता था।

पश्चिमोत्तर प्रान्त की सरकार के सहायक सचिव ने इस चिन्ता से ब्रिटिश सरकार को अवगत करा दिया था। उसने अपनी सूचना में यह लिखा था कि यदि देशपत का अन्त न किया गया तो कालान्तर में राजनीतिक संकट उत्पन्न हो जायेगा।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स दिनांक १३ दिसम्बर, १८५८, पार्ट- ११, क्रमांक ०३ के आधार पर।

देशपत का फतेहपुर - आक्रमण

देशपत ने १८५८ के ग्रीष्मकाल में फतेहपुर तहसील पर भीषण आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर लिया, उसके जोरदार धावा के सामने न तो तहसीलदार ही कुछ कर पाया और न ही थाने की चल पायी। उसने कई गाँवों पर भी हमला किया। देशपत के आक्रमण के समय पास के हटा शहर में गोरी फौज की दो कम्पनियों का शिविर भी लगा था किन्तु अंग्रेजों में इतना साहस उत्पन्न न हो सका कि वे देशपत के आक्रमण को रोक सकते।[१]

गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने अपने पत्र दिनांक ११ सितम्बर १८५८ के माध्यम से आँग्ल सरकार को अवगत कराया कि विद्रोहियों का क्षेत्रीय परिवारों तथा रियासतों एवं जागीरों में बहुत प्रभाव है, इसी कारण वे इन क्षेत्रों में अत्यधिक गतिशील है, उसने अपने पत्र में इस बिन्दु का भी उल्लेख किया कि यदि मुगल शासक परिवार का फिरोज शाह इनसे मिल जाता है तो स्थिति और भी भयावह हो जायेगी। उसने कहा कि मेरा अनुरोध है कि जनरल विटलॉक हटा के उत्तरी भाग में फौज की व्यवस्था करे दें ताकि फरजंद अली और मुकुंद सिंह को वहाँ से निकाला जा सके।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- ६५/६७ जून १८६३, के आधार पर।

सरकार इस कोशिश को कार्य रूप में बदलना चाहती थी कि महान विद्रोही देशपत बुन्देला, मुकुंद सिंह, आदिल मोहम्मद खाँ और फिरोज शाह आपस में न मिल सकें अन्यथा बुन्देलखण्ड के दक्षिणी क्षेत्र को बचाना नामुमकिन हो जायेगा। देशपत के ठहराव का केन्द्र किशनगढ़ था ही, गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने अपने पत्र में यह भी लिखा था कि देशपत को पकड़ने के लिए प्रबन्धन की आवश्यकता होगी। एजेण्ट ने अपने पत्र में इस बात का भी जिक्र किया था कि बुन्देलखण्ड के राजा तथा जागीरदार आँग्ल सरकार को विद्रोहियों की स्थिति से अवगत कराते रहें, राजा अपनी संचार व्यवस्था कार्यशील रखें, क्रांतिकारियों को खाद्य सामग्री न मिलने पाये, आँग्ल फौजों को असुविधा न हो, विद्रोहियों के आश्रय स्थल की घाटियों की चौकसी रखें।

किशनगढ़ की घाटियाँ, जंगल, नदी-नाले और सघन उपत्यिकाएँ तो मानों क्रांतिकारियों की मदद के लिए सदैव बाँहें फैलाये रहती थीं। वे इन्हीं स्थलों में अपने मिशन के लिए संरजाम जुटाते थे, देशपत के अतिरिक्त मुकुन्द सिंह किशनगढ़ के दुरुह जंगल में कुलुआ धोबिया नाला पर अपना डेरा डाले हुआ था। वह इधर-उधर भी भ्रमण करता रहता और देशपत की योजना को सशक्त बनाने के लिए तत्पर रहता था।[१]

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, सीक्रेट प्रोसीडिंग्स दिनांक २६ नवम्बर १८५८ से ३१ दिसम्बर, १८५८, क्रमांक १८ के आधार पर।

विजावर क्षेत्र को भी विद्रोही अपने कार्यकलापों का केन्द्र बनाये रखते थे। अक्टूबर १८५६ में विजावर क्षेत्र के धरमपुर में क्रांतिकारियों का इतना बड़ा जमाव था कि ले० लिस्टन की हिम्मत नहीं पड़ी कि वे उन विद्रोहियों पर आक्रमण करके उनका दमन कर सकें। उन क्रांतिकारियों की संख्या दो हजार से अधिक थी, जिनमें सात सौ बागी सैनिक थे, जो युद्ध - कला में निपुण थे।[1]

देशपत पकड़ से बाहर

गवर्नर जनरल के एजेण्ट की चिन्ता बुन्देलखण्ड व किशनगढ़ इलाके को लेकर बढ़ती जा रही थी। देशपत को पकड़नें के लिए गोरी सरकार ने गोटे बिछानी शुरू कर दी, उसने अपनी फौजों का संजाल भी बुनना शुरू कर दिया, साथ ही कुछ रियासतों के राजा तथा जागीरदार भी मदद के लिए आगे आ रहे थे, गोरी फौज को क्रांतिकारियों की आवा - जाही की पूरी जानकारी तो रहती थी किन्तु वे उन पर आक्रमण कर जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। आँग्ल सैन्य अधिकारियों ने कई बार विद्रोहियों तथा विशेषकर देशपत को घेरने की कोशिश की किन्तु नाकाम रहे। १४ अक्टूबर १८५६ का उनका अंगौरी कोठी पर धावा की योजना भी विफल गयी, क्रांतिकारियों ने उसे हमले के पूर्व ही खाली कर दिया था।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन ११२१ - ३ दिनांक ३० अक्टूबर, १८५८, फारेन पाली० पत्र संख्या- १४७ के आधार पर।

गोरी तथा विजावर राज्य की फौजों ने संयुक्त अभियान चलाकर देशपत तथा मुकुन्द सिंह को पकड़ना चाहा किन्तु सफलता न मिली। देशपत लगातार गोरों की पकड़ से बाहर था। उधर गवर्नर जनरल का एजेण्ट देशपत की दहशत से चिन्तित था। अपने रण कौशल तथा लोकप्रियता के कारण गोरों के लाख चाहने पर भी विद्रोही प्रमुख देशपत गोरों के हाथ न चढ़ा।[१]

दिमान देशपत का देहदान

अंग्रेजों ने भारत को भारतीयों के सहयोग से जीता था, अपनी जीवटता से नहीं। भारत में देशद्रोहियों की लम्बी फेरिस्त रही है। बुन्देलखण्ड के महान सूरमा दिमान देशपत बुन्देला को जब गोरे जीत नहीं सके तो उन्होंने भितरघातियों की भावभूमि में प्रपंच का पासा फेंका। अंग्रेजों ने देशपत के साथ देशद्रोहियों को मिलाकर जाल बिछाना शुरू किया। उन्होंने देशपत के विश्वस्त सहयोगियों तथा छतरपुर राज्य के राजा जगतराज को प्रलोभन दिया।

दिमान देशपत की छत्रसाली युद्धनीति से गोरे भयभीत हो गये थे। उन्होनें उसे पकड़ने के लिए सघन घेराबंदी की योजना बनायी, जिसमें रियासतों के राजा भी सहयोग कर रहे थे। चरखारी नरेश ने देशपत को पकड़ने के लिए एक योजना बनायी।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स दिनांक २३ सितम्बर, १८५६, क्रमांक २०६ के आधार पर।

चरखारी के राजा ने विजावर तथा पन्ना रियासत से ढाई हजार फौज माँगी और स्वयं भी सहयोग का आश्वासन दिया। उसकी योजना के अन्तर्गत तीन रियासतों के सैनिक देशपत को झींझन तथा जैतपुर में घेरेंगे। इस विशाल घेराबंदी से देशपत बच नहीं पायेगा, ऐसा चरखारी नरेश को भरोसा था। जनरल विटलॉक देशपत को पकड़ने के लि उसके पीछे पड़ा हुआ था। उसने अप्रैल १८५८ में लुगासी में देशपत पर हमला किया, जिसमें ४० विद्रोहियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा किन्तु देशपत बच निकले। वे पकड़े नहीं जा सके। अंग्रेजों ने देशपत के गाँव झींझन को नष्ट कर दिया था। ऐसी स्थिति में देशपत को अपनी दिशा बदलनी पड़ी। देशपत पर गोरों ने दस हजार का पुरस्कार घोषित किया था। छतरपुर की रीजेण्ट रानी ने भी पाँच सौ के इनाम की घोषणा कर रखी थी। पश्चिमोत्तर सरकार ने एक हजार की राशि निश्चित की थी।[1]

भारत में सत्तावनी समर का लगभग समाहार हो रहा था किन्तु बुन्देल भूमि में बुन्देला वीर अब भी क्रांति की अलख जगाये हुए थे। इसी बीच महारानी विक्टोरिया ने क्रांतिवीरों के क्षमा की आम घोषण की, जिसका भारत में पर्याप्त प्रचार-प्रसार किया गया।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ, कन्सलटेशन नं०- १६० दिनांक ३० दिसम्बर १८५६, के आधार पर।

एक घोषणा पत्र देशपत के पास भी भेजा गया, जिस समय यह घोषणा देशपत के पास पहुँची, उस समय वह श्रीनगर में ठहरा हुआ था, उसने उस उद्घोषणा को अपनी चिलम के हवाले कर दिया। इसी प्रकार जनरल विटलॉक ने अपने आठ–दस व्यक्तियों को कुलपहाड़ में घोषणा के प्रचार–प्रसार के लिए भेजा, जिस पर वहाँ की जनता ने उनका काम तमाम कर गोरो को रक्त रंजित उत्तर दिया। दिमान देशपत १८५८–५६ के उत्तरार्ध में, जब सत्तावन का समर क्षींण पड़ने लगा, किशनगढ़ के क्षेत्र में घेरी पटौरी को अपना केन्द्र बनाया, जहाँ से वह शक्ति संचित कर गोरों की ईंटों का जवाब अपने पौरुष के पत्थरों से देना चाहता था। गोरों ने देशपत के दमन के लिए सघन जाल बिछाया। इस क्रम में गर्वनर जनरल के एजेण्ट ने छतरपुर की रीजेण्ट रानी तथा गर्रोली के जागीरदार से मंत्रणा कर देशपत के खिलाफ साजिश रची।

फतेहपुर तथा कानपुर से बड़े पैमाने पर फौजें मंगायी गयी, जैतपुर थाने को सुदृढ किया गया, जंगलों को साफ कराया, जिससे फौजों की आवाजाही सुगम हो सके। गोरों के इन प्रयत्नों ने अपना रंग दिखाना प्रारम्भ कर दिया, नवम्बर १८५६ में बहुत से क्रांतिकारी मारे गये तथा कुछ कैद कर लिये गये। १८६० में देशपत के दाहिने हाथ कहे जाने वाले जालिम अहीर तथा उमराव खंगार पकड़े गये।[१]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०– ७१।

रक्त रंजित भितरघात

अंग्रेजों ने देशपत को समाप्त करने का तो बीड़ा उठाया ही था किन्तु उसे भारत के भितरघात ने और भी अधिक सशक्त एवं समुन्नत किया। छतरपुर राज्य के दौनी गाँव के मिहीलाल पुरोहित के कारनामें से माँ भारती की कोंख कलंकित हो गयी।

सत्तावन का महान सूरमा देशपत बुन्देला जब विश्राम कर रहा था तब मिहीलाल पुरोहित एवं ठा० विक्रमजीत ने मिल कर देशपत की इहलीला को समाप्त कर दिया, साथ ही देश को दासता के दाह में डाल दिया। देशपत के कत्ल काल में उनके भाई नंहे दिमान तथा भतीजा रघुनाथ सिंह भी थे।

दिमान देशपत अपने जीवनकाल में क्षणभर भी माँ भारती को दासता के बंधन से मुक्त कराने में कभी भी शान्त नहीं बैठा। वे ०३ दिसम्बर १८६३ को भी मातृभूमि के मुक्ति मिशन के ताना-बाना को मजबूत करने का ही मनन कर रहे थे कि तभी वे भितरघातियों की भेंट चढ़ गये और मातृभूमि की मुक्ति - वेदी में आत्माहुति देकर अमर होता हो गये। उनका देहदान कालान्तर में देहदानियों के लिए देह-बीज बन गया। समयान्तर में देश में इतने सरफरोश पैदा हुए कि आँग्ल जल्लादों के फाँसी के फन्दे कम पड़ गये।[1]

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८६०), भोपाल, शांति प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०- १९।

दिमान देशपत के बाद का संघर्ष

दिमान देशपत के बाद उनके भाई नंहे दिमान, भतीजा रघुनाथ सिंह तथा भांजा कुन्जलशाह ने देशपत की संघर्षों की दीपशिखा को अपनी वीरता-वर्तिकाओं में अपनी शहादत का स्निग्ध डालकर जलाये रखा। वे १६६८ तक गोरों की नाक में दम किये रहे। कलुआ अहीर, नन्हें दीमान का विश्वसनीय सहयोगी था। उससे भी गोरे भयाक्रांत रहते थे। कलुआ अहीर पर छतरपुर राज्य ने भी पाँच सौ के पुरस्कार की घोषणा की थी। दौनी गाँव के मिहीलाल ने देशपत बुन्देला के साथ दगाबाजी की थी, जिसकी सजा मिहीलाल को १८६७ में मिल गयी। उसे देशपत के सगे सम्बंधियों ने मौत के घाट उतार दिया, मिहीलाल काण्ड में देशपत के भतीजे का प्रमुख हाथ था।[१]

देशपत के बाद उनके भाई नन्हें दिमान ने सत्तावनी क्रांति की बागडोर अपने हाथ में ली और हमीरपुर, छतरपुर एवं पड़ोसी राज्यों में आँग्ल विरोधी अभियान को त्वरा प्रदान की, गोरों की नाक में दम कर दिया। नन्हें को कलुआ अहीर, जालिम अहीर, नन्हें लोधी, खूबा दौआ, गोपाल अहीर, कुन्जलशाह तथा रामसिंह जैसे क्रांतिपुत्रों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया, इसी सहकार के कारण उसने १८६८ तक ब्रिटिश सरकार को खूब छकाया।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०- ७३, ७४।

इसके अतिरिक्त देशपत के परिवारीजनों में रघुनाथ सिंह, उनकी पत्नी, पुत्री, गजराज सिंह, मुल्लू तथा गंभीर सिंह ने भी देशपत के स्वातन्त्र्य संघर्ष को आगे बढ़ाया। कुन्जलशाह देशपत की तरह बहादुर एवं बुद्धिमान था, वह अपने चचेरे भाई गंभीर सिंह के भितरघात का शिकार हुआ अन्यथा वह अंग्रेजों के लिए चुनौती बन चुका था।[१]

नन्हें दिमान, रघुनाथ सिंह और कुन्जलशाह की धमक

देशपत के बाद उसके भाई नन्हें दिमान, भतीजा रघुनाथ तथा भांजा कुंजलशाह ने स्वातन्त्र्य संघर्ष को धार प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोंड़ी। रघुनाथ सिंह एक निडर तथा निष्ठावान क्रांतिवीर था। वह एक दिन गोरों की आखों में धूल झोंकते हुए अपने दल के साथ अजनर गाँव के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति जगन्नाथ के यहाँ जा धमका। उसके यहाँ भोजन ग्रहण किया। रघुनाथ सिंह की इतनी धमक थी कि गोरे इतना साहस नहीं जुटा सके कि उस पर आक्रमण कर देते।[२]

रघुनाथ सिंह और उसके सहयोगी गुरिल्ला युद्ध में महारत हासिल किये हुए थे। गोरे अपनी पूरी ताकत लगाकर भी इन रण बाॅकुरों को अपने बाहु पाश में नहीं बांध सके।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ७५/८० जुलाई १८६८ के आधार पर।

२. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- १०७-८, मई १८६८ के आधार पर।

रघुनाथ सिंह की बुद्धिमत्ता उसके रणकौशल में चार - चाँद लगाती थी। उसने अपने दल में इसी के बल पर कई बार आपसी टकराव को बचाया और दल को एकजुट किया। रघुनाथ सिंह की जागरूकता ने सदैव उसे मुसीबतों से बचाया, जब-जब गोरे उसे पकड़ने की योजना बनाते, तब-तब वह अपनी कुशल गुप्तचरी के कारण बचाव कर लेता था और गोरे हाथ मलते रह जाते थे।

रघुनाथ सिंह का दौनी-संघर्ष

मऊ का तहसीलदार रघुनाथ सिंह के पीछे पड़ा हुआ था। उसने रघुनाथ सिंह को जाल में फँसाने का एक ताना - बाना बुना। निर्धारित योजनानुसार तहसीलदार ने दौनी गाँव के जमींदार उदयजीत को रघुनाथ सिंह के विरुद्ध जाल बिछाने का सूत्रधार बनाया, जिसे वह अंजाम देने में जुट गया। उसने रघुनाथ सिंह को प्रलोभन पाश में बाँधने के लिए गाँव के कलुआ तेली को चुना कलुआ रघुनाथ सिंह को प्रतिदिन तीन रूपये देता था। तहसीलदार दौनी गाँव में डेरा जमाये था। उसे कुछ शक हुआ, उसने तहसीलदार की नाक के नीचे दौनी गाँव को १४ जुलाई १८६८ में लूट लिया, जो गोरों के लिए एक बड़ी खुली चुनौती बन गयी। तहसीलदार अपने साथ कुछ साथियों को लेकर रघुनाथ सिंह से मिलने दौनी गया। तहसीलदार ने रघुनाथ सिंह को तीन रुपये भेंट किये। उस समय तहसीलदार सहकर्मियों के साथ था और रघुनाथ सिंह अकेला।[१]

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ११८/२० मार्च १८६८ के आधार पर।

रघुनाथ सिंह को संदेह हो गया, वह तहसीलदार की चाल को भाँप गया, जैसे ही तहसीलदार रघुनाथ सिंह की वार्ता खत्म हुई, रघुनाथ सिंह बुन्देला ने अपने वीर साथियों को अन्दर बुला लिया और तहसीलदार पर जोरदार आक्रमण कर दिया। रघुनाथ सिंह ने तहसीलदार सहित कईयों को मौत की नींद सुला दिया।[१]

इस आक्रमण में चाल बाज दौनी गांव के जमीदार उदयजीत को मरा हुआ समझकर रघुनाथ सिंह ने छोंड दिया था, वह इतना घायल था कि किसी तरह दौनी गाँव पहुँचा। रघुनाथ सिंह के कारनामों की सूचना सरकार को मिलती रहती थी। तहसीलदार के खात्मे की सूचना से सरकार और भी अधिक परेशान हो उठी। रघुनाथ सिंह के डर का भूत गोरों के सिर चढ़कर बोलने लगा। गोरी सरकार बुरी तरह परेशान हो गयी। रघुनाथ सिंह को पकड़ने के लिए उसने पाँच हजार के इनाम की घोषणा कर डाली। छतरपुर की सरकार ने उस पर दो हजार तथा लुगासी के जागीरदार ने दो सौ रुपयों की और घोषणा की। इससे यह स्पष्ट होता है कि रघुनाथ सिंह ब्रिटिश सरकार के लिए कितना भयावह संकट बन चुका था। भारत के शेष भागों में जब क्रांति की दीपशिखा बुझ रही थी, उस समय बुन्देलखण्ड में उसकी लौ ललकार रही थी।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०- ७८, ७६।

गोरों के लिए रघुनाथ सिंह खौफ का पर्याय बन चुका था किन्तु एक अन्तराल के बाद उसके क्रांतिकारी मित्र आँग्ल दबाव और घेराव से अपने को बचाते हुए शिथिल पड़ने लगे थे। उसके कुछ सहयोगियों ने अपने को गोरों के समक्ष समर्पण भी कर दिया और कुछ को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया। बमनौरा के ठा० देवी सिंह ने जब अंग्रेजों के समक्ष अपने को प्रस्तुत कर दिया तो रघुनाथ सिंह को बहुत धक्का लगा क्योंकि देवी सिंह रघुनाथ सिंह का विश्वस्त साथी था। रघुनाथ सिंह के कुछ साथी गोरों के द्वारा पकड़ लिये गये। उसके अजनर के तीन संघर्षी साथियों ने अंग्रेजा के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। अजनर के नौटिया, गुजाला तथा प्यारे लाल रघुनाथ सिंह के भरोसेमन्द मित्र थे।[१]

पश्चिमोत्तर प्रान्त के पुलिस महानिरीक्षक ने सरकार से अपनी रिपोर्ट में इस बात पर बल देते हुए कहा था कि जब तक रघुनाथ सिंह जीवित है, तब तक वह अपने अभियान के स्वरूप में जैसा चाहेगा वैसा परिवर्तन कर सकता है, सरकार के हाथ सफलता संदिग्ध रहेगी। सिआवन का लाड़ले दौआ रघुनाथ सिंह का परम दोस्त था। रघुनाथ सिंह के मार दिये जाने पर उसी मित्र ने उसकी पत्नी की सुरक्षा की थी। विजावर राज्य के बनगाँव के भैरों अहीर तथा कलुआ अहीर भी उसके भरोसेमन्द क्रांतिकारी साथी थे। कुलपहाड़ का मनोला अहीर भी रघुनाथ सिंह के साथ सहयोग करता था।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ३२८/३३२, दिसम्बर १८६८ के आधार पर।

रघुनाथ सिंह भी दगा का शिकार

नन्हें दिमान का पुत्र जंगजीत भी क्रांतिधर्मी था, जब उसकी आयु ०८ वर्ष की थी, तभी उस पर से उसके पिता का साया उठ गया। तत्पश्चात् वह अपनी माँ तथा बहन के साथ खजुराहो में रहने लगा। इसके घर क्रांतिकारियों की भीड़ लगी रहती थी, जो अंग्रेजों को नहीं भाती थी, उसने जंगजीत को पकड़कर लाहौर भेज दिया। रघुनाथ सिंह का एक और सरफरोश साथी राम सिंह था, जिसे ब्रिटिश सरकार न पकड़ पायी।

रधुनाथ सिंह के अनुगामी क्रांतिकारी किसी भी हालत में अपने को सरकार के सामने झुकाने को तैयार नहीं थे, उधर रघुनाथ सिंह का भय लगातार बढ़ रहा था। रधुनाथ सिंह की क्रांति का केन्द्र अधिकतर छतरपुर, लुगासी और सागर के क्षेत्र रहते थे। रघुनाथ सिंह के दमन के लिए ब्रिटिश सरकार ने अपना अभियान तेज कर दिया। हमीरपुर की पुलिस रघुनाथ सिंह से काफी सतर्क रहती थी।[१] आँग्ल कप्तान फ्रेजर ने १० से १४ फरवरी १८६८ को उसे घेरने के लिए स्थलीय निरीक्षण किया तथा थाने एवं पुलिस चौकियों को सतर्क रहने के लिए कहा। उसे यह भी डर था कि रघुनाथ सिंह हमीरपुर में इस ओर से हमला बोल सकता है। महानिरीक्षक ने थाना तथा पुलिस चौकियों का निरीक्षण किया। वह थाना अजनर की पुलिस व्यवस्था से सन्तुष्ट था।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०- ७६।

पुलिस महानिरीक्षक ने पुलिस को लगातार गश्त लगाने के भी निर्देश दिये। उधर सरकार ने रधुनाथ सिंह के विरुद्ध अपने अभियान को तेज कर दिया। १० अक्टूबर १८६८ को गर्वनर जनरल के एजेण्ट को खबर मिली कि रघुनाथ सिंह तथा उसका एक क्रांतिकारी साथी सालिगराम विजावर रियासत के खेरी गाँव के एक व्यक्ति के घर में शरण लिये हुए हैं। डॉ० स्ट्रेटन तो ऐसे अवसर की खोज में ही था, वह तुरन्त तैयार हुआ। वह कुछ गोरे सैनिक तथा छतरपुर रियासत के सैनिकों को लेकर बहुत ही गोपनीय ढंग से अपनी योजना को अंतिम रूप देने के लिए तुरन्त कूच कर गया। अंग्रेजों की यह चाल इतनी गुप्त थी कि रघुनाथ सिंह को बिल्कुल भी पता नहीं चली।[१]

स्ट्रेटन ने २२ अक्टूबर १८६८ को खेरी गाँव का निरीक्षण किया, उसने चारों तरफ पुलिस लगा दी। चारो ओर की आवाजाही के रास्ते बन्द कर दिये गये। वह पुलिस दल को लेकर धीरे-धीरे गाँव की ओर बढ़ा। रघुनाथ सिंह ज्वर से पीड़ित जिस घर मे विश्राम कर रहा था, वहाँ उसकी सेवा में मात्र एक साथी सालिगराम था, वे दोनो निहत्थे थे। डॉ० स्ट्रेटन ने स्वयं घर में प्रवेश किया और उन दोनो को दबोच लिया, उन्हें लेकर वह रात में ही छतरपुर के लिए प्रस्थान कर गया।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०- ८५, ८६।

इस तरह बुन्देल धरा का एक महान सपूत रघुनाथ सिंह भी आँग्ल साजिश तथा भारतीय भितरघात की भेंट चढ़ गया। दिमान देशपत और नन्हें दिमान के बाद यही बुन्देला वीर बुन्देलखण्ड में आग्लों के विरुद्ध बगावत की बागडोर पूरे जोर से अपने हाथों में थामे था, जिसे देशद्राहियों ने समाप्त करा दिया।

जैतपुर-रानी फत्तमवीर का संघर्ष

१८४२ के बुन्देला-विद्राह के जनक राजा पारीक्षत ने बुन्देल क्षेत्र से आँग्ल-आपरेशन में कभी कोई कमी नहीं दिखायी, वे सदैव सक्रिय रहे। उनके शौर्य तथा पराक्रम के तो अंग्रेज भी कायल थे। राजा पारीक्षत के बाद जैतपुर की रानी ने १९५७ के संघर्ष में उनके मिशन को आगे बढ़ाया।[1]

बुन्देलखण्ड के पूर्वी क्षेत्र में जैतपुर -रानी, मध्य में जालौन की वीरांगना ताईबाई तथा पश्चिमी भाग में झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के दांत खट्टे किये। जैतपुर रानी को सबसे महत्वपूर्ण सहयोग दिमान देशपत तथा अलीपुरा के शासक रावबखत सिंह से मिलता था। चरखारी नरेश आँग्ल परस्त था, उसने स्वयं ही एक बार अंग्रेजों के समक्ष प्रस्ताव रखा था कि यदि सरकार चाहे तो वह अपनी फौज जैतपुर-रानी से संघर्ष के लिए जैतपुर भेज सकता है।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ३६ दिनांक ०५ जून १८५८ के आधार पर।

गर्वनर जनरल के एजेण्ट ने जैतपुर-रानी से कई बार कहा कि वह जैतपुर की सीमा में प्रवेश न करे अन्यथा उसके परिणाम अच्छे नहीं होगे किन्तु रानी ने एजेण्ट के प्रस्ताव को ठुकरा दिया क्योंकि रानी को गर्रोली, भस्नेह, अलीपुरा, रेवारी तथा बीहट के जागीरदार, देशपत तथा जैतसिंह भरपूर सहयोग दे रहे थे। वहाँ की जनता रानी को चाह रही थी, जागीरदारों ने अपनी जागीरों को खत्म हो जाने की चिन्ता न करते हुए भी रानी का साथ दिया था जो अपने आप में उनके द्वारा उठाया गया बड़ा कदम था। रानी ने इन्हीं सब के सहयोग से जैतपुर पर अधिकार किया था।[1]

सिमरिया, जो जैतपुर रियासत का ही एक परगना था, पर भी जैतपुर रानी ने अधिकार कर लिया था तत्पश्चात् उसने मैहर पर भी आधिपत्य जमाया। सिमरिया तथा मैहर में कालान्तर में भारी क्षति उठाकर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। जैतपुर की रानी फत्तमवीर अंग्रजों से लोहा लेती रहीं, उन्हें देशपत बुन्देला, जैतसिंह तथा अन्य जागीरदारों का भरपूर सहयोग मिलता रहा, चरखारी नरेश जैतपुर को निगलने के लिए बहुत पहले से बगुला दृष्टि लगाये था, जैतपुर रानी भी अपनों की चालाकी की शिकार हुई। चरखारी राज्य की सेना ने २० जुलाई १८५७ को फत्तमवीर की भावी फतह पर विराम लगा दिया।

---

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- १७६-१८१ दिनांक १५ अक्टूबर १८५८ के आधार पर।

जैतपुर रानी को चरखारी की सेना ने बन्दी बना लिया, चरखारी के राजा ने जैतपुर-रानी को कैद कराके टेहरी रियासत भिजवा दिया, जहाँ पर उसे गढ़ कुण्डार के मजबूत किले में कैद करके रखा गया। उसके बाद रानी को जतारा के किले में पहुँचाया गया। फत्तमवीर की पेंशन आधी कर दी गयी, सबदल सिंह तथा पृथ्वी सिंह रानी के साथ कैद-काल में भी रहे।[१]

इस तरह देखा जाये तो यदि जैतपुर रानी चरखारी की दगाबाजी की भेंट न चढ़ी होती तो वह भी रणचण्डी बनकर गोरों से और भी भीषण संग्राम करती ओर देश एक सदी पहले गोरों से मुक्त हो गया होता।

निष्कर्ष

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के आलोक में बुन्देल क्षेत्र के क्षात्रधर्म का उल्लेख तो इतिहास में दृष्टि गोचर होता है किन्तु उसके जनपदों में हमीरपुर एवं महोबा जनपद का १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम में योगदान का विवेचन बहुत कम दृष्टव्य है। स्वातन्त्र्य समर के अनुशीलन से यह तथ्य सुस्पष्ट हुआ है कि महोबा का सत्तावनी संघर्ष का ग्राफ बहुत ऊँचा है। महोबा जनपद के अजनर थाने के गाँव झींझन के महान दिमान देशपत बुन्देला ने वस्तुतः १८५७ के महान संग्राम में गोरी सरकार के नाक में दम कर रखा था।

---

१. भगवानदास श्रीवास्तव, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बाँदा, बर्ग अकादमी, २०००, पृ०सं०- ३८, ३६।

दिमान देशपत को स्वातन्त्र्य सघर्ष की युयुत्स-यज्ञ में उसके भाई नन्हे दिमान, भान्जा कुन्जलशाह, भतीजे रघुनाथ सिंह तथा अन्य क्रांतिवीरों में फरजंद अली, बरवत सिंह, मुकुन्द सिंह तथा बरजोर सिंह आदि ने संघर्षी सहभाग की समिधायें डाली थीं।

देशपत द्वारा विटलॉक साबर्स, रिशटन, जान्सटर्न, टी०राइट तथा प्राइमरोज जैसे जाने - माने आँग्ल सेना पतियों से टक्कर लेना तथा कईयों को पराजित करना उसके रण तथा बुद्धि कौशल के जीवन्त उदाहरण हैं। जैतपुर के महाराज पारीछत की रानी फत्तमवीर ने भी १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम में कम योगदान नहीं प्रदान किया। उसने भी अंग्रेजों से लोहा लेकर आपनी लौह - ललकार से उनको कई बार अवगत कराया। प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत उन संघर्षी शूरों का उल्लेख है, जिनका इतिहास में स्फुट उल्लेख भी नहीं मिलता। देशपत बुन्देला ने १८५८ से १८६३ तक बगौरा, मुरारी, चरखारी रियासत के राजा रतन सिंह तथा राठ, झींझन एवं फतेहपुर जैसे कई स्थानों पर आँग्ल परस्त राजाओं तथा आँग्ल सेनापतियों से जिस सिद्‌दत के साथ संघर्ष किया, वह वस्तुतः हिन्दुस्तान की तवारीखों में कम मिलता है।

उसके साथ दौनी गाँव के मिहीलाल पुरोहित द्वारा यदि भितरघात न किया जाता तो बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों के न पैर जम पाते और न ही वे भारत को अधिक दिनों तक गुलाम बना कर रख सकते थे।

द्वितीय अध्याय

असहयोग आन्दोलन और महोबा

२

असहयोग आन्दोलन और महोबा

किसी भी देश का अन्तर्कलह उसकी अखण्डता के अवसान की आधार शिला तैयार करता है, जिस पर ईर्ष्या की ईंटें तथा गल्तियों का गारा लगकर पराभव का प्रासाद बनकर तैयार हो जाता है। भारत के सन्दर्भ में भी इस सच से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि भारतीय एकता एवं अखण्डता के कवच को जब-जब देशद्रोहियों ने अपने कलुषित-कार्यों की करालिक से भेदा है, तब-तब भारत पराधीन होकर विदेशियों के अधीन हुआ है।[१]

भारत में गोरों का आगमन आकस्मिक नहीं था अपितु उन्होंने भारत को भारतीयों के बल पर पराजित किया था। उन्होंने भारत को बारुद से नहीं, अपितु चाँदी और सोने की गोलियों से जीता था। गोरों ने दग़ाबाजी की बिसात-बिछाकर छल-कपट की चालें-चलकर भारतीय महारथियों को मात दी थी। १७५७ में प्लासी का युद्ध जीतकर लार्ड क्लाइव ने भारत में आँग्ल साम्राज्य की जो दा़गबेल लगाई थी, उस पर अपमान, अनीति, अन्याय और अत्याचार के आँग्ल-आलम्बों पर गोरे - साम्राज्य के भवन को खड़ा किया था।[२]

---

१. १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकिया, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९७१, पृ०सं०-०१।

२. डॉ० सुभाष कश्यप, स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, १९९७, पृ०सं०- ०३।

दमन और उत्पीड़न का आरेख जब सभी सीमाओं को पार कर जाता है, तब जन वेदनाओं के कोंख से जनक्रांति का जन्म होता है। अंग्रेजों के एक सदी के अमानुषिक अत्याचार से भारतीयों को आत्मबोध हुआ, गोरों के विरुद्ध उनका स्वत्व जागा। १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष में पहली बार राष्ट्रीय एकता दिखी। १८८५ में अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना हुई, इस तरह से भारतीय संघर्ष को एक बैनर मिल गया, आजादी की प्राप्ति तक इसी बैनर के नीचे ऐतिहासिक संघर्ष हुए, यह एक अलग प्रश्न है कि संघर्षी-विधायें भिन्न रही हों किन्तु सभी संग्रामों का एक ही लक्ष्य था- स्वाधीनता की प्राप्ति।

आजादी प्राप्ति के लिए जितने भी संग्राम हुए उनमें गांधी जी के अहिंसक संघर्ष का अपना एक अलग महत्व था। यह दुनियां का अपनी तरह का पहला शस्त्रहीन संघर्ष था, जिसका प्रभाव सशस्त्र समर से कम नहीं था।[१] गाँधी का सत्याग्रह आंदोलन गोरों के खिलाफ निहत्था विद्रोह था। गाँधी जी ने निहत्थे संघर्ष का अन्वेषण दक्षिणी अफ्रीका में किया था, दक्षिणी अफ्रीका गाँधी की खोजों की प्रयोगशाला थी। गाँधी जी ने भारत आकर अफ्रीकी अन्वेषण का परीक्षण भारत में किया, गाँधी जी ने किसानों-मजदूरों को अत्याचार के विरुद्ध लामबन्द किया। गाँधी जी ने निःशस्त्र देश को गोरों से मुकाबले के लिए तैयार कर लिया। इस तरह गाँधी जी का निःहत्था विद्रोह अंग्रेजों के लिए चुनौती बनता गया।

---

१. नरेन्द्र भाई, लोक विद्रोह के आयाम, वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, १९७९, पृ०सं०- ०३।

गाँधी जी का विदेशों में लगभग २५ वर्ष प्रवास रहा। उन्हें वैदेशिक विधाओं का ज्ञान था, स्वदेश आने पर उन्होंनें गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु स्वीकार किया। उनसे परामर्श कर गाँधी जी ने देश की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करने के लिए पूरे देश का भ्रमण किया। गाँधी जी ने अहमदाबाद में साबरमती के पास एक सत्याग्रह आश्रम स्थापित किया। उन्होनें सबसे पहले बिहार के मजदूरों को, जिन्हें बन्धक बनाकर रखने की गलत परम्परा थी, जिसे गिरमिटिया कहा जाता था, को बन्द करने की मांग की, जो वाइसराय द्वारा १७ अप्रैल १६१७ को मान ली गयी। यह भारतीय धरती में गाँधी पद्धति का पहला सफल परीक्षण था।[१]

गाँधी जी ने बिहार के किसानों की नील-समस्या को भी अपने हाथ में लिया। अंग्रेज नील उत्पादक बिहारी किसानों का शोषण करते थे। गाँधी जी को इसमें भी सफलता मिली, १६१७ में चम्पारन किसान विधेयक पारित हुआ, उसके बाद गाँधी जी ने गुजराती धरती के खेड़ा में अहिंसक संघर्ष का सूत्रपात किया। खेंड़ा के किसानों की लगान समस्या का निराकरण कराया। उसके बाद गाँधी जी ने रौलेट एक्ट का विरोध किया, इन्हीं आँग्ल नीतियों ने एक सहयोगी तथा शान्त नागरिक के रूप में गाँधी को असहयोगी गाँधी बना दिया।[२]

---

१. १६२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकिया, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १६७१, पृ०सं०-०६।

२. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००, पृ०सं०- ३५।

ब्रिटिश नीति के पक्षधर गाँधी का दृष्टिकोंण बदल गया और वे एक विद्रोही गाँधी हो गये। उनका ब्रिटिश साम्राज्य के संदर्भ में मत बना कि ब्रिटिश साम्राज्य आज सैतानों का प्रतिनिधि है, जिसे ईश्वर से प्यार है, उसके मन में ऐसे शैतान के प्रति किसी भी प्रकार का प्यार नहीं हो सकता।[१]

गाँधी जी के अहिंसक सग्राम का प्रथम आह्वान ३० मार्च १६१६ को निर्धारित था, जिसे बदलकर ०६ अप्रैल कर दिया गया। गाँधी जी ने रौलेट एक्ट के विरोध में सारे देश में हडताल का प्रस्ताव रखा था, जिसका सारे देश ने सर्मथन किया। ०६ अप्रैल १६१६ को देश के हर गाँव तथा शहर में हड़ताल रखी गयी। इस प्रदर्शन में हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने समान रूप से भाग लिया। यह गोराशाही के विरुद्ध गाँधी जी का राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम अहिंसक समर का शंखनाद था, हिन्दुस्तान में गाँधी आह्वान से नव चेतना का स्फुरण हुआ। इसे स्वयं गाँधी जी ने स्वीकार किया कि सारे देश में हड़ताल का होना एक आश्चर्यजनक बात थी।[२] गाँधी जी ने अहिंसक विद्रोह की जो रणनीति या व्यूह की रचना की, उसको गोरों के बारूदी - बाण और आँग्ल महारथी दोनो भेदने मे नाकाम रहे।

---

१. १६२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकिया, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १६७१, पृ०सं०-०६।

२. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००, पृ०सं०- ०७।

४ से ७ सितम्बर १९२० के कोलकत्ता - कांग्रेस में ०३ दिनों तक गाँधी जी के असहयोग प्रस्ताव पर चर्चा हुई, अन्त में गाँधी के प्रस्ताव को बहुमत से स्वीकार कर लिया गया। गाँधी जी के सत्याग्रह - संग्राम में सहभागिता का एक मानक था, हर व्यक्ति सत्याग्रही नहीं हो सकता था। उस समय सत्याग्रही को अधोलिखित कसौटी में कसा जाता था-

१. जो निर्भय, निर्बैर तथा निष्पक्ष होते हुए जनहित का कायल हो।

२. जो दण्ड और हिंसा पर आधारित किसी भी प्रकार की सत्ता के सामने झुके नहीं।

३. जो वर्तमान बुराइयों का मुकाबला करने के लिए कटिबद्ध हो।

४. जो सत्य को ग्रहण करे और सत्य का आग्रह रखे।[१]

गाँधी जी ने ११ सितम्बर १९०६ को दक्षिणी अफ्रीका की धरती पर सत्याग्रह प्रारम्भ किया, जो १९१४ तक चला, इस तरह लगभग एक दशक के सत्याग्रह आन्दोलन ने गाँधी के भावी सफलता की पूर्व पीठिका तैयार की। गाँधी जी ने अफ्रीका में जो अन्वेषण किये थे, उनका उन्होंने गुजराती धरती में परीक्षण किये, तत्पश्चात् सारे देश में गाँधी-आन्दोलन प्रारम्भ हुए। ०१ अगस्त १९२० को गाँधी जी ने हिन्दुस्तान में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया।[२]

---

१. १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकिया, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ०९।

२. नरेन्द्र भाई, गाँधी जी के सत्याग्रह और उपवास, वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, १९७९, पृ०सं०- ०४।

सत्याग्रहियों के लिए गाँधी जी ने कुछ कसौटियाँ निर्धारित की थीं, जिनके अन्तर्गत सत्याग्रहियों को प्रतिज्ञा पत्र भरने होते थे। गाँधी जी के असहयोग आह्वान का राष्ट्र व्यापी असर हुआ, देश में एक नई चेतना उद्भूत हुई, आसेतु हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण देश में जगह-जगह विरोध सभाओं का आयोजन किया गया।[१] राष्ट्रव्यापी हड़ताल हुई, गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में अधोलिखित कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित हुई थी, जिनसे आन्दोलन के दो प्रकार के उद्देश्य प्रकट होते थे-[२]

गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम में आन्दोलन को चलाने के लिए तिलक फण्ड का प्रस्ताव किया गया, एक करोड़ स्वयं सेवकों की भरती की योजना बनायी गयी, २० लाख चरखे बाँटने तथा स्वदेशी वस्त्रों के प्रयोग पर बल दिया गया।

गाँधी जी के आन्दोलन के ध्वंसात्मक उद्देश्य के अन्तर्गत अधोलिखित नीति निर्धारित की गयी-

१. वकीलों द्वारा अदालतों का बहिष्कार, मुकदमें निस्तारित करने के लिए जन- न्यायालयों की स्थापना।
२. सरकारी तथा गैर सरकारी मान्यता प्राप्त स्कूलों तथा कालेजों का बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना।

---

१. नरेन्द्र भाई, लोक विद्रोह के आयाम, वाराणसी, सर्व सेवा संघ, राजघाट, १६७६, पृ०सं०- ०३।

२. १६२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकिया, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०-३१।

३. केन्द्रीय एसेम्बली तथा प्रान्तीय कौंसिलों के चुनावों का बहिष्कार।

४. सभी सरकारी सम्मानों, उपाधियों का त्याग तथा सरकारी समारोहों का बहिष्कार।

५. आँग्ल वस्तुओं का बहिष्कार तथा स्वदेशी को प्रोत्साहन।

६. नशाबंदी।[१]

गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन का सारे देश में व्यापक प्रभाव पड़ा, सभी ने अपने सामर्थ्य भर इस अहिंसक समर में अपनी सहभागिता दर्ज करायी। संयुक्त प्रान्त (उ०प्र०) ने भी बापू के इस अहिसंक संग्राम में बढ़ चढ कर भाग लिया। प्रान्त के सभी क्षेत्रों ने अहिंसात्मक आन्दोलन में प्रभावी भूमिका निभायी। जब सारा देश असहयोग आन्दोलन में कूद पड़ा हो तो भला ऐसे समय में एक अग्निधर्मा धरा के बहादुर बेटे चुप कैसे रह सकते हैं? बुन्देल क्षेत्र ने बापू के इस कार्यक्रम में भरपूर सहयोग प्रदान किया।[२] बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) के जनपदों में हमीरपुर जिला के जाबाजों नें इस अहिंसक युद्ध में महती भूमिका निभायीं। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन के प्रारम्भ होने से पूर्व ही हम्मीरी धरा (नव सृजित जनपद महोबा) में बंग - भंग के समय से ही सराहनीय सहभागिता शुरू हो चुकी थी।

---

१. १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकिया, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०-३१, ३२।

२. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्रवादी विचारधारा से यहाँ के आन्दोलनकारी पहले से ही प्रभावित थे। १६०७ के स्वदेशी आन्दोलन में हम्मीरी सत्याग्रहियों ने आगे बढ़ - चढ़ कर भाग लिया। उस समय जराखर में राष्ट्रीय स्तर के केसरी, वेंकटेश्वर, भारत जीवन तथा शुभचिन्तक जैसे समाचार पत्र आते थे, जिनसे वहाँ की राजनीतिक चेतना के उद्भव के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है।[1]

गाँधी - आन्दोलन में हम्मीरी धरती (महोबा सहित) की धमक प्रभावी रही। इसके पूर्व कि महोबा के आन्दोलन कर्मियों का गाँधी जी के अहिंसक संग्राम में सहभागिता को कलम की नोक में उतारा जाय, हम्मीर पुरोधाओं द्वारा आन्दोलन की पृष्ठभूमि विनिर्मित करने के ज़ज्बा का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा-

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के चरणों में एक चरण उग्रवादी आन्दोलन का रहा, जिसे लाल - बाल - पाल काल भी कहा जाता है। १६०६ से १६२८ तक आन्दोलन की बागडोर बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय और विपिन चन्द्र पाल के हाथों में रही। इसी बीच गाँधी - आन्दोलन का काल भी १६२० से प्रारम्भ हुआ।

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १६६५, पृ०सं०- २०, २१।

उग्रवादियों ने अपने आन्दोलन में स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा को प्रमुखता से वरीयता प्रदान की थी। इनके बहिष्कार कार्यक्रम के अन्तर्गत हमीरपुर की राठ तहसील के नम्बरदारों ने सराहनीय योगदान प्रदान किया था।

हमीरपुर कें आन्दोलनकारियों के लिए पं० परमानंद ने यहाँ आन्दोलन के लिए आवश्यक जमीन तैयार की थी, तत्पश्चात् सारे जनपद के देशधर्मियों ने बढ़ - चढ़ कर हिस्सा लिया।[1] पं० परमानंद सिकरौधा के एक ऐसे सपूत थे, जिन्होंने देश-विदेश में आजादी के संघर्ष की अलख जगायी। वे जब भी सिकरौधा आते, जनपद के युवाओं में राष्ट्रीय चेतना का संचार करते, उन्हें राष्ट्र-सेवा के लिए शिक्षित करते। इस क्रम में उन्होंने सबसे पहले जराखर के श्रीपति सहाय रावत तथा मगरौठ के दीवान शत्रुघ्न सिंह को प्रेरित किया।[2]

असहयोग आन्दोलन के प्रमुख योधेय

कांग्रेस के बैनर तले गाँधी जी के असहयोग प्रस्ताव के पारित होने के बाद जहाँ देश के कई भागों में राष्ट्रसेवियों ने उनके इस कार्यक्रम को स्वीकार कर लिया, वहीं बुन्देलखण्ड भी गाँधी - प्रस्ताव से परे नहीं रहा।

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १६६५, पृ०सं०- २०, २१।

२. स्वातन्त्र्य सेनानी रामानुज सिंह चन्देल से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

झाँसी के आत्माराम गोविन्द खरे, रघुनाथ विनायक धुलेकर, उरई के पं० मन्नीलाल पाण्डेय, बेनी माधव तिवारी, कोंच के कृष्ण गोपाल शर्मा, बाँदा के कुँवर हर प्रसाद सिंह, महोबा के बैजनाथ तिवारी, चुन्नीलाल जैन, शंकर लाल जैन तथा मुहम्मद बख्श कांग्रेस में शामिल हो गये।

राठ और मगरौठ के उरई के निकटस्थ होने के कारण दीवान शत्रुघ्न सिंह का उरई के मन्नीलाल पाण्डेय तथा बेनी माधव तिवारी से सामीप्य बढ़ा और वे कांग्रेस-कार्य प्रणाली से प्रभावित हुए। उन्होंने हम्मीरी धरा में कांग्रेस के गठन में महत्व पूर्ण भूमिका नियायी। दीवान शत्रुघ्न सिंह ने अपने जन्म स्थान मगरौठ में क्रांतिकारी दल की बैठक की, जिसमें उन्होंने कांग्रेस में प्रतिभाग करने का प्रस्ताव रखा, बहुत विवाद हुआ, तदुपरान्त यह निर्णय लिया गया कि क्रांतिकारी दल और कांग्रेस के संगठन में से जो जहाँ चाहे, अपनी प्रतिभागिता का चयन कर सकता है, दीवान शत्रुघ्न सिंह कांग्रेस में शामिल हो गये। उसके बाद हमीरपुर में कांग्रेस का गठन मजबूत होने लगा।[१]

महोबा जनपद से बैजनाथ तिवारी, नाथूराम तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नीलाल जैन, देवकी नंदन सुल्लेरे, भगवानदास बालेन्दु अरजरिया, दीनदयाल तिवारी, बृजगोपाल सक्सेना, श्रीराम पचौरी एवं बैजनाथ सक्सेना जैसे अनेक आन्दोलनकारियों ने असहयोग आन्दोलन में अग्रणी योगदान प्रदान किया।[२]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी पूरनलाल अग्रवाल से से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

२. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- २६, २७।

पं० बैजनाथ तिवारी

चन्देलों और बनाफरों की वसुधा में अनेक ऐसे वीर पैदा हुए हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से महोबबी धरती को धन्य कर किया है। ऐसे ही बहादुर वीरों में बैजनाथ तिवारी भी थे, जिन्होंने राष्ट्र सेवा में अपने को पूरी तरह संलग्न कर लिया था।

बैजनाथ तिवारी का २८ फरवरी १८९८ को महोबा के सम्पन्न परिवार में जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम श्री नन्दलाल तिवारी था। बैजनाथ की प्रारम्भिक शिक्षा महोबा में ही हुई, तत्पश्चात् इन्हें आगे शिक्षा के लिए लखनऊ के कालीचरण मिशन स्कूल में भेजा गया।

शिक्षा के स्थान का चयन

बैजनाथ तिवारी जब महोबा से लखनऊ पहुँचे तो वहाँ उन्होंने कालीचरण स्कूल में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश लिया, किन्तु उनका मन शिक्षा ग्रहण करने में नहीं लगा, क्योंकि उनका तो शिक्षा-साधना के लिए नहीं अपितु राष्ट्र - सेवा - साधना के लिए धरती पर आगमन हुआ था।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

बैजनाथ तिवारी का लखनऊ जैसे राजनीतिक जागरूकता के शहर में कई राष्ट्र सेवी कांग्रेसी नेताओं से सम्पर्क हुआ, उनकी विचार वसुधा में कांग्रेसियों के मानकों ने राष्ट्र - प्रेम का बीज बोया, जो कई कांग्रेसी नेताओं के सामीप्य सलित से अंकुरित होने लगा। वे राष्ट्र - प्रेम के क्षेत्र में कूद पड़े। इस तरह बैजनाथ तिवारी को लखनऊ में प्रभावी राजनीतिक परिवेश प्राप्त हुआ, जिसने उन्हें राष्ट्र - प्रेमी बना दिया।[१]

लखनऊ से महोबा आगमन

बैजनाथ तिवारी का लखनऊ में स्कूली शिक्षा प्राप्त करने में मन नहीं लगा, वे वहाँ से राजनीतिक शिक्षा प्राप्त कर अपनी जन्मभूमि महोबा लौटे। यहाँ पर आकर वे कांग्रेस - संगठन को मजबूत करने में जुट गये। गाँधी जी ने ०१ अगस्त १९२० को असहयोग आन्दोलन का शुभारम्भ किया। गाँधी - आन्दोलन में, चाहे वह असहयोग आन्दोलन हो, सविनय अवज्ञा आन्दोलन हो, व्यक्तिगत सत्याग्रह या भारत छोड़ो आन्दोलन हो, बैजनाथ तिवारी की प्रभावी भूमिका रही। पं० बैजनाथ तिवारी एक सम्पन्न तथा सम्भ्रान्त परिवार से जुड़े थे, इनका महोबा में प्रभाव था, इन्होंने गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम को महोबबी धरती में पूरी तरह से लागू करने का अथक प्रयास किया।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १२७, १२८।

२. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

पं० बैजनाथ तिवारी का घर गाँधी जी के सत्याग्रह संचालन का केन्द्र था, वहीं से राष्ट्र सेवी भावनाओं से युवाओं को अवगत कराया जाता था। आँग्ल - अभिलेखों से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि बैजनाथ तिवारी गाँधी कालीन आन्दोलन के अगुवा यौधेय रहे हैं, उन्होंने इस सिलसिले में कई बार जेल-यात्रा की है। स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा नमक सत्याग्रह के लिए बैजनाथ तिवारी ने महती प्रयास किये, उनके प्रयासों का महोबबी धरती में अच्छा प्रभाव पड़ा।

पठानपुरा का पुरोधा : रज्ज़ब अली आजाद

रज्ज़ब अली आजाद वीर भूमि महोबा के सूरमाओं में से अपना एक अलग स्थान रखते थे, उनका जन्म उस काल में हुआ था, जब भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर उग्रवादी आन्दोलनकारियों के हाथों में थी, आजाद बालकाल से ही एक अलग अन्दाज के राही बन चुके थे, चन्द्रशेखर आजाद की तरह वे भी राष्ट्र सेवा के दृढ़व्रती थे, उनके दृढ़ निश्चय ने ही उनके जीवन को 'आजाद' शब्द का ग्राही बनाया और वे रज्ज़ब अली आजाद के नाम से विश्रुत हो गये।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी रज्ज़ब अली आजाद की पत्नी कदीरन बेगम से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

बाल जीवन

रज्ज़ब अली आजाद का जन्म महोबा के पठानपुरा मोहल्ले में १६१० में हुआ था। उनके पिता करीम बख्श ठेकेदार थे। आजाद की माँ सलीमन थीं। रज्ज़ब अली का पुश्तैनी पेशा लकड़ी का व्यापार था। कालान्तर में रज्ज़ब अली ने भी इसी व्यवसाय को अपनाया। रज्ज़ब अली बचपन से ही स्वदेशानुरागी थे। उनका लकड़ी का टाल राजनीतिक चिन्तन का केन्द्र था। वहाँ पर स्वातन्त्र्य वीरों की आवाजाही रहती थी, रज्ज़ब अली बालकाल से ही वीरोचित प्रकृति के थे। स्वातन्त्र्य सेनानियों के लकड़ी के केन्द्र में ठहराव ने उन्हें देश सेवा के क्षेत्र का प्रतिबद्ध पुरोधा बना दिया, उन्होंने जब से राष्ट्र सेवा का व्रत लिया, उसके बाद से पीछे मुड़कर नहीं देखा। स्कूली शिक्षा के नाम पर रज्ज़ब अली ने मात्र ५वीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त की थी तत्पश्चात् वे अपने लकड़ी के पेशे से जुड़े रहे और देश प्रेम के प्रति संकल्प निष्ठा रखी।[१]

खिलाफत आन्दोलन और रज्ज़ब अली आजाद

ब्रिटिश सरकार ने १६१६ में मुसलमानों के साथ वादा खिलाफी की। तुर्की का खलीफा, जिन्हें मुस्लिम जगत का धार्मिक नेता- माना जाता था, जर्मनी का साथ दे रहा था।

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी रज्ज़ब अली आजाद की पत्नी कदीरन बेगम से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

जर्मनी धुरी राष्ट्रों से जुड़ा था, जो अंग्रेज विरोधी थे। ब्रिटेन ने मुसलमानों को आश्वासन दिया था कि वह मुस्लिम धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं आने देगा किन्तु प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन ने मुसलमानों को जो वचन दिया था, नहीं निभाया। गोरे मक्का के शरीफ को खलीफा बनाने का विचार कर रहे थे, साथ ही २६ अप्रैल १६२० को अग्रेंजों ने तुर्क साम्राज्य को विभक्त कर दिया, जिसने भारतीय मुसलमानों को उद्वेलित कर दिया। इस पर गाँधी जी ने १६१६ में खिलाफत आन्दोलन शुरू कर दिया। १७ अक्टूबर १६१६ को खिलाफत दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। इसमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनो ने मिलकर सहयोग प्रदान किया, तत्पश्चात् १६ मार्च १६२० को सारे देश में द्वितीय खिलाफत दिवस मनाया गया।[१]

गाँधी जी के खिलाफत आह्वान का सारे देश पर अनुकूल असर पड़ा। बुन्देलखण्ड भी खिलाफत आन्दोलन में पीछे नहीं रहा। बुन्देलखण्ड के नव सृजित जनपद महोबा ने भी इस आनदोलन में अगुवाई की। रज्ज़ब अली आजाद ने खिलाफत आन्दोलन में महोबा का प्रतिनिधित्व किया। खिलाफत के सन्दर्भ में गाँधी-प्रस्तावो को आजाद ने महोबबी धरती में अनुमन्य कराया, जिसको लेकर आजाद को ०६ माह का कठोर कारावास की सजा हुई और चालीस रुपयों का जुर्माना हुआ। इन्हें हमीरपुर जेल में रख गया।

---

१. नरेन्द्र भाई, विद्रोह की रणनीति, वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, १६७६, पृ०सं०- ०४, ०६।

पं० मूलचन्द्र इनके जेल - साथी रहे। तत्पश्चात् रज्ज़ब अली आजाद ने गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में भी अग्रणी भूमिका निभायी। असहयोग कार्यक्रम का उन्होंने महोबा में अनुपालन कराया, जिसके लिए जगह - जगह सभायें तथा विरोध प्रदर्शनों का आयोजन कराया। गाँधी - आन्दोलन में ऐसा कोई आन्दोलन नहीं था, जिसमें आजाद आगे न रहे हों, तिरंगा झण्डा लेकर प्रदर्शन न किया हो।[१]

देवकी नन्दन सुल्लेरे

महोबा का सुल्लेरे परिवार भी पुरोधत्व क्षेत्र में पीछे नहीं रहा। इसने भी भारतीय परतन्त्रता के पटाक्षेप में पौरुषेय भूमिका निभायी।

बाल काल की शिक्षा

देवकी नंदन सुल्लेरे का१८८७ में जन्म हुआ था सुल्लेरे के पिता बाल मुकुन्द सुल्लेरे जमीदार थे। इनकी माँ का नाम हजारी दुलैया था, जो एक कुशल गृहणी थीं। देवकी नंदन सुल्लेरे ने अपनी प्राथमिक शिक्षा राठ में प्राप्त की थी। इन्होंने १९१२ में राठ से बर्नाक्युलर की परीक्षा प्रथम श्रेंणी में पास की थी। देवकी नंदन सुल्लेरे ने नौगांव के कैप्टूनमेण्ट हाई स्कूल से १९१७ में मैट्रीकुलेशन की परीक्षा भी प्रथम श्रेंणी में उत्त्तीर्ण की।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

उसके पश्चात् घर के अन्तर्कलह के कारण इनकी उच्च शिक्षा नहीं हो पायी। देवकी नंदन सुल्लेरे का उ०प्र० पुलिस सेवा के अन्तर्गत पुलिस के निरीक्षक पद पर चयन हो गया था किन्तु उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। इस तरह देवकी नंदन सुल्लेरे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे।[1]

वकालत तथा राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में

देवकी नंदन सुल्लेरे ने १६२१ में मुख्तार की परीक्षा पास कर ली, तत्पश्चात् उन्होंने महोबा में ही वकालत करना प्रारम्भ कर दिया था। सुल्लेरे जी को बुन्देलखण्ड के गाँधी कहे जाने वाले दीवान शत्रुघ्न सिंह का सामीप्य प्राप्त था, साथ ही उनका कीरत सागर के तट पर हुए स्वातन्त्र्य सैनिकों के सम्मेलन में कुछ सैनिकों से परिचय हुआ। इस तरह देवकी नंदन सुल्लेरे की मनोभूमि में राष्ट्र प्रेम का बीज पड़ा, जो कालान्तर में पं० परमानंद, श्रीपत सहाय रावत, दीवान शत्रुघ्न सिह जैसे शूरों के सानिध्य सलिल से पुष्पित एवं पल्लवित हुआ और वे राष्ट्र सेवी हो गये।

गाँधी जी ने ०१ अगस्त १६२० को देश में असहयोग आन्दोलन का आह्वान किया, जिसका पूरे राष्ट्र ने समर्थन किया। इस दिशा में बुन्देलखण्ड ने भी सराहनीय सहभागिता दिखायी, इस क्षेत्र में महोबा भी पीछे नहीं रहा।[2]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १२३।

२. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

देवकी नंदन सुल्लेरे ने गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में आगे बढ़कर भाग लिया। उनके असहयोग - कार्यक्रम के अनुपालन में उनकी महोबा में प्रतिभागिता प्रशंसनीय रही। चाहे सभाओं के आयोजन का प्रश्न रहता हो या विरोध प्रदर्शन का कार्य हो, सभी में सुल्लेरे का सहयोग शानदार रहा।

शंकर लाल जैन

शंकर लाल जैन महोबा के महत्वपूर्ण स्वातन्त्र्य सेनानियों में से एक रहे, उनका सन् १६८८ में महोबा के मुक्ता प्रसाद जैन के घर जन्म हुआ था, शंकर लाल जैन के पिता एक प्रमुख व्यापारी थे। जैन की प्रारम्भिक शिक्षा सातवीं कक्षा तक महोबा में हुई, महोबा पराधीन काल में राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा, इस नाते शंकर लाल जैन का राष्ट्र सेवा से प्रभावित होना स्वाभाविक था। शंकर लाल जैन भी स्वातन्त्र्य संघर्षी बन गये।[१]

असहयोग आन्दोलन और शंकर लाल जैन

गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के सारे देश में शुरु होने के साथ ही उनके कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के दौर में भी महोबा पीछे नहीं रहा। असहयोग आन्दोलन के अन्तर्गत उद्देश्य परक दो प्रकार की योजनाएं थीं– रचनात्मक और ध्वंसात्मक।

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी शंकर लाल जैन के पुत्र प्रकाश चन्द्र जैन से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार ओर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया जाना असहयोग आन्दोलन का एक पक्ष था, जिसे शंकर लाल जैन ने पूरी तरह निभाया। उन्होंने अपने कपड़ों के व्यापार में विदेशी वस्त्रों की बिक्री बंद कर दी और जैन महोबा के पहले कपड़ा व्यापारी बने, जहाँ पर खद्दर का बड़े पैमाने पर व्यापार होता था। इस तरह शंकर लाल जैन गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में पीछे नहीं रहे, यथाशक्ति भरपूर सहयोग प्रदान कर आन्दोलन को महोबा में सफल बनाने में पूरी तरह जुटे रहे।[१]

चुन्नी लाल जैन

चुन्नी लाल जैन महोबा के उन राष्ट्र वीरों में से एक थे, जिन्होंने बाल काल में ही राष्ट्र - प्रेम की वह बाल घुट्टी पी थी, जिसने उसे राष्ट्र निष्ठा की दृष्टि से सदैव निरोग रखा। चुन्नी लाल जैन का १८६५ में फैरनलाल के घर उस समय जन्म हुआ, जब देश कांग्रेस के बैनर तले आन्दोलन की एक दशक की लड़ाई लड़ चुका था। चुन्नी लाल जैन की शिक्षा चौथी कक्षा तक ही हुई, किन्तु संस्कृत, अंग्रेजी तथा उर्दू पर उनकी अच्छी पकड़ रही।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १२४।

२. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

चुन्नी लाल जैन ने तो वैसे ऐसा कोई गाँधी आन्दोलन नहीं था, जिसमें आगे बढ़कर हिस्सा न लिया हो किन्तु चुन्नी लाल जैन की गाँधी जी के ०१ अगस्त १६२० से प्रारम्भ हुए अहिंसक संग्राम में विशेष भूमिका रही। चुन्नी लाल जैन ने विशेष रूप से अपने तीन मित्रों पं० लक्ष्मण राव, मूलचन्द्र शुक्ल तथा नन्हेलाल पंसारी के साथ गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। महोबबी धरा में आँग्ल सत्ता के खिलाफ धरना प्रदर्शन और हड़तान को लेकर चुन्नीलाल जैन आगे रहे। वे कभी भी सांग्रामिक दृष्टि से फिसड्डी नहीं रहे। जैन अपनी धुन के धनी थे। चुन्नी लाल जैन तथा उनके तीन मित्रों को गोरी सरकार ने १६ दिसम्बर १६२१ को महोबा में गिरफ्तार कर लिया।[१]

चुन्नी लाल जैन के साथ नन्हे लाल पंसारी, पं० लक्ष्मण राव, मूलचन्द्र शुक्ल भी गिरफ्तार कर लिये गये। सूपा के ज्वांइट मजिस्ट्रेट ने दफा १७(A) के अन्तर्गत चारों सत्याग्रहियों को ०६ माह की कठोर सजा दी। इन आन्दोलनकारियों ने आजादी के घोषणा पत्र में हस्ताक्षर किये, साथ ही स्वयं सेवकों का एक जत्था भी तैयार किया था, इस कारण ये गोरी सरकार की नजरों में चढ़ गये थे। चुन्नी लाल जैन गाँधी जी के अन्य आन्दोलनों में अगुवा रहे किन्तु असहयोग आन्दोलन को लेकर उनकी यादगार भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी।

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १४१।

असहयोग आन्दोलन और नाथूराम तिवारी

नाथूराम तिवारी का २६ सितम्बर १६०५ को महोबा के प्रसिद्ध कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ था। नाथूराम तिवारी प्रसिद्ध देशभक्त बैजनाथ तिवारी के छोटे भाई थे। नाथूराम तिवारी को अपने अग्रज बैजनाथ तिवारी से राष्ट्र प्रेम की प्रेरणा मिली थी। इसके अतिरिक्त इनको कुलपहाड़ के प्रसिद्ध राष्ट्रसेवी अरजरिया परिवार का भी सानिध्य मिला था। प्रसिद्ध अरजरिया की बहन भुवनेश्वरी देवी के साथ नाथूराम तिवारी का विवाह हुआ था।[१]

नाथूराम तिवारी की प्रारम्भिक शिक्षा मिडिल तक महोबा में ही हुयी थी, ये बाल काल अर्थात १२ वर्ष की आयु में ही राष्ट्रधर्मी बन चुके थे। इन्होंने १२ वर्ष की उम्र में राष्ट्रीय विद्यार्थी दल की सक्रिय सदस्यता ग्रहण कर ली थी। उस उम्र में ही इनका प्रमुख कार्य आँग्ल विरोधी जुलूस निकालना तथा नारेबाजी करना था। इस तरह इनके हृदय-प्रदेश में बचपन में ही राष्ट्र प्रेम का बीजारोपण हो गया। ये राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में बचपन में ही आ गये थे, इस कारण नाथूराम तिवारी उच्च शिक्षा नहीं ग्रहण सके।[२]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी पूरन लाल अग्रवाल से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

२. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १५०।

गाँधी - आन्दोलन में

नाथूराम तिवारी के आदर्श उनके बड़े भाई पं० बैजनाथ तिवारी थे, इन्होंने बैजनाथ तिवारी से राजनीतिक शिक्षा ग्रहण की। नाथूराम तिवारी बीच - बीच में अपने अग्रज का भी प्रतिनिधित्व करते रहे। नाथूराम तिवारी ने गाँधी जी के आन्दोलनों में प्रभावी सहभाग किया। धरना, प्रदर्शन, नारेबाजी तथा जुलूस के संचालन में तो नाथूराम तिवारी को प्रारम्भ में ही प्रवीणता हासिल हो गयी थी, इसलिए उन्हें गाँधी आन्दोलन में प्रतिभाग करने में कोई अड़चन नहीं हुई। इन्होंने गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में भी अगुवायी भमिका निभायी, महोबा में उसे सफलता प्रदान करने में कोई कोर-कसर नहीं छोंड़ी।

नन्हे लाल वैद्य

नन्हे लाल महोबा के उन गिने - चुने समाज सेवी तथा स्वातन्त्र्य सेनानियों में से एक थे, जो जीवन के आदिकाल से ही राष्ट्र धर्म को आत्मसात् कर लिया था। नन्हे लाल का जन्म १८६२ में हुआ था। इनके पिता का नाम बल्देव प्रसाद गुप्त था।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

लोक सेवा के क्षेत्र में

नन्हे लाल व्यावसायिक परिवार से जुड़े थे। इनके ऊपर बाल काल में ही दायित्व थोप दिया गया था। इनकी शादी बहुत कम उम्र में ही हो गयी। नन्हे लाल कभी भी जिम्मेदारी से विरत नहीं रहे। पारिवारिक दायित्व को निभाने के साथ-साथ इनके दिमाग में प्रारम्भिक जीवन में ही समाज सेवा की रूचि उत्पन्न हो गयी थी। नन्हे लाल ने १९१४-१५ में महोबा में सेवा समिति का गठन किया था, जिसके ये स्वयं मंत्री थे। उस समिति के बैनर तले नन्हे लाल ने बेगार प्रथा के उन्मूलन का बीड़ा उठाया, उसे कार्य रूप में परिणित करने में आगे बढे। इस नेक कार्य के कारण इन्हें ०६ माह के लिए नगर बदर होना पड़ा। इससे यह स्पष्ट होता है कि नन्हेलाल जीवन के शुरुआती काल में ही लोक तथा देश सेवी बन चुके थे।[१]

असहयोग आन्दोलन और नन्हे लाल

नन्हे लाल तो युवाकाल में ही राष्ट्र परायण हो चुके थे, ऐसे में उनके लिए गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में आना कोई अस्वाभाविक नहीं लगा। नन्हे लाल गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में पूरे मनोयोग से कूद पड़े। इन्होंने धारा १४४ का उल्लंघन किया।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १४६।

२. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

महोबा में धरना, प्रदर्शन, जुलूस का नेतृत्व किया। फलतः गोरी सत्ता ने इन्हें मूलचन्द्र शुक्ल, चुन्नीलाल जैन तथा लक्ष्मण राव के साथ गिरफ्तार कर लिया। नन्हे लाल को ब्रिटिश सरकार ने तीन माह का कठोर कारावास तथा रु० २०० का जुर्माना किया। नन्हे लाल इस सजा से घबड़ाये नहीं, इन्होंने अपने आचरण को और भी धार प्रदान की। कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली, जनपद के प्रमुख पुरोधा दीवान शत्रुघ्न सिंह से सम्पर्क बढ़ाया। नन्हे लाल ने महोबा में आर्य समाज मंदिर की भी स्थापना की।

नन्हे लाल ने लोक सेवार्थ वैद्यकी को भी अपनाया, उसे आय का साधन कभी नहीं बनाया, हमेशा जरूरत मन्दों की मदद करते रहे। विभिन्न संस्थाओं से जुड़े रहे। आयुर्वेद के क्षेत्र में अच्छा ज्ञान होने के कारण नन्हे लाल ने लोगों की चिकित्सा - सेवा की। ये वैद्य के रूप में विख्यात हो गये और 'वैद्य' शब्द इनके जीवन के साथ जुड गया, जो जीवनान्त रहा। नन्हे लाल लोक सेवा के क्षेत्र में अग्रणी रहे। इन्होंने शिक्षा के प्रचार - प्रसार में भी योगदान प्रदान किया, अनेक जरूरतमन्द विद्यार्थियों को वैद्य जी ने आर्थिक मदद भी प्रदान की। इस लोक सेवी राष्ट्र भक्त का १९६८ में निधन हो गया।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी रज्ज़ब अली आजाद की पत्नी कदीरन बेगम से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

श्रीराम पचौरी

श्रीराम पचौरी महोबा के ही नहीं अपितु बुन्देल क्षेत्र के एक ऐसे राष्ट्र धर्मी वीर हुए हैं, जिन्होंने स्वातन्त्र्य संघर्ष के क्षेत्र में अपने को न्योछावर कर दिया। श्रीराम पचौरी का महोबा में १६०६ में जन्म हुआ था, इनकी प्रारम्भिक शिक्षा महोबा में ही हुई। इनका पेशा हलवाई गिरी था। ये एक अच्छे पाक शास्त्री होने के साथ-साथ एक अच्छे पहलवान भी थे। श्रीराम पचौरी सरल स्वभाव वाले मृदुभाषी थे।

आन्दोलन के क्षेत्र में

श्रीराम पचौरी आल्हा साहित्य प्रेमी थे। पचौरी अपने जीवन के प्रारम्भ काल से ही स्वातन्त्र्य संघर्ष के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे। श्रीराम पचौरी जहाँ पहले बुन्देल क्षेत्र के विख्यात क्रांतिकारी राधेश्याम मिश्र तथा रामगोपाल गुप्त से प्रभावित हुए, वहीं आगे चलकर आप गाँधीवादी आन्दोलनों से पूरी तरह जुड़ गये। ऐसा कोई गाँधी वादी आन्दोलन नहीं था, जिसमें श्रीराम पचौरी ने अपनी सहभागिता दर्ज न करायी हो। महोबा के शराब के सरकारी गोदामों पर धरना-प्रदर्शन तथा गोरों के खिलाफ जुलूस निकालना जैसे सभी अहिंसक कार्यक्रमों में श्रीराम पचौरी बहुत आगे रहे।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

गाँधीवादी संग्राम में ही श्रीराम पचौरी को बंदी बनाकर बदायूँ जेल भेजा गया था, जहाँ पर उन्होंने गोरों के समक्ष माफीनामा प्रस्तुत नहीं किया था, जेल में ही इन्होंने अपने प्राण त्याग दिये थे।

निष्कर्ष

भारतीय आजादी के लिए संघर्षों में गाँधी जी द्वारा लड़े गये युद्धों में असहयोग आन्दोलन अपनी तरह का लड़ा गया एक अलग प्रकार का अहिंसक सग्राम था। वैश्विक समरों में गाँधी जी के अहिंसक संग्रामों का कोई सानी नहीं था। गाँधी जी के स्वातन्त्र्य आन्दोलनों में वैसे तो पूरे बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) ने प्रभावी पहल की किन्तु इस क्षेत्र में महोबा पीछे नहीं रहा। यहाँ के पं० बैजनाथ तिवारी, नाथूराम तिवारी, रज्ज़ब अली आजाद, बैजनाथ सक्सेना, दीनदयाल तिवारी, पूरनलाल अग्रवाल, बृजगोपाल सक्सेना तथा विशेश्वर दयाल पटेरिया जैसे अनेक स्वातन्त्र्य शूरों ने गाँधी जी के आन्दोलनों में अग्रणी भूमिका निभायी।

कुलपहाड़ के भगवानदास बालेन्दु अरजरिया, उनकी पत्नी किशोरी देवी अरजरिया, सरयू देवी पटेरिया, भुवनेश्वरी देवी सहित अनेक वीर महिलाऐं तथा पनवाड़ी, अजनर, महोब कंठ तथा श्रीनगर थाने के कई गाँवों के वीरों ने आजादी की लडाई में आगे आने में जरा भी संकोच नहीं किया, वे बिना किसी लाग - लपेट के आन्दोलन में कूद पड़े आर पूरे मनोयोग से संघर्ष किया।

इस अध्याय में किये अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि महोबा जनपद के स्वातन्त्र्य सेनानियों का संघर्षी सहभाग किसी भी दृष्टि से कम नहीं रहा, विभिन्न अभिलेखों, सर्वेक्षणों तथा साक्षात्कारों से इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि महोबा की धरा अग्निधर्मा रही है और यहाँ के शूरों ने असहयोग आन्दोलन की अगुवाई की है।

तृतीय अध्याय

कांग्रेस के अधिवेशन और महोबा

३

कांग्रेस के अधिवेशन और महोबा

१७५७ के प्लासी युद्ध मे भारतीयों को गोरों ने जिस छल और चाल का व्यूह रचकर पराजित किया था, उसके बाद से ही भारतीयों में यह भावना घर कर गयी थी कि अंग्रेजों ने दगाबाजी से भारतीयों को परास्त किया है। प्लासी पराजय के बाद से ही देशवासियों में दासता के दाह से उबरने का उत्स उद्भूत होने लगा था। राष्ट्रीय संघर्ष को एक बैनर की तलाश थी।[१]

भारत में १७५७ से लेकर १८८४ तक प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष सहित अनेक क्षेत्रीय, प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय संग्राम हुए किन्तु उन्हें राष्ट्रीय स्तर का कोई रणाह्वान आलम्ब नहीं मिला, १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, १८८५ के बाद से सभी रणाह्वानों का बैनर कांग्रेस बनी, कांग्रेस के बैनर तले सभी लड़ाइयाँ लड़ी गयीं।[२] १८८५ के बाद प्रतिवर्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन होता था, जिसमें राष्ट्रीय आन्दोलनों की रूप रेखा तय होती थी। इस तरह से यदि यह कहा जाय कि अधिवेशन ही आन्दोलनों को आधार भूमि प्रदान करते थे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

---

१. डॉ० सुभाष कश्यप, स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कायान्वय निदेशालय, १९९७, पृ०सं०- ०३।

२. वही, पृ०सं०- १८।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हर अधिवेशन में एक मंच में विभिन्न विचारधाराओं की विभूतियों का संगम होता था, जिसमें वर्ष भर की समर नीति पर चर्चा होती थी। हर वार्षिक अधिवेशन में देश भर के हर क्षेत्र से सैकड़ो - प्रतिनिधि सहभागी होते थे। इस दृष्टि से बुन्देलखण्ड कभी पीछे नहीं रहा। बुन्देलखण्ड के हर जनपद से कई प्रतिनिधि अधिवेशनों में अपनी प्रतिभागिता दर्ज कराते थे और चोटी के राष्ट्रवीरों से परामर्श कर आन्दोलन की भावी रणनीति से उन्हें अवगत कराते थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में बुन्देल क्षेत्र के हमीरपुर जनपद से कई स्वातन्त्र्य शूर अधिवेशनों में सिरकत करते थे। उन सहभागी सूरमाओं में से दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपति सहाय रावत, स्वामी ब्रह्मानन्द, बेनी माधव तिवारी तथा शंकर लाल जैन एवं रानी राजेन्द्र कुमारी जैसे समर सिंहनी के नाम उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं।

प्रस्तुत अध्याय में महोबा जनपद की प्रतिभागिता के विवेचन से पूर्व यहाँ अधिवेशनों के स्वरूप तथा सोंच का भी उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। कांग्रेस का हर अधिवेशन आन्दोलन की आह्वानिका होता था। १८८५ से लेकर १९४७ तक ६२ वर्षों के कांग्रेस-अधिवेशनों पर दृष्टिपात करने से यह सुस्पष्ट होता है कि कांग्रेस हर कालखण्ड को पार करता हुआ अनेक विचार धाराओं को अन्तस्थ करता हुआ राष्ट्रीय प्राप्य (स्वतंत्रता) का अविश्रान्त पथिक रहा है।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

कांग्रेस कभी उदारवादी विचार धारा की आवहक रही है, तो कभी उग्रवादी विचार धारा की संपादक। इस पर कभी क्रांति धर्मी प्रभाव रहा है तो कभी गाँधीवादी दृष्टिकोंण की पक्ष धर। इस तरह कांग्रेस की लगभग साढ़े छः दशकों की सामरिक यात्रा सराहनीय रही है। कांग्रेस - अधिवेशनों से विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभागियों को नव ऊर्जा प्राप्त होती थी। बुन्देलखण्ड कांग्रेस के अधिवेशनों में प्रतिभागिता की दृष्टि से आगे रहा, यहाँ के बहुत से प्रतिनिधि हर कांग्रेस अधिवेशन में शामिल होते थे।[१]

कांग्रेस के अधिवेशनों में बुन्देलखण्ड के हमीरपुर, महोबा जनपद से दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपति सहाय रावत, स्वामी ब्रह्मानन्द, बैजनाथ तिवारी एवं शंकर लाल जैन, उरई (जालौन) से बेनी माधव तिवारी तथा मन्नीलाल पाण्डेय, बाँदा से कुँवर हर प्रसाद सिंह और लक्ष्मी नारायन सिंह अग्निहोत्री, झाँसी से रघुनाथ विनायक घुलेकर तथा आत्मा राम गोविन्द खेर जैसे समर्पित तथा स्वातन्त्र्य सूरमाओं की भूमिका सदैव अग्रणी रहती थी।[२]

अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन और महोबा

कांग्रेस - अधिवेशनों में महोबा के प्रतिभागियों का कैसा सहभाग रहा, के विवेचन से पूर्व इस तथ्य का भी उल्लेख करना समाचीन होगा

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ५३।

कि हमीरपुर का विभाजन ११ फरवरी १९९५ को हुआ, १९९५ में महोबा जनपद अस्तित्व में आया। इस कारण प्रस्तुत अध्याय में हमीरपुर धरा के योगदान के बिना महोबबी धरती का आधिवेशनिक अनुदाय अधूरा रहेगा। अहमदाबाद कांग्रेस- अधिवेशन में बुन्देल भूमि से बहुत से प्रतिनिधि शामिल होने पहुँचे।

अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन पर एक दृष्टि

१९२१ में गुजरात प्रान्त के अहमदाबाद शहर में अधिवेशन के आयोजित होने की सूचना हमीरपुर के प्रमुख स्वातन्त्र्य शूर श्रीपति सहाय राव को समाचार पत्र के माध्यम से प्राप्त हुई। रावत हमीरपुर के ही नही अपितु बुन्देलखण्ड के महान सूरमा थे। राष्ट्रीय आन्दोलन में बुन्देलखण्ड के हमीरपुर जनपद में जब से क्रांति धर्मी उत्स का स्फुरण हुआ था, जिसका नेतृत्व पं० परमानंद, दीवान शत्रुघ्न सिंह एवं श्री पति सहाय रावत करते थे।

१९१६ के बाद दिवान साहब गाँधी वादी आन्दोलन से प्रभावित होकर हिंसा से अहिंसा के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए, फलतः पूरा जनपद हमीरपुर (महोबा भी) अहिंसात्मक क्षेत्र में उतर आया।[1]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी शंकर लाल जैन के पुत्र प्रकाश चन्द्र जैन से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

दीवान साहब और श्रीपति सहाय में मंत्रणा

दीवान साहब ने श्रीपति सहाय रावत से विचार - विमर्श कर निर्णय लिया कि गाँधी जी के आदर्शों और सिद्धान्तों से साक्षात्कार करने के लिए अहमदाबाद अधिवेशन से अच्छा और कहाँ अवसर मिल सकता है? दीवान शत्रुघ्न सिंह और श्रीपति सहाय रावत ने यह फैसला किया कि अहमदाबाद जाकर गाँधी वादी विधा से हम लोगों को परिचित होना चाहिए।[१]

इस विचार के उपरान्त हमीरपुर से रामगोपाल गुप्त, दिवान शुत्रुघ्न सिंह तथा श्रीपति सहाय रावत, महोबा से शंकर लाल जैन तथा बेनी प्रसाद तिवारी जैसे सेनानियों ने अधिवेशन में सहभागिता करने का निश्चय किया। हमीरपुर, महोबा के सेनानी अहमदाबाद कांग्रेस - अधिवेशन में शामिल होने के लिए झाँसी पहुँचे।

झाँसी में उनकी उरई, जालौन तथा झाँसी के स्वातन्त्र्य सेनानियों से मुलाकात हुई। बुन्देलखण्ड के सत्याग्रहियों में कोंच के बाबूराम गुप्त भी थे, जो अपनी 'बम के गोले' नामक क्रांति धर्मी कविता की पुस्तकों का गट्ठर लिये थे, जिन्हें वे कांग्रेस-अधिवेशन में बेचना चाहते थे।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ५३।

जब दीवान शत्रुघ्न सिंह स्वयं कुली बने

दीवान शत्रुघ्न सिंह अपने आदर्शों और सिद्धान्तों के कारण बुन्देलखण्ड में गांधी के नाम से जाने जाते थे। कोंच के गुप्त को पुस्तकों के गट्ठर को ढ़ोने के लिए कुली नहीं मिल रहा था, उधर अहमदाबाद जाने वाली ट्रेन सफेद खद्दर धारियों से ठसाठस भरी थी, कहीं पर भी तिल भर जगह नहीं थी। ऐसे में दीवान साहब से गुप्त जी की परेशानी न देखी गई। उन्होंने स्वयं गुप्त जी का गट्ठर अपने सिर रखा और उसे लेकर कई डिब्बों में जगह तलाशी। गुप्त जी दीवान साहब के पीछे-पीछे चल रहे थे। श्रीपति सहाय रावत से न रहा गया, वे गुप्त जी के आचरण को न पचा पाये, रावत जी गुप्त जी का पुस्तकीय गट्ठर नीचे फेंकना चाहते थे किन्तु दिवान साहब ने मना कर दिया, उन्होंने उस गट्ठर को सुरक्षित स्थान पर रखकर ही दम लिया। इस तरह दीवान शत्रुघ्न सिंह ने एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया कि हर व्यक्ति को अपना काम स्वयं करना चाहिए।[१]

श्रीपति सहाय रावत सहित बुन्देलखण्ड के अनेकों सेनानियों को दीवान साहब का यह आदर्श जीवनान्त स्मरण रहा। वे सब दीवान साहब के कायल थे, वे सभी इस घटना को कभी नहीं भूल पाये।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

इन सारे सेनानियों को गुजरात प्रान्त की संस्कृति ने बहुत प्रभावित किया। वहाँ के युवाओं ने अहमदाबाद स्टेशन में अतिथि सेनानियों की स्नेहिल आव - भगत की, जिसे बुन्देलखण्डी कभी भूल न पाये।

खादी नगर

अहमदाबाद - अधिवेशन में गाँधी जी के आदर्श एवं सिद्धान्त जीवन्त रूप में परिलक्षित होते थे, जिनको बाद में सारे देश ने अपने आचरण में ढाला। अधिवेशन के शहर के बाहर एक विशाल मैदान था, जिसमें प्रतिनिधि सेनानियों के ठहरने के लिए प्रान्तवार कैम्प बनाये गये थे, अधिवेशन में गाँधीवादी रचनात्मकता के खुले दर्शन होते थे। स्वदेशी वस्तुओं की छटा का एक अलग ही अन्दाज था। कांग्रेस अधिवेशन का विशाल पण्डाल बनाया गया था, जिसमें सब कुछ खादी से रेखांकित किया गया था, इसी कारण इसे खादी नगर का नाम दिया गया था। हकीम अजमल खाँ अधिवेशन के अध्यक्ष थे और लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल स्वागताध्यक्ष थे। हमीरपुर, महोबा के प्रतिनिधि सेनानियों को अहमदाबाद - अधिवेशन में राष्ट्र की जिन प्रमुख विभूतियों के दर्शन हुए, उनमें से प्रमुख थे- गाँधी, सरदार बल्लभ भाई पटेल, भूलाभाई, मौलाना अबुल कलाम आजाद, मदन मोहन मालवीय, मोतीलाल तथा जवाहर लाल नेहरू, सरोजनी नायडू एवं राजेन्द्र प्रसाद इत्यादि।[१]

---

१. श्याम सुन्दर बादल (संपादक), दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रंथ, राठ, जी०आर०बी० इण्टर कालेज, पृ०सं०- ६०।

बुन्देली - समागम

अहमदाबाद - अधिवेशन में देश भर से आये प्रतिभागियों की संख्या तो बहुत अधिक थी किन्तु बुन्देलखण्ड भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहा, यहाँ के सभी सहभागियों के लिए एक अलग कैंप था, जिसमें बुन्देल क्षेत्र के सभी सहभागी ठहरे हुए थे। हमीरपुर, महोबा, उरई, बाँदा और झाँसी के सभी स्वातन्त्र्य सेनानियों का समागम एक ही शिविर में हुआ, जिससे उन्हें आपस में विचार - विमर्श करने तथा एक दूसरे को सुनने - समझने का सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ। इस बुन्देली - समागम में दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपति सहाय रावत, बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, बैजनाथ शास्त्री, रघुनाथ विनायक घुलेकर, आत्माराम गोविन्द खरे, कुँवर हर प्रसाद सिंह एवं लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री की गरिमामयी उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

गाँधी जी से मुलाकात

बुन्देलखण्ड के सभी स्वातन्त्र्य सेनानियों को अधिवेशन में गाँधी जी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रतिभागियों ने गाँधी सादगी को स्वयं अपने नैनों से निहारा। वे खद्दर से बनी एक सामान्य कुटिया में साधारण सी कुर्सी पर बैठे थे।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

बुन्देलखण्ड के सभी प्रतिनिधियों को गाँधी जी ने एक साथ बुलाया और उनसे स्वातन्त्र्य संघर्ष में कुर्बानी के लिए तैयार रहने को कहा। उन्होंने कहा कि आँग्ल सरकार एक बेईमान सरकार है। गाँधी जी ने प्रतिभागियों से कहा कि देश की राजनीति व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर है।

राजनीति एक कच्चा धागा है

गाँधी जी ने राजनीति का अर्थ एक रूपक देकर स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि देश की राजनीति में अगर व्यक्तिगत स्वार्थ को प्रमुखता दी जायेगी तो देश की राजनीति बिगड़ जायेगी। गाँधी जी ने कहा कि राजनीति कच्चे धागे की तरह होती है। उस धागे का एक किनारा तुम पकड़े हो और दूसरा किनारा तुम्हारा साथी पकड़े है, अगर दोनो मित्र उस धागे को एक साथ अपनी - अपनी ओर खींचेगे तो धागा टूट जायेगा और उससे जो काम बनने वाला है वह नहीं बनेगा। इसलिए एक साथी को चाहिए कि वह अपना किनारा भी दूसरे मित्र को थमा दे ताकि संगठन बना रहे। इतना कहने के बाद गाँधी जी ने बुन्देलखण्डियों को अपने यहाँ से विदा किया।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

साबरमती आश्रम

अधिवेशन में बुन्देलखण्डी दो दिन रहे, उन्होंने दो दिनो तक अधिवेशन का बारीकी से अध्ययन किया। तीसरे दिन वे गाँधी जी के साबरमती आश्रम को देखने गये, जो खादी नगर से तीन मील दूर था। प्रतिभागियों ने देखा कि गुजराती लोग कितने सभ्य और शान्त हैं, उन्होंने यह महसूस किया कि आश्रमवासी अधोलिखित आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात कर अपन जीवन संचालित कर रहे हैं। आश्रम के आदर्श थे- सादाजीवन उच्च्व विचार, मितव्यता, श्रमशीलता, स्वावलम्बन, अन्तः स्वच्छता, नियमित जीवन, लोक सेवा, सत्य के प्रयोग, सद्शिक्षा, स्वदेश प्रेम, गोपालन, कृषि, ईश्वर पर आस्था, अहिंसा, देशभक्ति, स्वार्थ त्याग और कष्ट सहिष्णु।[१]

बुन्देलखण्ड के प्रतिनिधियों ने आश्रम में देखा कि वहाँ के निवासी आश्रम के आदर्शों को अपने जीवन में पूरी तरह से उतारे हुए थे। आश्रमवासियों का जीवन पूरी तरह से सादा तथा सौम्य था। वे मितव्ययी थे। श्रमशीलता उनके रोम-रोम में समायी हुई थी। उनके जीवन में पूरी तरह से नियमितता एवं निरन्तरता थी। आश्रमवासी लोक सेवी थे, सत्य के प्रयोग और सद्शिक्षा पर विशेष रूप से ध्यान देते थे।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया की पत्नी किशोरी देवी अरजरिया से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

आश्रम में भारत में बनी हुई वस्तुओं का प्रतिज्ञाबद्ध प्रयोग होता था। आश्रम में हाथ से कते सूत और हाथ से बने वस्त्रों को उपयोग होता था। आश्रम में गोपालन पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गाँधी जी ने गो सेवा को आश्रम का एक अभिन्न कार्य बनाया था। गाँधी जी स्वयं अपने हाथों से गायों को चारा डालते, गोमूत्र साफ करते तथा गोबर को खाद के गढ़ढों में में भरते थे। वे गो सेवा के स्वयं बहुत बड़े पुजारी थे।

गाँधी साबरमती आश्रम में कृषि भी करते थे। वे स्वयं कृषि कार्य की देखभाल करते थे। वे कहते थे कि– 'किसानों में दुर्व्यसन नहीं होना चाहिए, अन्यथा किसानों को बर्बाद होने में एक भी समय नहीं लगता'। गाँधी जी के आश्रमवासियों को अपना काम स्वयं करना पड़ता था यथा– चक्की पीसना, पानी भरना, सफाई करना, चावलों को कूटकर साफ करना, सूत कातना, तेल की घानी से तेल निकालना, गायों से दूध निकालना, गोवर साफ करना, कपड़ा बुनना और टट्टी साफ करना जैसे कार्य रोजमर्रा के कार्य थे। आश्रम का एक ही खजाना था, अलग से आश्रमवासियों को रुपये रखने की इजाजत नहीं थी, सारे आश्रम का खर्च एक परिवार की भाँति चलता था। गाँधी स्वयं आस्थावादी थे। उनका ईश्वर पर अटूट विश्वास था। वे कहते थे कि मैं बिना ईश्वर के एक क्षण भी नहीं रह सकता। उनका विचार था कि राम हर रोग की दवा है। आश्रम में नित्य प्रातः ईश्वर – प्रार्थना होती थी।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

जब गाँधी रो पड़े

एक बार गाँधी जी लम्बी यात्रा करके आश्रम में विलम्ब से आये। लम्बी यात्रा मे वे थक गये थे, थकान के कारण वे विश्राम करने लगे और विश्रामावस्था में उन्हें नींद आ गयी, आश्रमवासियों ने उन्हें जगाया नहीं। उनकी रात्रि में जब नींद टूटी तो वे रोने लगे, आश्रमवासियों से कहा कि तुम लोगों ने मुझे जगाया क्यों नहीं? मुझको कोई अधिकार नहीं है कि मैं बिना ईश्वर प्रार्थना के सो जाऊँ। उसके बाद गाँधी जी ने दृढ निश्चय कर लिया कि संध्या काल में सात बजे प्रार्थना अवश्य होगी। उन्होंने इस नियम को जीवनान्त निभाया। आश्रम में अहिंसा, देशभक्ति, नम्रता, कष्टशीलता एवं त्याग की भावना को भी पूरी तरह से निभाया जाता था।[१]

गुजरात - विद्यापीठ

गाँधी जी ने असहयोगात्मक कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार - प्रसार पर भी खासा बल दिया था। इसी दृष्टि से आश्रम के सामने गाँधी जी ने विद्यापीठ की स्थापना की थी, जिसमें राष्ट्र के युवाओं को राष्ट्रीय संस्कारों से आत-प्रोत राष्ट्रीय शिक्षा दी जाती थी।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

दीनबन्धु एन्ड्रयूज गाँधी जी विद्यापीठ में अपनी सेवायें उपलब्ध कराते थे। वहाँ पर बुन्देलखण्ड के प्रतिनिधियों ने दीनबन्धु के भी दर्शन किये। उनसे दीन-दुखियों की सेवा का आदर्श ग्रहण किया।

इस तरह महोबा के शंकर लाल जैन, पं० बैजनाथ तिवारी एवं बैजनाथ शास्त्री ने अहमदाबाद अधिवेशन में अपनी समर्पित सहभागिता अंकित करायी। वहाँ से राष्ट्र सेवा का पाठ सीख कर उसे महोबबी धरती में साकार करने में कोई कोर-कसर नहीं छोंड़ी, चूँकि महोबा जनपद पहले हमीरपुर में ही शामिल था, जहाँ दीवान शत्रुघ्न सिंह और श्रीपति सहाय रावत जैसे प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी अहमदाबाद अधिवेशन गये थे। इन बुन्देल - सूरमाओं की अपनी एक अलग पहचान थी। फलतः महोबा, हमीरपुर की अधिवेशनात्मक अगुवाई कमजोर नहीं हुई।

कानपुर कांग्रेस - अधिवेशन और महोबा

गंगा के किनारे जिसे आजकल गाँधी नगर के नाम से जाना जाता है, १९२५ में कानपुर में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। राष्ट्रीय समाचार पत्र 'प्रताप' के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी का कानपुर में सभी वर्गों में विशेष प्रभाव था, उन्हीं के कारण कानपुर में कांग्रेस - अधिवेशन का आयोजन हुआ था। विद्यार्थी जी गाँधी जी के प्रिय तथा नेहरू के घनिष्ठ साथी थे।[१]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ५४।

कानपुर कांग्रेस - अधिवेशन में हमीरपुर (महोबा सहित) के कई स्थानों से सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल हुए थे। मगरौठ, जराखर, राठ, कुलपहाड़, अजनर, महोबा, मौदहा, हमीरपुर से सैकड़ों की संख्या में स्वातन्त्र्य सेनानी अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे। कानपुर का अधिवेशन भी महत्वपूर्ण था। इस अधिवेशन से महोबा के प्रतिनिधि पुरोधत्व की प्रेरणा लेकर लेकर वापस आये थे, साथ ही उन्होंने राष्ट्र सेवियों से देश सेवा की जो शिक्षा पायी थी, उसे आन्दोलन में पूरी तरह उतारा। इस अधिवेशन में गाँधी जी का बहुत ही प्रभावी भाषण हुआ, उससे जनता में नवचेतना का अद्भुद संचार हुआ।[१]

१९२५ में ही काकोरी काण्ड घटित हुआ, जिसमें चन्द्रशेखर आजाद सहित अनेक स्वनामधन्य क्रांतिवीर शामिल हुए थे। दीवान साहब का इन क्रांतिवीरों से अच्छा सम्बन्ध था। कई क्रांतिकारी मगरौठ आते थे, वहाँ पर महीनों रुकते थे।[१]

कांग्रेस का लाहौर - अधिवेशन और महोबा

अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को कोरे आश्वासनों की खुराक पिलायी जा रही थी, जिसके कारण भारतीय भी यह समझ रहे थे कि गोरे भरतीयों को मूर्ख बना रहे हैं। कांग्रेस के हर अधिवेशन में आन्दोलन की आह्वान नीति निर्धारित होती थी और उसी के अनुसार आन्दोलन का अग्रसारण होता था।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

१६२१ में लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ। ३१ दिसम्बर १६२६ को रावी के तट पर पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित हुआ। २६ जनवरी १६३० को सारे देश में पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा दोहरायी गयी। इस अधिवेशन में सविनय अवज्ञा का प्रस्ताव भी पारित किया गया। इस अधिवेशन में हमीरपुर एवं महोबा की प्रतिभागिता महत्वपूर्ण रही। हमीरपुर से प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत तथा महोबा से कुलपहाड़ के सपूत भगवानदास बालेन्दु अरजरिया लाहौर - अधिवेशन में सरीक हुए।

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया : एक दृष्टि में

नैतिकता की दृष्टि से जिसको अनुचित जान।

राजनीति में भी उसे किंचित उचित न मान।।

'बालेन्दु'

महान देशभक्त भगवानदास बालेन्दु अरजरिया- वह शब्द चित्र रहे हैं, जिसमें साहित्यिक, सांग्रामिक एवं लोक सेवी स्वरूप को एक साथ निहारा जा सकता है। भगवानदास अरजरिया का जन्म २३ जुलाई १६०७ में कुलपहाड़ में हुआ था। ये बाल काल से ही माता - पिता की छाया से वंचित हो गये थे।[1]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया की पत्नी किशोरी देवी से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

निर्भीक बाल जीवन

अरजरिया परिवार स्वातन्त्र्य प्रेमी परिवार था, सन् सत्तावन के समरकाल में अरजरिया परिवार राष्ट्रीय धारा से जुड़ा था, आँग्ल धारा से नहीं। १८५७ के महान सपूत तात्याटोपे को झाँसी – गमन के समय में कुलपहाड़ के संक्षिप्त प्रवास में अरजरिया बन्धुओं ने चार हजार मुद्रायें भेंट कर देश के प्रति स्वधर्म का अनुपालन किया था, साथ ही अरजरिया परिवार मूलतः व्यापारिक परिवार था, वे कानपुर से व्यवसाय करते थे, जिन्हें मार्ग में लुटेरों से मुकाबला करना पड़ता था। अरजरिया में निडरता का अभाव नहीं था। वे साहस के धनी थे।

भगवानदास बालेन्दु को निष्ठा एवं निर्भीकता विरासत में मिली थी। उनके बाल जीवन की एक घटना उनकी निडरता की पुष्टि के लिए पर्याप्त है। कुलपहाड़ में राम लीला हो रही थी। थानेदार अगली पंक्ति में चौकीदार के माध्यम से बार-बार पान मंगाकर लीला में व्यवधान उत्पन्न कर रहा था। मूलचन्द्र स्वातन्त्र्य सेनानी ने चौकीदार को रोका कि महिलाओं के बीच से पान न लाओ, बाहर से जाओ। इस पर थानेदार ने मूलचन्द्र को गालियाँ दी, जो सभी उपस्थित जनों को नागवार गुजरा, किन्तु उसका प्रतिरोध किसी ने नहीं किया।

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झाँसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०सं०- ५५।

बालेन्दु जी से यह सब सहन न हुआ। उन्होंने थानेदार के उस व्यवहार का प्रभावी विरोध किया, जिसे 'प्रताप' जैसे प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्र के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी ने प्रमुखता से छापा। यह समाचार त्वरा के साथ सभी जगह फैल गया।

राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया दीवान शत्रुघ्न सिंह से प्रभावित होकर राष्ट्रीय राजनीति में उतरे। गाँधी जी को बालेन्दु जी अपना आदर्श मानते थे। कुलपहाड़ को राष्ट्रीय नेताओं के समागम का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया हर गाँधी – आन्दोलन में अगुवा रहे। १९३० के सत्याग्रह – आन्दोलन मे तो कुलपहाड़ का पुलिस – बहिष्कार आन्दोलन में कोई सानी ही नहीं रहा। भगवानदास बालेन्दु अरजरिया ने जब से राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में अपने कदम रखे, तदुपरान्त उन्होंने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। बालेन्दु जी गाँधी जी के खादी – प्रेम से बहुत प्रभावित थे। अरजरिया जी ने खादी पर एक कविता लिखी, जिससे गाँधी जी इतने प्रभावित हए कि उन्होंने उसे खादी के इतिहास में छपवाया।[१]

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झाँसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०सं०- ५६।

बालेन्दु जी की खादी - कविता का एक वन्द दृष्टव्य है- खादी तुम्हें कहैं खादी या इस जाग्रति की जान कहें, अंधों की लकड़ी या फिर विधवाओं का अरमान कहें। सच्चाई, नम्रता, सरलता सदाचार-सोपान कहें या दरिद्र - नारायण के पूजन का शुभ सामान कहें।

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया ने लाहौर - अधिवेशन में भाग लिया था। उस अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया गया था। उसके बाद उस रात्रि में हाथी में स्वतन्त्र भारत माता का एक चित्र रखकर घुमाया गया। इस अधिवेशन में सीमान्त गाँधी अब्दुल गफ्फार खाँ ने अपना सरहदी नाम नाच दिखाया, साथ ही नेहरू जी भी खूब नाचे। इस अधिवेशन में सुभाषचन्द्र बोस तथा गाँधी जी में हिंसा - अहिंसा के बीच मतभेद थे।

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया तो गांधीवादी थे। उन्होंने गाँधी जी का समर्थन किया। गाँधी जी का बोस जी के विरोध के बावजूद अहिंसक प्रस्ताव भारी बहुमत से पारित हो गया। इस तरह यदि देखा जाय तो बालेन्दु जी ने इस अधिवेशन से और भी ऊर्जा तथा आदर्श प्राप्त कर आन्दोलन को धार देने में कभी पीछे नहीं रहे।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया की पत्नी किशोरी देवी अरजरिया से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना १८८५ में हुई थी। कांग्रेस की स्थापना के बाद भारतीय आजादी के संघर्ष को एक बैनर मिल गया था, जिसके तले देश के अनेक तरस्वियों ने जुझारू संघर्ष किये। कांग्रेस प्रतिवर्ष देश के किसी न किसी महानगर या कहीं भी कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन आयोजित करती थी, अधिवेशन एक तरह से पुरोधाओं का पंचांग होता था। इसलिए देश भर से नेता तथा अन्य कार्यकर्ता एवं सेनानी अधिवेशन में अवश्य ही शामिल होते थे, ताकि उन्हें वहाँ से कार्यों का कलेण्डर प्राप्त हो जाय।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में वैसे बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) का सदैव प्रतिनिधत्व होता था अधिवेशन में हर जनपद से प्रतिनिधि पहुँचते थे। जहाँ तक महोबा की अधिवेशन में प्रतिभागिता का प्रश्न है तो इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन इस तथ्य के पुष्टि करता है कि हर कांग्रेस अधिवेशन में महोबा का प्रतिनिधित्व रहा है, जहाँ से दिशा – निर्देश लेकर स्वातन्त्र्य सेनानियों ने हर आन्दोलन में और जोर-शोर से प्रतिभाग किया है।

महोबा के शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, पं० बैजनाथ तिवारी एवं भगवानदास बालेन्दु अरजरिया जैसे अनेक स्वातन्त्र्य वीर हुए हैं, जिन्होंने अधिवेशन को राष्ट्रीय आरेख में शामिल किया है।

चतुर्थ अध्याय

जनपद के प्रमुख राजनैतिक सम्मेलन और महोबा

४

जनपद के प्रमुख राजनैतिक सम्मेलन और महोबा

देश में गाँधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन के आह्वान का आरेख आमुख के रूप में अधिष्ठित होने लगा था। उस विकासशील स्वर्ण ग्राफ को समय – समय पर देश के विभिन्न प्रान्तों में होने वाले जनपदीय राजनैतिक सम्मेलनों से सुहागा मिल गया। इस क्रम में हमीरपुर, महोबा जनपद पीछे नहीं रहे, यहाँ पर कई राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुए, जिनसे आन्दोलन की गतिशीलता को नया आयाम मिला।[१]

बुन्देखलखण्ड के अन्य जनपदों एवं महोबा तथा हमीरपुर में कई राजनैतिक सम्मेलन हुए, जिनमें हमीरपुर तथा महोबा के अनेक स्वातन्त्र्य सेनानी शामिल हुए। प्रस्तुत अध्याय में उन्हीं राजनैतिक सम्मेलनों का उल्लेख किया गया है, महोबा पहले हमीरपुर जनपद में ही था, इस कारण गहरौली तथा जराखर के राजनैतिक सम्मेलनों का विवेचन करना भी प्रासंगिक होगा। १६२१ में झाँसी में आयोजित बुन्देलखण्ड के पहले राजनैतिक सम्मेलन में महोबा के कई प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ५८।

२. श्याम सुन्दर बादल (संपादक), दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रंथ, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ४६।

झाँसी का १९२१ का राजनैतिक सम्मेलन और महोबा

१९२१ में कृष्ण गोपाल शर्मा ने झाँसी की सरस्वती पाठशाला में राजनैतिक सम्मेलन आयोजित किया, उस समय हमीरपुर के प्रमुख स्वातन्त्र्य चेता दीवान शत्रुघ्न सिंह आगरा जेल में बन्द थे। फलतः बुन्देल - सिंहनी रानी राजेन्द्र कुमारी ने हमीरपुर के दल का नेतृत्व किया, जिसमें महोबा के सेनानी भी सरीक हुए। हरकरण नाथ सिंह सम्मेलन के अध्यक्ष थे। सरोजनी नायडू तथा स्वामी सत्यदेव जी की गरिमामयी उपस्थिति उल्लेखनीय रही, स्वामी सत्यदेव जी की शिक्षा अमरीका में हुई थी, साथ ही उनका जर्मनी में बहुत दिनों तक प्रवास रहा, उनका सम्मेलन में अभिभाषण गोरों के लिए बम जैसा था। उन्होंने गोरों की तीखी आलोचना करते हुए उनके दमन ओर अत्याचार को जनता के सामने बेबाक ढंग से रखा। उनका भाषण इतना तल्ख होता था कि वह युवाओं को ऊर्जित कर देता था।

सरोजनी नायडू का खिलाफत पर भाषण मुसलमानों के अन्तर्मन को छू गया, वे ऊर्जावान हो गये। इस सम्मेलन में बुन्देलखण्ड के सभी जिलों से पर्याप्त संख्या में स्वयं सेवी पहुँचे थे। इस सम्मेलन का लक्ष्य स्वाधीनता प्राप्ति था।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

सम्मेलन में रानी राजेन्द्र कुमारी का भाषण भी बड़ा महत्वपूर्ण एवं प्रभावी रहा। स्वाधीनता प्राप्ति की प्रतिज्ञा से आबद्ध होकर हर जनपद के सेनानी अपने जिलों को लौट आये। झाँसी सम्मेलन पूरी तरह सफल रहा। इस राजनैतिक सम्मेलन में महोबा के पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, लक्ष्मण राव, रज्ज़ब अली आजाद और मूलचन्द्र दर्जी की सहभागिता महत्वपूर्ण रही।

झाँसी राजनैतिक सम्मेलन से ऊर्जित होकर महोबा के प्रतिनिधि लौटे और स्वाधीनता प्राप्ति की दिशा में सक्रिय हो गये। महोबा के बैजनाथ तिवारी तथा रज्ज़ब अली आजाद ने आजादी के संघर्ष की भावी रणनीति में जुट गये। महोबा पहले हमीरपुर जनपद का हिस्सा था, इस कारण हमीरपुर के गहरौली तथा जराखर राजनैतिक सम्मेलन में महोबा की प्रभावी प्रतिभागिता रही, जिसका यहाँ संक्षिप्त उल्लेख करना समीचीन होगा।[१]

गहरौली का राजनैतिक सम्मेलन

मन्नीलाल गुरुदेव, नवल किशोर गुरुदेव, चेतराम नम्बरदार एवं ठा० कामता सिंह इत्यादि की लगन एवं परिश्रम के फलस्वरूप १६३७ में गहरौली में जिला राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसका अच्छे सम्मेलनों में शुमार

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी मन्नीलाल गुरुदेव के पुत्र शरद चन्द्र गुरुदेव से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

हुआ। गहरौली के राजनैतिक सम्मेलन में तत्कालीन प्रभावशाली राष्ट्रवीर पं० जवाहर लाल नेहरू पधारे थे।

जब नेहरू आक्रोशित हो उठे

नहेरू जी को महोबा से कार द्वारा गहरौली पहुँचना था। वे कार द्वारा महोबा से जब चरखारी पहुँचे तो उन्हें राजा अरिमर्दन सिंह के प्रहरियों ने ड्योढ़ी दरवाजा में अवस्थित महल के पास रोक लिया। नेहरू जी की कार में राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा लगा था। नेहरू जी के साथ मन्नीलाल गुरुदेव, कुँवर हर प्रसाद सिंह, महोबा के पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन तथा चुन्नी लाल जैन इत्यादि थे। सिपाहियों ने गाड़ी रुकवा कर कहा कि हमारे नरेश की आज्ञा है कि चरखारी राज्य से राष्ट्रीय तिरंगा लगा कोई वाहन नहीं निकलेगा। चरखारी राज्य के सुरक्षा प्रहरियों के इतना कहने पर पं० नेहरू के क्रोध का ठिकाना न रहा, वे मोटर कार से उतर पड़े, वे सुरक्षा कर्मियों से बोले, कहाँ है तुम्हारा राजा, उसे बुलाओ, मेरा झण्डा मेरे सिर के उतरने के साथ ही उतरेगा। चरखारी रियासत के सुरक्षा प्रहरी कितने शिक्षित थे, वे पं० जवाहर लाल नेहरू को भी नहीं जानते थे। चारण - चेतना के वाहक सिपाहियों ने जब नेहरू का रौद्र रूप देखा तो हाथ जोड़कर मार्ग छोंडकर एक तरफ खड़े हो गये।[१]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ५८।

मन्नीलाल गुरुदेव तथा पं० बैजनाथ तिवारी नेहरू जी के साथ थे। उन्होंने सिपाहियों की पिटाई कर दी। सिपाहियों ने हाथ जोड़कर उनसे क्षमा याचना की। पं० नेहरू अपने साथियों के साथ कार में बैठकर गहरौली के लिए प्रस्थान किया। सुरक्षा कर्मियों की इस हरकत पर अनेक चरखारी निवासियों ने भी नाराजगी व्यक्त की। पता करने पर ज्ञात हुआ कि इस सम्बन्ध में राजा की कोई आज्ञा नहीं थी।[१]

गहरौली में नेहरू जी को हाथों-हाथ लिया गया

पं० नेहरू जब गहरौली पहुँचे तो उनके सम्मान में वहाँ के नागरिकों ने कोई कोर-कसर नहीं छोंड़ी, उन्हें सिर-माथे पर बैठाया। उनका गहरौली के हर घर में अभूतपूर्व स्वागत हुआ। गहरौली सम्मेलन जनपद का बहुत बड़ा सम्मेलन था। इसमें लगभग ८० हजार की भीड़ थी। नेहरू जी गहरौली के आतिथ्य को प्राप्त कर भाव-विभोर हो उठे। गहरौली का सम्मेलन जराखन - सम्मेलन को छोंड़कर जनपद का सबसे बड़ा राजनैतिक सम्मेलन था। इस सम्मेलन में जराखर के लाठी व्यायामशाला के सदस्यों ने लाठी का कलात्मक ढंग से बेहतरीन प्रदर्शन किया था, जो उपस्थित लोगों को बहुत भाया था।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

पं० जवाहर लाल नेहरू के उद्बोधन ने सम्पूर्ण जनता को बांधके रखा था, सभी श्रोताओं के मुँह से वाहवाही की आवाज निकल रही थी। उनका भाषण बहुत सराहा गया। गहरौली के राजनैतिक सम्मेलन में पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन तथा चुन्नीलाल जैन ने प्रभावी योगदान प्रदान किया। यह सम्मेलन पूरी तरह सफल रहा।

जराखर का राजनैतिक सम्मेलन

बुन्देलखण्ड के जनपदों में संघर्षी काल में कई राजनैतिक सम्मेलन हुए किन्तु उनमें हमीरपुर (महोबा शामिल था) के जराखर राजनैतिक सम्मेलन का एक अलग महत्व रहा। प्रस्तुत अध्याय में तो केवल महोबा के राजनैतिक सम्मेलनों का जिक्र किया गया है किन्तु हमीरपुर जनपद के जराखर राजनैतिक सम्मेलन के विवेचन के बिना महोबा के राजनैतिक सम्मेलनों का अध्ययन अपूर्ण रहेगा, इसलिए यहाँ पर जराखर कान्फ्रेस का उल्लेख करना समीचीन होगा।

हमीरपुर की जिला कांग्रेस कमेटी की स्वीकृति के उपरान्त जराखर में राजनैतिक सम्मेलन करने का निर्णय हुआ। १६३८ में यह कान्फ्रेस हुई। इस आयोजन के मूल में प्रचार-प्रसार प्रभावी रहा था, इस कारण पूरे बुन्देलखण्ड से इस सम्मेलन में सहभागिता सराहनीय रही।[१]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६०।

बहु आयामी सहयोग

जराखर की कान्फ्रेस में सभी ओर से चहुतरफा सहयोग मिला, वे चाहे जनपदीय नेता रहे हों या आम कार्यकर्ता, रियासतें रहीं हो या फिर जाने-माने राष्ट्र धर्मी प्रान्तीय और राष्ट्रीय नेता। सभी तरफ से आयोजन के साफल्य में सहयोग सराहनीय रहा। स्वामी ब्रह्मानन्द उस समय जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे, इनका सम्मेलन को सफल बनाने में निर्णायक सहयोग रहा। स्वामी जी ने रात - दिन दौरा कर इस कान्फ्रेस के प्रति जनता को अवगत कराया था। रामगोपाल जी ने भी कान्फ्रेस की सफलता के लिए दिन-रात परिश्रम किया था। दीवान शत्रुघ्न सिंह को तो कहना ही क्या था, वे तो इस आयोजन के सर्वे सर्वा थे। उनका संरक्षण तथा सहयोग दोनो महत्वपूर्ण थे।

प्रभावी प्रबन्धन

सम्मेलन का प्रबन्धन अनोखा था। इस कान्फ्रेस में नेताओं के आवागमन के लिए दिवान उदित नाराण सिंह ने दो जहाजों का प्रबन्ध कराया था। इसके लिए परिसर, बैठक, जल, सुरक्षा तथा साज - सज्जा का प्रबन्धन देखते ही बनता था। श्रीपति सहाय रावत ने भी कान्फेस के प्रबन्धन में गजब का सहयोग प्रदान किया था।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

महोबा के स्वातन्त्र्य सेनानियों में पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, मोतीलाल, बैजनाथ सक्सेना तथा महिला सेनानियों में भुवनेश्वरी देवी, किशोरी देवी तथा सरजू देवी पटेरिया ने सम्मेलन में शानदार भूमिका निभायी। आयोजन को सफलता का सोपान प्रदान करने में इन महिला नेत्रियों ने कोई कोर कसर नहीं छोंड़ी। इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

गोविन्द वल्लभ पन्त

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में संयुक्त प्रान्त (उ०प्र०) के मुख्यमंत्री गोविन्द वल्लभ पन्त की उपस्थिति ने चार - चाँद लगा दिये थे। पन्त उस समय के कद्दावर नेता थे। उनके व्यक्तित्व ने जनता को बहुत आकर्षित किया था। उनके भाषण से तो जनता मंत्रमुग्ध हो गयी थी। प्रमुख स्वातन्त्र्य सूरमा श्रीपति सहाय रावत की इन पंक्तियों से पन्त के प्रभाव तथा गाम्भीर्य को एक साथ आंका जा सकता है-[१]

गोविन्द वल्लभ पन्त मंत्री का भाषण गंभीर हुआ
सन्नाटा छा गया सभा में सुन करके मन धीर हुआ
दर्शनीय व्यक्तित्व पन्त का यू०पी० में रणधीर हुआ
अंग्रेजी हिन्दी में बोला किंचित नहीं अधीर हुआ

---

१. श्याम सुन्दर बादल (संपादक), दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रंथ, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ५७।

पं० नेहरू का आगमन

पं० जवाहर लाल नेहरू ८ फरवरी १९३८ में जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में पधारे। जराखर सम्मेलन में जन सैलाब उमड़ पड़ा था। कान्फ्रेस में तीन लाख की भीड़ थी। नेहरू के व्यक्तित्व से जराखरवासी बहुत प्रभावित थे, जिसे श्रीभाई की इन पंक्तियों से आंका जा सकता है–

नेहरू जी ने झण्डा फहराया लाखों दर्शक जुड़े यहाँ
ओजस्वी भाषण था ऐसा सुना नहीं था कभी यहाँ
पत्रकार ले रहे रिपोर्टें भेज रहे थे यहाँ – वहाँ

इस तरह से नेहरू जी ने सम्मेलन में अपनी अमिट छाप छोंड़ी।

१९२२ का राजनैतिक सम्मेलन और महोबा

जिला कांग्रेस कमेटी ने यह विचार बनाया कि पूरे जनपद में कांग्रेस के संगठन को मजबूत बनाया जाय। जिला कान्फ्रेस में प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी पुरुष को आमंत्रित किया जाय, कान्फ्रेस की अध्यक्षता के लिए कर्मवीर पं० सुन्दरलाल जी को आमंत्रित करने का निश्चय किया। उनके पास जब यह प्रस्ताव पहुँचा तो उन्होंन ने आमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी नाथूराम तिवारी के पुत्र वीरेन्द्र मोहन तिवारी से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

अजनर निवासी प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी हजारी लाल जी को कान्फ्रेस का स्वागताध्यक्ष बनाया गया। इस सम्मेलन में पूरे जनपद से सुशिक्षित एवं कर्मठ युवाओं को सहभाग करने के लिए बुलाया गया। महोबा के निरीक्षण भवन को आयोजन के लिए चयन किया। उस समय निरीक्षण भवन जिला परिषद (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) के अधीन था। उससे निरीक्षण भवन की अनुमति लेना आवश्यक था। इस सन्दर्भ में श्रीपति सहाय रावत ने भगीरथ प्रयत्न किया क्योंकि १६२२ में राठ - हमीरपुर मार्ग कच्चा था, बसों का संचालन नहीं था, पैदल यात्रा करके ही हमीरपुर पहुँचा जा सकता था। लगभग साठ मील की लम्बी यात्रा सुगम नहीं थी, श्री भाई ने ६० मील जंगली रास्ता को पैदल चलकर तय किया। बाबू शिवप्रसाद जिला परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष थे, जो एक अच्छे अधिवक्ता भी थे। उन्होंने श्री भाई को कान्फ्रेस के लिए निरीक्षण भवन के प्रयोग की अनुमति प्रदान कर दी। दीवान साहब भी उस समय हमीरपुर में विद्यमान थे। वे तथा श्री भाई दोनो ट्रेन द्वारा बाँदा होकर महोबा पहुँचे।

महोबा के राजनैतिक सम्मेलन मे हमीरपुर, मौदहा, महोबा, कुलपहाड़ तथा राठ नामक पाँचो तहसीलों से भारी संख्या में कार्यकर्ता तथा जनता पहुँची थी। कान्फ्रेस में पं० सुन्दर लाल की गरिमामयी उपस्थिति का कोई सानी नहीं था। [१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी पूरनलाल अग्रवाल से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

रेलवे स्टेशन से लेकर महोबा के आयोजन-स्थल तक अध्यक्ष के स्वागत हेतु कोई कोर-कसर नहीं रखी गयी थी, भव्य सजावट देखते ही बनती थी, ऐसा लगता था कि मानो जगह-जगह खड़े तोरण द्वार अध्यक्ष के स्नेहिल स्वागत में पलक पाँवड़े बिछाये हो और रंग - बिरंगे ध्वज मानो उनका यथोचित अभिवादन कर रहे हों।

सारे महोबा को एक नयी नवेली दुल्हन की तरह सजाया गया था, उस दिन वीर भूमि महोबा एक वात्सल्य धरा के रूप में परिवर्तित हो गयी थी। नगर की छटा अद्भुत एवं वर्णनातीत थी। पं० सुन्दर लाल जी के सम्मान में हर गली कूँचों की अट्टालिकाओ से पुष्प वर्षा हो रही थी। इस सम्मेलन में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की समवेत सहभागिता सराहनीय थी। रेलवे स्टेशन से लेकर डाक बंगले तक एक जुलूस का प्रबन्धन भी प्रशंसनीय था। जुलूस की समाप्ति के बाद सभी कार्यकर्ता पाण्डाल में पधारे, जहाँ पर स्वागताध्यक्ष हजारी लाल जी के नेतृत्व में अध्यक्ष जी एवं अन्य अतिथि आगन्तुकों का भावमीन स्वागत किया गया।

सम्मेलन में पं० सुन्दर लाल जी का बहुत ही मर्मस्पर्शी एवं ओजस्वी भाषण हुआ जो श्रोताओं एवं कार्यकर्ताओं के अन्तर्मन को छू गया। महोबा की राजनीतिक चेतना को नया आयाम मिला।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी बृजगोपाल सक्सेना के पुत्र बती बाबू से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

कर्मयोगी पं० सुन्दर लाल गाँधी जी के सच्चे अनुयायी थे। वे गाँधी जी की तरह लंगोटी पहनते तथा धड़ी बांधते थे। पं० सुन्दर लाल जी के उद्‌बोधन से जनपद की युवा पीढ़ी को नयी ऊर्जा तथा दिशा मिली। जनपद के अनेक शिक्षित युवाओं ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली। इसलिए कांग्रेस के संगठन को नव आलम्ब मिला।[१]

महोबा के १६२२ के राजनैतिक सम्मेलन में वैसे तो सम्पूर्ण जनपद के सेनानियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी किन्तु महोबा के कुछ स्वातन्त्र्य सेनानियों की इस दृष्टि से भागेदारी कहीं अधिक उल्लेखनीय रही। महोबा के जिन राष्ट्रधर्मी सेनानियों ने अगुवाकरों की भूमिका के रूप में पहचाने गये थे, उनमें पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, पं० बाला प्रसाद शुक्ला और मोहम्मद बख्श को नहीं भुलाया जा सकता, जिनके सहयोग ने सम्मेलन को सफलता के नये सोपान प्रदान किये। सम्मेलन की समाप्ति के बाद पूरे जनपद का राजनीतिक चेतना का ग्राफ बहुत ऊपर पहुँच गया।[१]

निष्कर्ष

आजादी के संघर्ष काल में राष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह से कांग्रेस के अधिवेशन सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए भावी आन्दोलन के स्वरूप हेतु कलेण्डर घोषित करते थे।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

उसी तरह से जिले स्तर पर आयोजित जिला राजनैतिक आन्दोलनों के आयोजन का भी उद्देश्य यही रहता था कि कार्यकर्ताओं के लिए जिले स्तर पर दिशा - निर्देश जारी हो जायें और उन्हीं के अनुसार स्वातन्त्र्य आन्दोलन का अनुगमन अनुमन्य हो।

महोबा चूँकि पहले हमीरपुर जनपद का एक भाग था। इस कारण हमीरपुर के सहभाग में महोबा की प्रतिभागिता शामिल रहती थी। हमीरपुर जनपद के जराखर तथा गहरौली गाँव में आयोजित जिला राजनैतिक कान्फ्रेस से जिले के स्वातन्त्र्य संग्राम को नई दिशा मिली थी। इन सम्मेलनों में महोबा के बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन तथा भगवानदास बालेन्दु अरजरिया इत्यादि सहभागियों का शानदार अनुदाय रहा।

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि जिला राजनैतिक सम्मेलनों की संस्कृति महोबा में भी रही। झाँसी के १९२१ के राजनैतिक सम्मेलन में महोबा का प्रतिनिधित्व हुआ था।

इसके अतिरिक्त महोबा में १९२२ में भी राजनैतिक सम्मूलन हुआ था, जिसके आयोजन के मूल में महोबा के पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, भगवानदास बालेन्दु अरजरिया सहित कई स्वातन्त्र्य सेनानियों का सराहनीय सहयोग रहा।

पंचम अध्याय

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और महोबा

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और महोबा

गाँधीजी ने अफ्रीकी अवनि में १८६३ से १६१४ तक आँग्ल – अत्याचारों के अवरोहण का जो अन्वेषण किया था, उन्होंने उसका परीक्षण १६१७ से १६१८ तक देश के चम्पारण, अहमदाबाद एवं खेड़ा क्षेत्रों में किया, जिसके प्रभावी परिणाम प्राप्त हुए। गाँधी जी ने अपने प्रयोगों को असहयोग आन्दोलन का नाम दिया, जो उनका आन्दोलन के क्षेत्र में नूतन अस्त्र था। १६२० से १६२२ तक देश भर में असहयोग आन्दोलन के रूप में पहला अहिसंक संग्राम चला।

गाँधी आन्दोलन का दूसरा विशाल चरण सविनय अवज्ञाा के रूप में १६३० से प्रारम्भ हुआ, जो १६३४ तक चला। आँग्ल आश्वासनों की अनापूर्ति की अन्तर्भूमि से गाँधी–अवज्ञा के अवदान को आकार मिला। गोरी सरकार ने १६१६ के अधिनियम के पारित होने के बाद यह भरोसा दिलाया था कि एक दशक के बाद सुधारों की समीक्षा करेगी किन्तु अपने वायदे को पूरा करना तो दूर रहा, बदले में उसने नवम्बर १६२७ में सर जान साइमन की अध्यक्षता में सात सदस्यीय आयोग की नियुक्ति कर दी, इससे सारा देश स्तब्ध रह गया। यह आयोग एक भी भारतीय प्रतिनिधि के न होने के कारण प्रश्न चिन्ति हो गया।[१]

---

१. प्रभात कुमार, स्वतंत्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००, पृ०सं०– ५५।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने दिसम्बर १९२७ के मद्रास अधिवेशन में साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया। कांग्रेस के युवा वीरों ने आयोग को सभी स्थानों पर काले झण्डे दिखाने का प्रबन्ध किया। लार्ड बर्केनहेड ने भारतीय प्रतिभा को यह चुनौती दी थी कि भारतीय एक ऐसे संविधान को निर्मित कर ब्रिटिश संसद में पेश करें जो सर्वमान्य हो। भारतीयों ने इस चुनौती को अंगीकार कर मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति गठित कर तेजबहादुर संप्रू, अली इमाम, जी० आर० प्रधान तथा सुभाष चन्द्र बोस जैसे मेधावी सदस्यों की मदद से अहर्निश मेहनत कर तीन महीनों में रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी, जो नेहरू रिपोर्ट के नाम से विश्रुत हुई। नेहरू रिपोर्ट में कहा गया कि यदि ३१ दिसम्बर १९२८ तक गोरी सरकार ने यह प्रतिवेदन स्वीकार नहीं किया तो कांग्रेस पुनः अहिंसक आन्दोलन प्रारम्भ करेगी।

विश्व की १९२९-३० की आर्थिक मंदी ने भी भारतीय राजनीति को किसी न किसी तरह प्रभावित किया, बहुत सी मण्डियों में वस्तुओं के भाव गिरने से बहुत से श्रमिक बेकार हो गये। इससे गोरों के प्रति श्रमिक असन्तोष का ग्राफ काफी बढ़ गया। १९२८ व १९२९ में कई युवा संगठन अस्तित्व में आ गये थे, ये युवा दलों में आजादी के लिए संघर्षी सहभागिता का उत्साह प्रगट होने लगा था।[1]

---

१. प्रभात कुमार, स्वतंत्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ५६, ५८।

उधर १९२९ के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की माँग उठ गयी थी। जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में यह उद्घोष गूँज उठा था कि हमारा लक्ष्य है पूर्ण स्वतन्त्रता। कांग्रेस को अधिकृत किया गया था कि वह सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रतिबन्धों के साथ प्रारम्भ कर सकती है। सारे देश में २६ जनवरी १९३० को प्रथम स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया गया।

सारे देश का परिवेश परतंत्रता पटाक्षेप के प्रति पुरोधत्व निभाने के लिए नैष्ठिक प्रतीत हो रहा था, जिसके लिए देश में हिंसक – अहिंसक दोनो प्रकार का आह्वान हो सकता था। गाँधी जी ने देश की नब्ज को टटोल कर उसे अवज्ञा औषधि प्रदान की, जिसके प्रयोग से दासता-दाह का निदान मिला। कांग्रेस कार्य समिति ने गाँधी जी को सविनय अवज्ञा आंदोलन की अनुमति प्रदान कर दी, गाँधी जी ने जनता के सामने गोरी सरकार को एक दर्पण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए ग्यारह सूत्रीय कार्यक्रमों का प्रस्ताव रखा, जिसमें आँग्ल सरकार का नकारात्मक रुख स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ा। सरकार ने इन प्रस्तावों को नकारते हुए इन्हें अशांति एवं अराजक जन्य कहा।[1]

गोरी सरकार ने भारतीयों के साथ दमन चक्र प्रारम्भ किया, कई प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता तथा सुभाष चन्द्र बोस जैसे पुरोधा गिरफ्तार कर लिऐ गये। फरवरी १९३० में साबरमती में कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक हुई, जिसमें आन्दोलन का पुनः नेतृत्व गाँधी जी को सौंप दिया गया।

---

१. अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली मैकमिलन कम्पनी लिमि०, १९८७, पृ०सं०- ५७४।

गाँधी जी की दृष्टि में दमनकारी कानूनों में नमक कानून भी एक था, नमक का सम्बन्ध एक आम आदमी से था, सविनय अवज्ञा जैसा कार्यक्रम आम व्यक्ति की समझ में नहीं आ सकता, किन्तु नमक जैसी दैनिक उपभोग की वस्तु पर गोरी सरकार द्वारा कर लगाये जाने के विरोध पर जन साधारण का समर्थन सहज रूप में मिल जायेगा, इस लिए गाँव - गाँव पैदल चलकर समुद्र तट पर पहुँच कर खुले रूप में नमक कानून तोड़ने का गाँधी जी ने निश्चय किया।

गाँधी जी का जन साधारण से जुड़ने एवं समर्थन प्राप्त करने का यह एक सुन्दर उपाय था, इससे उनके राजनीतिक चिन्तन की सोंच को समझा जा सकता है। गाँधी जी ने ०२ मार्च १६३० को पुनः वायसराय को पत्र लिखा और अपनी ग्यारह सूत्री माँगों के प्रस्ताव को पुनः दोहराया, तत्पश्चात् उन्होंने पत्र में इस बात का भी उल्लेख किया कि यदि सरकार माँगों को पूरा करने का कोई प्रयत्न नहीं करती तो १२ मार्च १६३० से नमक कानून का उल्लंघन कर सविनय अवज्ञा शुरू करेंगे।[१]

सविनय अवज्ञा के प्रमुख कार्यक्रम

गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा के अन्तर्गत अधोलिखित प्रमुख कार्यक्रमों को निर्धारित कर उनके कार्यान्वयन की जनता से अपील की-

---

१. डॉ० प्रभाकर माचवे, नमक आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभार्ग, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ०१, ०४।

१. लोग गाँव-गाँव जाकर नमक बनायें तथा नमक कानून को तोड़ें।

२. महिलायें शराब, अफीम तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना-प्रदर्शन करें।

३. शिक्षार्थी शिक्षण संस्थानों को छोंड़ दें।

४. सरकारी कर्मचारी सेवाओं को छोंड़ दें।

५. विदेशी वस्त्रों की होली जलायें।

६. लोग सरकारी करों को न दें।

७. जनता तकली और चरखा चलाकर सूत बनाये।[१]

आन्दोलन का आरेख

गाँधी जी ने गवर्नर जनरल को जो पत्र लिखा था, उसके उत्तर पर गाँधी जी की प्रतिक्रिया थी कि मैंने माँगी थी रोटी और मिला पत्थर। गाँधी जी ने १२ मार्च १९३० को अपनी ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा प्रारम्भ की, वे ०५ अप्रैल १९३० को दाण्डी पहुँचे। ०६ अप्रैल १९३० को गाँधी जी ने समुद्र तट पर पहुँच कर नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया। चुटकी भर नमक के रूप में चेतना - चिंगारी कालान्तर में आन्दोलन की ज्वाला बन गयी। सारे देश में नमक सत्याग्रह का सैलाब आ गया। ऐसे में एक वीर प्रसवा वसुन्धरा भला कैसे शान्त रहती?[२]

---

१. डॉ० प्रभाकर माचवे, नमक आन्दोलन, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ११

२. वही, पृ०सं०- ४२।

बुन्देलखण्ड के सभी जनपदो ने नमक आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हमीरपुर, महोबा जनपद इस दृष्टि से बहुत पीछे नहीं रहे। गाँधी जी ने ०६ अप्रैल से १३ अप्रैल १६३० तक पूरे देश में राष्ट्रीय सप्ताह घोषित किया, उन्होंने कहा कि इस सप्ताह में देश भर में राष्ट्रीय सप्ताह घोषित किया, उन्होंने कहा कि इस सप्ताह में देश भर में नमक बनाया तथा नमक कानून भंग किया जाय।[1]

गाँधी जी के द्वारा देश भर में सत्याग्रह आह्वान का अनुकूल असर पड़ा, महोबा इस सत्याग्रह में कूद पड़ा। दोनो जनपदों की जीवट नेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी तथा दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीभाई, रामगोपाल गुप्त, बैजनाथ तिवारी सहित अनेकों राष्ट्रधर्मी नेताओं ने प्रभावी नेतृत्व प्रदान किया।

उस समय महिलाओं की सांग्रामिक सहभागिता पुरुष सेनानियों से किसी भी रूप में कम नहीं थी। उस समय नमक सत्याग्रह काल में महिलायें यह राष्ट्रधर्मी रचना पढ़कर जन चेतना जगाती थीं-

जो कुछ पड़ेगी मुझपे मुसीबत उठाऊँगी,
खिदमत करूँगी मुल्क की और जेल जाऊँगी।
बानो में अपने खद्दर के कपड़े बनाऊँगी,

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

ओर इन विदेशी लत्तों में माचिस लगाऊँगी।

चरखा चला के छीनूँगी उनकी मशीन गन,

उदूए मुल्कों कौम को नीचा दिखाऊँगी।

मैं अपनी मुल्की बहनों को ले ले कर अपने साथ,

शराब की दुकान पर धरना बिठाऊँगी,

जाकर किसी जेल में बाटूँगी राम बास,

अपनी सहेली के साथ में चक्की चलाऊँगी।

जनपद की वीर महिलाओं के लिए यह अग्नि धर्मा गीत मंत्र गीत बन गया था। हमीरपुर एवं महोबा जनपद के सत्याग्रहियों के लिए राठ सत्याग्रह का केन्द्र बन गया था। जिला कांग्रेस कमेटी ने दीवान शत्रुघ्न सिंह को नमक सत्याग्रह के नेतृत्व का अधिकार प्रदान किया। सत्याग्रह का पहला जत्था महोबा के महान स्वातन्त्र्य वीर पं० बैजनाथ तिवारी के निर्देशन में नमक कानून तोड़ने के लिए राठ रवाना हुआ। इस जत्थे में ५० स्वयं सेवी थे। यह जत्था महोबा से पद यात्रा करता हुआ महोबा-राठ मार्ग के बीच पड़ने वाले जिन - जिन गाँवों से गुजरा, वहाँ के निवासियों ने इनका भावभीना स्वागत किया। इस जत्था का पचपहरा, लाडपुर, कुलपहाड़, सुगिरा, सैदपुर तथा पनवाड़ी के निवासियों ने स्नेहिल सत्कार किया।[१]

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ७४।

सभी जत्थे राष्ट्रधर्मी गीतों को गाते हुए राठ पहुँचने लगे, राठ में भारी संख्या में सत्याग्रही एकत्रित हो गये। सत्याग्रहियों की भोजनादि व्यवस्था में राठ तथा गाँवों की जनता ने भरपूर मदद की। पूरे हमीरपुर, महोबा जनपदों में सत्याग्रह के प्रति उत्साह देखते ही बनता था। गोरी सरकार ग्राफ को देखकर बौखला गयी, तिरंगा झण्डाधारी सत्याग्रहियों के प्रति आँग्ल दमन प्रारम्भ हो गया। पुलिस प्रताड़ना से सत्याग्रही रक्त रंजित होने लगे। उन्हें जेलों में ठूसने लगे, उन्हें सजायें भी देने लगे किन्तु जनोत्साह का ज्वार भांटे में नहीं बदला।

कुलपहाड़ का 1930 का ऐतिहासिक सत्याग्रह आन्दोलन

गाँधी जी के सत्याग्रह में महोबा का प्रतिभाग तो पुरजोर था किन्तु महोबा जनपद की तहसील कुलपहाड़ का सत्याग्रह आन्दोलन में १६३० के ऐतिहासिक अगुवाई का कोई सानी नहीं था।[1] कुलपहाड़ में सत्याग्रह आन्दोलन अनोखा एवं अभूतपूर्व था। गाँधी जी के नमक - सत्याग्रह में सारे देश ने बढ़-चढ कर हिस्सा लिया, उनके द्वारा घोषित राष्ट्रीय सप्ताह में महोबा भी बहुत आगे रहा। कुलपहाड़ तथा उसके आस-पास के स्वातन्त्र्य सेनानियों ने नमक बनाया तथा नमक-कानून को तोड़ा भी किन्तु उनकी गिरफ्तारी नहीं हुई।

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक), अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १६५।

कुलपहाड़ के महान सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया का इस दृष्टि से सहयोग बहुत महत्वपूर्ण रहा। बालेन्दु जी ने जन चेतना के प्रसार की दृष्टि से समानान्तर सरकार बनाने का निश्चय किया, उन्होंने सांगठनिक कार्य प्रारंभ किया। कई संगठन बना डाले, इन संगठनों के बैनर तले आपसी विवादों का समाधान, लगान बन्दी, शराब बन्दी तथा खादी-प्रचार का कार्य होता था। ७ मई १९३० को गोरी सरकार ने गाँधी जी को नमक कानून भंग करते हुए गिरफ्तार कर लिया, जिससे सारे देश में आक्रोश फूट पड़ा, इससे कुलपहाड़ भी अछूता नहीं था। कुलपहाड़ में जबरदस्त हड़ताल हुई। अनेकों सुरक्षा कर्मियों ने आतंक के सहारे दुकाने खुलवानी चाहीं किंतु वे सफल न हो सके। व्यापारियों ने उन्हें कोई सामान नहीं दिया।

पुलिस का सामाजिक बहिष्कार

कुलपहाड़ में एक विशाल सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें यह निर्णय लिया गया कि गाँधी जी की गिरफ्तारी का पुरजोर विरोध हो, साथ ही गोरों के साथ पूरी तरह असहयोग किया जाय। देशी पुलिस वालों से भी असहयोग की अपील की गयी, साथ ही उनके द्वारा त्याग पत्र न देने पर उनके बहिष्कार का भी निर्णय लिया गया।[१]

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक), अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १९७।

आस - पड़ोस के गाँवों के मुखिया तथा नम्बरदारों ने त्याग पत्र दे दिया, जिला बोर्ड के कई शिक्षक त्याग पत्र देकर आन्दोलन में कूद पड़े। कुलपहाड़ के सभी जातियों के प्रमुखों ने पुलिस के सामाजिक बहिष्कार का फैसला लिया, सभी व्यापारियों ने पुलिस को सामान देना तथा नाई, कहार तथा धोबियो ने उन्हें अपनी सेवायें देना बंद कर दिया। पुलिस - अधिकारियों ने हर हथकण्डे को अपनाया किन्तु असफल रहे। जनता अपने निर्णय पर अटल रही।

१४ मई १९३० को भगवानदास बालेन्दु को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने अपने स्थान पर गौरहारी के स्वातन्त्र्य सेनानी राम दुलारे को अधिनायक घोषित कर दिया, पुलिस-बहिष्कार यथावत चलता रहा। पुलिस को दैनिक उपभोग की वस्तुएँ बाहर से मंगानी पड़ी। आठ दिनों के बाद रामदुलारे तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं को कैद कर लिया गया। इस पर रामदुलारे के स्थान पर रानी राजेन्द्र कुमारी को अधिनायक बनाया गया। कुलपहाड़ का बहिष्कार आन्दोलन बन्द नहीं हुआ। सत्याग्रहियों तथा व्यापारियों एवं अन्य लोगों के साथ गोरी सरकार खूब कहर बरफाया किन्तु सफल नहीं रही। पुलिस अत्याचार बढ़ता गया। सरकार का दमन जनता का नमन नहीं प्राप्त कर सका। सारे जनपद मे आक्रोश की लहर दौड़ गयी।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया की पत्नी किशोरी देवी अरजरिया से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

जनपद के दूसरे स्थानों से भी सहयोगियों के जत्थे कुलपहाड़ आने लगे। बहुत सारे लोगों को कैद कर लिया गया।

संवादहीनता का अस्त्र

पुलिस ने दमन के द्वारा व्यापारियों से ग्राहकों की जब संवादहीनता करवानी चाही तो दुकानदारों ने पुलिस के प्रति एक अनूठा प्रयोग किया। सभी व्यवसायियों ने पुलिस से बोलना बन्द कर दिया। उन्होंने अपने इस प्रयोग को वांणी बहिष्कार या संवादहीनता - आन्दोलन का नाम दिया, जो अपने आप में एक बेमिसाल योजना थी। कुलपहाड़ में एक माह तक पुलिस का अनवरत बहिष्कार किया गय, अनेकों सत्याग्रहियों को जेल में ठूँस दिया गया। आन्दोलनात्मक शिविर पहले आर्य समाज मन्दिर में चला, उसे बाद में भारती-भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया।[१]

कुलपहाड़ के इस ऐतिहासिक आन्दोलन में हमीरपुर, महोबा, झाँसी जनपदों के अतिरिक्त चरखारी, सरीला, जिगनी, छतरपुर तथा टीकमगढ़ क्षेत्र के स्वयं सेवियों ने पूरे मनोयोग से सहयोग प्रदान किया था।[२]

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक), अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १६८।

२. स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया की पत्नी किशोरी देवी अरजरिया से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

जिलाधीश की पहल

कुलपहाड़ के आन्दोलन को पुलिस जब नहीं रोकपायी तो हमीरपुर के जिलाधीश पी०वी भटकंकर ने पहल की। उन्होंने स्वराज्य दल के विधायक कुँ० हरप्रसाद सिंह को माध्यम बनाया। उनके द्वारा रानी राजेन्द्र कुमारी से बहिष्कार सत्याग्रह को खत्म करने की अपील की। उन्होंने बदले में पुलिस की तरफ से बल प्रयोग न किये जाने का आश्वासन दिया। इस पर रानी राजेन्द्र कुमारी ने जेल में बन्द भगवानदास बालेन्दु से आन्दोलन खत्म किये जाने के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति को भेजा। बालेन्दु जी से हरी झण्डी मिलने पर ही कुलपहाड़ का बहिष्कार आन्दोलन समाप्त हुआ। गाँधी जी के अन्य आन्दोलन बन्द नहीं हुए। रानी राजेन्द्र कुमारी ने शराब की दुकानों पर धरना-प्रदर्शन किया उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश रिकार्ड में आज भी कुलपहाड़ का बहिष्कार आन्दोलन अंकित है, बुन्देलखण्ड के लोग बहुत ही गर्व के साथ कुलपहाड़ - आन्दोलन को अधोलिखित रूप में याद करते हैं-

बहिष्कार को भऔ है, यहीं शांत संग्राम,
ब्रिटिश पुलिस में दर्ज है कुलहाड कौ नाम।[१]

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक), अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १६८।

सविनय अवज्ञा के प्रमुख सहभागी सेनानी

गाँधीजी का सविनय अवज्ञा आन्दोलन १६३० से १६३४ तक चला। इस आन्दोलन में महोबा जनपद के अनेकों स्वातन्त्र्य शूरों ने प्रतिभाग किया। महोबा जनपद से अग्रांकित रूप में सत्याग्रहियों ने आन्दोलन में सहभाग किया-

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया

वैसे तो महोबा जनपद वीर भूमि के रूप में विश्रुत है, यहाँ अनेकों ऐसे सूरमा हुए हैं, जिन्होंने स्वातन्त्र्य संघर्ष में अहम् भूमिका निभायी है, किन्तु बालेन्दु जी के उल्लेख के बिना महोबबी-वीरता अधूरी रहेगी।

बालेन्दु जी असि और मसि दोनो ही क्षेत्रों में अग्रणी थे। अरजरिया जी ने कई कृतियाँ लिखीं, जिनमें 'बाल उमंग', किरण, नवनीत और श्रद्धा के फूल उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं, बालेन्दु जी गाँधी जी से बहुत प्रभावित थे, वे राष्ट्रवादी रचनाधर्मी थे। इनकी खादी शीर्षक नामक कविता से गाँधी जी बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने खादी नामक कविता को राष्ट्रीय संग्रह में प्रकाशित कराया था-[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया की पत्नी किशोरी देवी अरजरिया से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

खादी! तुझे कहैं खादी या इस जाग्रति की जान कहें।

अन्धौं की लकड़ी या फिर विधवाओं का अरमान कहें।

सच्चाई, नम्रता, सरलता, सदाचार - सोपान कहें।

या दरिद्र नारायण के पूजन का शुभ सामान कहें।

मातृभूमि की लज्जाहित द्रोपदी - चीर उपमान कहें।

या लंदन के पूंजी-पतियों का वैभव अवसान कहें।

भूषण कहैं भारतीयों का या भारत की शान कहें।

मान चेस्टर मान दलन हित या फिर शक्ति महान कहें।

निर्धन जन का कहैं परम धन या स्वातन्त्र्य विधान कहें।

देश भक्ति के दिवानों की या तुझको पहचान कहें।

साम्यवाद की झलक कहैं या फिर शरीर अविधान कहें।

या बालेन्दु कर्मयोगी गाँधी का गीता ज्ञान कहें।

बालेन्दु जी का १६३० के कुलपहाड़ आन्दोलन में तो प्रभावी पुरोधत्व प्रशसनीय रहा ही, इसके अतिरिक्त १६३२ के गाँधी-इरविन समझौता भंग होने पर बालेन्दु जी ने फरारी हालात में जगह-जगह जाकर स्वातन्त्र्य संग्राम की रण भेरी बजाते रहे, जिस पर उन्हें गिरफ्तार किये जाने पर प्रशासन ने पाँच सौ रुपये का इनाम घोषित किया, किन्तु बालेन्दु कैद नहीं किये जा सके।[१]

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक), अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १२६।

बालेन्दु जी १६३३ के सविनय अवज्ञा-आन्दोलन, १६४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी आगे रहे, इन्हें कुल मिलाकर छः वर्ष की कठोर कारावास की सजा मिली। ये हमीरपुर, नैनी, फतेहपुर तथा फतेहगढ़ की जेलों में रहे। बालेन्दु जी को जेल में पन्त जी, बाल कृष्ण शर्मा नवीन दिवान साहब, लाल बहादुर शास्त्री जी तथा कर्मवीर पं० सुन्दरलाल जी का सानिध्य मिला।

बालेन्दु जी को जालसाजी एवं अनैतिकता से नफरत थी। बालेन्दु जी का राजनीति की कसौटी पर विचार था-

नैतिकता की दृष्टि से जिसको अनुचित जान।
राजनीति में भी उसे किंचित उचित न मान।।

देशके इस महान योद्धा की स्वातन्त्र्योत्तरकाल में देश के प्रति चिन्ता कम नहीं हुई। वे कई संस्थाओं तथा संगठनों से जुड़े रहे, बालेन्दु जी अपनी सेवा तथा समर्पण से कुलपहाड़ तथा क्षेत्र को लाभान्वित करते रहे। उनका योगदान इतिहास में सदैव पृष्ठांकित रहेगा।[१]

सविनय अवज्ञा और शंकर लाल जैन

गाँधी जी के १६३० के सत्याग्रह आन्दोलन में महोबा के प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य सेनानी शंकर लाल जैन का भी प्रतिभाग महत्वपूर्ण रहा। इन्होंने सविनय

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

अवज्ञा के अन्तर्गत निर्धारित कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। शंकर लाल जैन ने शराब बन्दी को लेकर शराब की गोदामों पर पं० बैजनाथ तिवारी के साथ धरना-प्रदर्शन किया। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने में भी आगे रहे। इतना ही नहीं जैन ने विदेशी वस्त्रों का व्यापार भी बंद कर दिया था। शंकर लाल जैन को धरना देने के कारण आँग्ल सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। इन्हें छः माह की जेल हुई। जैन हमीरपुर तथा फैजाबाद की जेलों में रहे।

शंकर लाल जैन गाँधी जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह में सहभागिता की दृष्टि से भी पीछे नहीं रहे। इन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। भारतीय रक्षा अधिनियम के अन्तर्गत जैन को डेढ़ वर्ष की कठोर जेल की सजा मिली। इसके अतिरिक्त इन्हें तीन सौ रुपयों का जुर्माना भी किया गया। इस तरह जैन का गाँधी आन्दोलनों में सराहनीय योगदान रहा।[१]

सविनय अवज्ञा और मुंशी मण्टी लाल

मण्टी लाल भी वीर भूमि के वीर सपूत थे। महाराज पारीक्षत का शौर्य एवं पराक्रम आज भी किसी परिचय का मोहताज नहीं है, यहीं की अग्निधर्मा धरा जैतपुर में मण्टी लाल का जन्म हुआ था, इनके पिता का नाम खरे लाल कायस्थ था। मण्टी लाल पूरी तरह गाँधीवादी थे।

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी शंकर लाल जैन के पुत्र प्रकाश चन्द्र जैन से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

गाँधी आन्दोलनों में जैतपुरी धरती के जिन - जिन वीर पुत्रों का योगदान रहा है, उनमें मण्टी लाल की अपनी एक अलग पहचान रही है। मण्टी लाल का १९०७ में सरस्वती देवी से विवाह हुआ, संयोग से मण्टी लाल की धर्म पत्नी सरस्वती देवी भी स्वातन्त्र्य धर्मी निकलीं। मण्टी लाल पहले पटवारी बने तत्पश्चात् अध्यापक हो गये। इसी कारण 'मुंशी' शब्द उनके साथ जुड़ा रहा और वे मुंशी मण्टी लाल के रूप में विश्रुत हो गये। मण्टी लाल जी का गाँधी जी के सभी आन्दोलनों में सक्रिय सहभाग रहा। वे गाँधी जी के १९२१ के असहयोग तथा १९३०-३४ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में प्रतिभागी बने।[१] उन्हें आदेश दिनांक २०.०४.१९३२ के तहत मुकदमा संख्या ३८१/३२, धारा 1 X D13 क्रिमिनल एक्ट के अन्तर्गत ०६ माह की जेल तथा बीस रुपयों का जुर्माना हुआ।[१] मुंशी मण्टी लाल जवाहर लाल नेहरू जी के साथ जेल में रहे। मण्टी लाल सरकारी सेवा छोंड़कर स्वातन्त्र्य संघर्ष पथ के पथिक बने थे। मुंशी मण्टी लाल स्वातन्त्र्योत्तर काल में भी राष्ट्रधर्मी बने रहे। ये २७ वर्षों तक जैतपुर के निर्विरोध प्रधान रहे। इन्हीं के प्रयास से जैतपुर में सरकारी अस्पताल, ब्लाक तथा राजकीय इण्टर कालेज स्थापित हुआ।[२]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी मुंशी मण्टी लाल के पुत्र परमेश्वरी दयाल सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

२. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल नं०- ०१ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

स्वातन्त्र्य संघर्ष और सरस्वती देवी

सरस्वती देवी मुंशी मण्टी लाल की पत्नी थीं। इनका महोबा लौंड़ी मार्ग मे बसे इटवा गाँव में रघुनाथ प्रसाद कायस्थ के घर १८८६ में जन्म हुआ था। इन्होंने इटवा में ही प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की थी। उसके बाद सरस्वती देवी का मण्टी लाल से १६०७ में विवाह हो गया। सरस्वती देवी को अपने पति मण्टी लाल, विश्रुत नेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी, किशोरी देवी अरजरिया एवं अन्य महिला सेनानियों के संघर्षी सानिध्य ने स्वातन्त्र्य धर्मी बना दिया और ये आजादी के संघर्ष में कूद पड़ीं।

सरस्वती देवी का कुलपहाड़ के ध्वज संचालन में प्रशसंनीय प्रतिभाग रहा। इन्हें सी०एल०ए० की धारा १७(१) १६३२ में गिरफ्तार किया गया। इनको तीन माह की कठोर सजा दी गयी। देश की आजादी के बाद १६५२ – ५७ तक सरस्वती देवी जैतपुर की प्रथम प्रधान रहीं।[१] इनकी जैतपुर के सतत विकास में प्रभावी भागीदारी रही। वे एक वीर महिला थीं। उनके संघर्षी सहभाग को विस्मृत नहीं किया जा सकता। इस शतजीवी महिला का २३ दिसम्बर १६८६ को निधन हो गया।

---

१. महिला सेनानी सरस्वती देवी के पुत्र परमेश्वरी दयाल सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

मुंशी मण्टी लाल और जैतपुर का स्वातन्त्र्य संग्राम - सम्मेलन

मुंशी मण्टी लाल केवल एक वीर सेनानी ही नहीं थे अपितु एक कर्मठ सांगठनिक शूर भी थे। जैतपुर में १६३६ के फरवरी माह में स्वतन्त्रता संग्राम सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जैतपुर के खाली पड़े राजमहल में आयोजित हुआ। राजमहल के सामने वाले परिसर में शामियाने का प्रबंध कर सुन्दर पाण्डाल बनाया गया था। महल में तिरंगा झण्डा लगाया गया। रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में बहुत सारी वीर महिलायें अपने हाथो में ध्वज लिए एकत्रित हुई। इस स्वातन्त्र्य धर्मी शिविर में हजारों की संख्या में वीर सेनानी शामिल हुए।

जैतपुर निवासियों ने शिविर मे पधारे स्वातन्त्र्य सूरों की आव - भगत में कोई कोर - कसर नहीं छोंड़ी। हर संभव मदद प्रदान की गयी। इस स्वातन्त्र्य स्रंग्राम - शिविर के अध्यक्ष जाने - माने साप्ताहिक समाचार पत्र सैनिक के संपादक श्री कृष्ण दत्त पालीवाल थे। पालीवाल जी का जैतपुर में माव-मीना स्वागत किया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष श्रीकृष्ण दत्त पालीवाल विद्वान एवं प्रखर राष्ट्र नेता थे। उनके भाषण ने शिविर में पधारे समस्त युवा राष्ट्र धर्मियों को बहुत अधिक प्रभावित किया।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

इस सम्मेलन में दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपति सहाय रावत, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, भगवान बालेन्दु अरजरिया, मन्नीलाल, गुरुदेव और रामगोपाल गुप्त जैसे राष्ट्र धर्मी आन्दोलनकारों की उपस्थिति एवं उनके सार गर्भित विचार उल्लेखनीय रहे।[१]

सविनय अवज्ञा और मोहन लाल

जैतपुर एक ऐसी वीर प्रसवा धरा है, जहाँ अनेक सपूतों ने जन्म लेकर अपने प्राण - प्रसूनों से आयुधी - अर्चना कर माँ भारती के प्रति संघर्षी सम्मान प्रकट किया है। इसी क्षेत्र का एक गाँव महुआ बांध है, जिसका स्वातन्त्र्य समर में योगदान रहा है, यहीं के एक पूत ने आजादी की लड़ाई में अपना प्रभावी प्रतिभाग कर गाँव तथा क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उस वीर पुत्र का नाम था- मोहन लाल। मोहन लाल नें १६३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में आगे बढ़ कर भाग लिया।

मोहन लाल ने २१ अप्रैल १६३२ को पनवाड़ी थाना के गोरखा गाँव में तथा २२ अप्रैल १६३२ को कुलपहाड़ थाना के लुहारी गाँव में कांग्रेस के पम्पलेट बाँटकर गोरी सरकार के दमन तथा अवज्ञा कार्यक्रम का प्रकाशन किया, सरकार को चन्दा न देने के लिए भाषण किया, जनता से रगंरूट न देने की बात कही।

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी मुशी मण्टी लाल जैन के पुत्र परमेश्वरी दयाल सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

मोहन लाल लोधी ने अपने बयान में सरकार विरोधी कार्य करने को स्वीकार किया। इस आरोप में मोहन लाल को आदेश दिनांक ०१.०६.१.३२ के तहत मुकदमा संख्या १५६, धारा १७(१) क्रिमिनल एक्ट के अन्तर्गत ०६ माह की कठोर सजा तथा पन्द्रह रूपयों का जुर्माना किया गया, जुर्माना न अदा करने पर डेढ़ माह की और सजा की गयी। इस तरह महुआ बांध के महावीर मोहन लाल लोधी का आजादी के संघर्ष में सराहनीय सहयोग रहा।[1]

सविनय अवज्ञा और हर प्रसाद

लुहारी का लौह लाड़ला हर प्रसाद कम शूर-वीर नहीं था। इसका जन्म लुहारी में काशी प्रसाद के घर हुआ था। हर प्रसाद ने गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में पूरे जोर - शोर के साथ सिरकत की। इसने २२ अप्रैल १६३२ को अपने गाँव लुहारी में सरकार विरोधी बैठक के लिए वहाँ के लोगों को प्रेरित किया, लोगों को सरकार के खिलाफ उकसाया, मोहन लाल लोधी और सुन्दर लाल को अपने घर आमंत्रित किया। उन्हें अपने घर में सुन्दर लाल ने ठहराया। हर प्रसाद ने उनकी पूरी मदद की। अवज्ञाकारियों के भोजनादि का प्रबंध करवाया। हर प्रसाद ने रत्ना नामक व्यक्ति को सभास्थल में प्रकाशादि की व्यवस्था का दायित्व सौंपा।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- ०४ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

इस तरह हर प्रसाद ने यथा सामर्थ्य गाँधी जी के सविनय अवज्ञा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में हर संभव मदद प्रदान की। इस सिलसिले में हर प्रसाद को आदेश दिनांक १८.०५.१९३२ को मुकदमा संख्या ७४ के अन्तर्गत धारा-१७(१) में तीन माह की सजा दी गयी तथा पच्चीस रुपयों का जुर्माना किया गया। जुर्माना न अदा करने पर डेढ़ माह की और सजा हुई। इस तरह अन्ततः कहा जा सकता है कि आजादी के समर में हर प्रसाद का प्रभावी अनुदाय रहा।[१]

सोहन लाल, काशी प्रसाद और बाल मुकुन्द

मुड़ेरी को यदि वीरों का गाँव कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की माटी में कई - कई ऐसे शूर पैदा हुए, जिन्होंने मातृभूमि का ऋण उतारने में कुछ भी उठा नहीं रखा। मुड़ेरी के सोहन लाल, काशी प्रसाद और बाल मुकुन्द ये तीन ऐसे सेनानी रहे, जिन्होंने आजादी के संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाने में कोई कोताही नहीं की। ये तीनों कांग्रेसी सदस्यों ने कांग्रेस के जिला तथा प्रान्तीय समिति के कार्यों को आगे बढ़ाने में सदैव अग्रणी रहे। इन तीनों सेनानियों ने सरकार विरोधी पम्पलेट का वितरण किया तथा हाथों में तिरंगा झण्डा लेकर कुलपहाड़ में आन्दोलन किया।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- ०८ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

काशी प्रसाद दिल का कमजोर निकला। काशी प्रसाद सरकार से क्षमा मांगते हुए भविष्य के लिए यह आश्वसान दिया कि वह अब कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाग नहीं लेगा। उसे गोरी सरकार ने पचास रुपये के मुचलके पर छोंड़ दिया।

बाल मुकुन्द के पास २४ मई १६३२ को सरकार विरोधी पम्पलेट पाया गया, जो कांग्रेस - दिवस के सन्दर्भ में था। बाल मुकुन्द और सोहन लाल को मुकदमा संख्या १५४ में आदेश दिनांक ०१.०६.१६३२ के तहत धारा १७(१) के अन्तर्गत ०६ माह की सजा दी गयी, पच्चीस रुपयों का जुर्माना हुआ। जुर्माना न अदा करने पर डेढ़ माह की और सजा हुई। इस तरह इन स्वातन्त्र्य सेनानियों ने गाँधी - आन्दोलन में अच्छा सहयोग किया।[१]

छोटेलाल, रामनरायन, शिवराम और गौरीशंकर

मुडेरी के छोटेलाल, रामनरायन, शिवराम और गौरी शंकर ने भी सत्याग्रह आन्दोलन में सोत्साह भाग लिया। २२ मई १६३२ को इन तीनों सेनानियों ने कांग्रेस - बुलेटिन, अन्य पम्पलेट के वितरण तथा फ्लैग मार्च में पूरा सहयोग किया।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- ०६ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

इनका साहस प्रशंसनीय था, क्योंकि उस काल में कांग्रेस को सरकार ने असंवैधानिक घोषित कर दिया था। ये चारों सेनानी रजवाहा की तरफ से राष्ट्र गीत गाते हुए गाँव आये, जय के नारे लगाये, ये कांग्रेस का ध्वज हाथों में लिये हुए थे। इनके हाथों में पम्पलेट भी थे। रामनरायन तथा गौरी शंकर ने अपने इकबालिया बयान में इसे स्वीकार भी किया था। इन लोगों ने न्यायालय में यह भी कहा कि हमे पता था कि सरकार ने कांगेस को असंवैधानिक घोषित कर दिया है। छोटे लाल तथा शिवराम ने कहा कि हम थोड़ी दूर पर थे। रामनरायन तथा गौरी शंकर अगुवाकार थे। इन दोनों को आदेश दिनांक ०१.०६.१६३२ के तहत मुकदमा संख्या ८५/१५५ तथा धारा १७(१) क्रिमिनल एक्ट के अन्तर्गत ०६ माह की कठोर सजा दी गयी तथा जुर्माना अदा न करने पर डेढ़ माह की की अतिरिक्त सजा हुई, साथ ही शिवराम तथा छोटे लाल को पच्चीस रुपये के मुचलके पर छोंड़ दिया गया।[1]

सत्याग्रह और मुकुन्दलाल

गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन में अनेक ऐसे सहभागी सत्याग्रही हुए हैं, जिन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन में अपनी सामर्थ्य भर श्रेष्ठ सहभाग किया है किन्तु उनका स्वातन्त्र्य आन्दोलन के इतिहास में कहीं पर भी उल्लेख नहीं है।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- १० से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

मुकुन्दलाल एक ऐसे ही स्वातन्त्र्य सेनानी हुए हैं, जिन्होंने गाँधी जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह में पूरे मनोयोग से भाग लिया किन्तु वे इतिहास में स्थान नहीं पा सके। मुकुन्दलाल लाल ने ०२ अप्रैल १९४१ को सत्याग्रह करने की नोटिस दी थी जो इस प्रकार थी–

ता० :- ०२ अप्रैल १९४१

जनाव आली,

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० ०५.०४.१९४१ को १० बजे दिन गाँव अटकंवा थाना कुलपहाड़ में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करुँगा।

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।[1]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

मुकुन्दलाल पुत्र पंचम

सुनार

नोट - अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

मुकुन्दलाल स्वर्णकार को अभियोग संख्या ६४ के अन्तर्गत आदेश दिनांक १८.०४.१९४१ के द्वारा धारा ३८/१२१ के तहत भारतीय सुरक्षा अधिनियम में तीन माह की कठोर सजा दी गयी थी और एक सौ रुपयों का जुर्माना किया गया। इस तरह मुकुन्दलाल ने भी स्वातन्त्र्य समर में अपनी प्रतिभागिता निभायी थी।[1]

स्वातन्त्र्य संघर्ष और देवी सिंह

देवी सिंह पुत्र केशव सिंह हम्मीरी धरती के सपूत तो नहीं थे किन्तु हम्मीरी तथा महोबबी धरती उनकी कर्मभूमि अवश्य थी। देवी सिंह मारवाड़ी थे, वे होशंगाबाद के गाँव पिपरावा पंसार के वैश्य थे।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- १२ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

इनका सत्याग्रह में सक्रिय योगदान था। देवी सिंह कांग्रेस के सक्रिय सदस्य थे। इन्होंने गाँधी जी के १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया। देवी सिंह ने कुलपहाड़ में सत्याग्रह किया, वहाँ पर देवी सिंह ने ०२ मई १९४१ को गोरी सरकार के विरुद्ध नारे लगाये, जिस पर उन्हें ३० अप्रैल १९४१ को नोटिस दी गयी, जिसमें यह कहा गया था कि देवी सिंह ने सरकार विरोधी कार्य किया है।

देवी सिंह को पकड़ने के लिए कुलपहाड़ थाने के तत्कालीन थानाध्यक्ष अब्दुल रहीम खान ने मोहम्मद यासीन नामक पुलिस वाले को नियुक्त किया। मोहम्मद यासीन ने देवी सिंह को कुलपहाड़ में सत्याग्रह करते हुए ढाई बजे पकड़ लिया।

देवी सिंह पर केस चला, जिसमें उसने स्वीकार किया कि मैं कांग्रेस का समर्पित सदस्य हूँ। मैंने सरकारी विरोधी नारे लगाये हैं। देवी सिंह को आदेश दिनांक १५.०४.१९४१ के द्वारा धारा ३८ डी० आई० आर० के अन्तर्गत तीन माह की कठोर सजा दी गयी, पच्चास रुपयों का जुर्माना किया गया, जुर्माना न अदा करने पर तीन माह की और सजा दी गयी। इस प्रकार देवी सिंह का आजादी के संघर्ष में सराहनीय योगदान रहा।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- १३ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

जालिम ढीमर का साहस

जालिम ढीमर वीर भूमि जैतपुर के निकट मुढ़ेरी गाँव का रहने वाला था। जालिम के पिता का नाम भवानी था। जालिम ने १५ मई १९४१ को सत्याग्रह के लिए जिला मजिस्ट्रेट को नोटिस दिया था, जिसमें उसने सूचित किया किया कि मैं उक्त दिन ननौरा में सत्याग्रह करना चाहता हूँ। बंशी मनोहर नामक पुलिस वाले ने उसे सत्याग्रह करने के पहले ही १३ मई १९४१ को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस वाले ने कहा कि जालिम ढीमर जाति का एक साधारण व्यक्ति है।[१]

जालिम के सन्दर्भ में यह कहा गया कि सत्याग्रह क्या होता है, नहीं जानता था, उससे कांग्रेस के सदस्यों ने अँगूठे का निशान ले लिया था, अभियुक्त मजदूरी करता है, वह एक साधारण व्यक्ति है किन्तु जालिम पर लगाये गये ये आरोप सत्याधारित नहीं है। उस समय के लोगों पर आजादी का भूत सवार था, सभी आतुर थे कि आधीनता कब आरोहित हो। अन्त में आदेश दिनांक २०.०५.१९४१ द्वारा धारा ३८ भारतीय सुरक्षा अधिनियम के तहत मुकदमा नं० १११ में उस पर अपराध लगाया गया किन्तु अपराध सिद्ध न होने पर उसे मुचलके पर छोंड़ दिया गया किन्तु उसका साहस प्रशसंनीय था।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- १४ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

हरजू का प्रयास

चरखारी रियासत का आजादी के संघर्ष में इतिहास अच्छा नहीं रहा, किन्तु वहाँ के कुछ गाँवों के वीरों के योगदान ने चरखारी के उस धब्बे को धो डाला। उन स्वातन्त्र्य सेनानियों में अकठौंहा निवासी हरजू पुत्र नंदी को भुलाया नहीं जा सकता। इस वीर को जिले के प्रमुख स्वातन्त्र्य वीर दीवान शत्रुघ्न सिंह का सामीप्य मिला था। दिवान साहब से ही प्रभावित होकर हरजू स्वातन्त्र्य समर में कूदा।[1] हरजू ने सत्याग्रह करने की नोटिस दी थी, जो इस प्रकार थी–

ता० :-

जनाव आली,

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० ०५.०४.१९४१ को १० बजे दिन गाँव अकठौंहा थाना कुलपहाड़ में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करुँगा।

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

हरजू प्रसाद पुत्र नंदी

चमार

नोट – अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

हरजू ने गाँधी जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया, सरकार विरोधी कार्य किया। उसे आदेश दिनांक १८.०४.१९४१ के द्वारा धारा ३८/१२१ भारतीय सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत तीन माह की जेल की सजा हुई, पच्चीस रुपयों का जुर्माना हुआ, जुर्माना अदा न करने पर तीन माह की अतिरिक्त सजा हुई। इस तरह हरजू का स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय भूमिका रही, जिसे नकारा नहीं जा सकता।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या– १२ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

सत्याग्रह और नाथूराम

नाथूराम ब्राह्मण अजनर थाना के सिवान गाँव का रहने वाला था। जैतपुर के आस-पास के गाँवों में अनेक सेनानी हुए हैं, इन्हीं के प्रभाव से नाथूराम भी आन्दोलनकारी बने। नाथूराम ने सत्याग्रह के लिए १५ अप्रैल १९४१ को अजनर थाना के प्रभारी अब्दुल रहीम खान को नोटिस दी थी जो इस प्रकार थी-

ता० :- ०६.०४.१९४१

जनाव आली,

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० २०.०४.१९४१ को ४ बजे दिन गाँव सिवान थाना अजनर में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करुँगा।[1]

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर रिकार्ड से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

नाथूराम पुत्र श्री राजाराम

नोट - अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

उसके बाद नाथूराम ने सत्याग्रह में बढ़कर भाग लिया, सरकार विरोधी नारे लगाए, सभा- आयोजन में सहभाग किया। इसके बाद उसे पकड़ने के लिए थानाध्यक्ष ने अहमद अली तथा देव जी पुलिस को नियुक्त किया। २० अप्रैल १९४१ को नाथूराम को गिरफ्तार कर लिया गया।

नाथूराम पर धारा ३८/१२१ के अन्तर्गत मुकदमा चला। उसने सरकार विरोधी कार्य को स्वीकार किया। उसे आदेश दिनांक २६.०४.१९४१ के द्वारा मुकदमा नं० ८८ के अन्तर्गत तीन माह की कठोर सजा दी गयी। पचास रुपयों का जुर्माना किया गया। जुर्माना अदा न करने पर तीन माह की जेल की सजा हुई।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल नं० १७ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

इस तरह सिवान के इस शूर का स्वतन्त्रता संग्राम में सराहनीय योगदान रहा, उसने आन्दोलन में अगुवायी सहभाग किया। उसके आजादी के समर में बढ़ - चढ़ कर प्रतिभाग को विस्मृत नहीं किया जा सकता।

माधव का अभियान

माधव भी आजादी के संघर्ष में पीछे नहीं रहे। वे भी स्वाधीनता के स्नेही थे। माधव ने दिनांक ०२.०४.१९४१ को सत्याग्रह करने की नोटिस दी, जो इस प्रकार थी -

ता० :- ०२.०४.१९४१

जनाव आली;

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० ०५.०४.१९४१ को २ बजे दिन गाँव अटकवाँ थाना कुलपहाड़ में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करूँगा।[१]

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे
से मदद देना हराम है।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

माधव पुत्र छबीले

नोट - अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

माधव ने गाँधी जी के १६४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। माधव ने सरकार विरोधी नारे तथा प्रदर्शन में भाग लिया। अवज्ञा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में कोई कोर-कसर नहीं छोंडी।

माधव को गांधी - आन्दोलन में भाग लेने के कारण धारा ३८/१२१ के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया । माधव को आदेश दिनांक १८ अप्रैल १६४१ के द्वारा मुकदमा संख्या ६५ में तीन माह की सजा हुई, पच्चीस रुपयो का जुर्माना हुआ, जुर्माना अदा न करने पर तीन माह की अतिरिक्त सजा हुई। इस तरह माधव का भी आन्दोलनात्मक अभियान कमजोर नहीं रहा। माधव का योगदान इतिहास के पृष्ठ पर सदैव अंकित रहेगा।[1]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- १७ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

सत्याग्रह और भरत जी

भरत जी कुरई गाँव के निवासी थे, इनके पिता जी का नाम देवी प्रसाद था। इनके अन्तस् में भी आजादी के विचार का युवा जीवन में अंकुरण हो चुका था, जो भरत जी के आन्दोलनात्मक अगुवाई के रूप में विकसित हुआ। भरत जी ने सरकार विरोधी कार्य करने की जिला मजिस्ट्रेट को नोटिस दी थी जो इस प्रकार थी–

ता० :- १८.०७.१९४१

जनाव आली,

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० २२.०७.१९४१ को २ बजे दिन गाँव सुगिरा मौजा कुड़ई, थाना कुलपहाड़ में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करुँगा।[१]

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

भरत जी पुत्र छबीले

नोट – अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

भरत जी ने कुलपहाड़ के निकट सुगिरा गाँव, जो पवाँरों के पौरुष का साक्षी रहा है, में सत्याग्रह के सिलसिले में एक बैठक आयोजित की। भरत जी ने उस बैठक में सरकार विरोधी नारे लगाये। उस सभा में लगभग २० सत्याग्रही थे। थाना कुलपहाड़ से जाँच के लिए यासिम खान को भेजा गया।

भरत जी पर सरकार विरोधी आचरण के सन्दर्भ में धारा ३८ के अनतर्गत मुकदमा चला, जिसमें भरत जी ने निःसंकोच अपराध कबूल किया। भरत जी को आदेश दिनांक ३१.०७.१९४१ के द्वारा मुकदमा नं० १९६ में तीन माह की सजा तथा पच्चीस रुपयों का जुर्माना हुआ। जुर्माना अदा न करने पर तीन माह की अतिरिक्त जेल हुई।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या– १९ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

इस तरह भरत जी क्षेत्र के अन्य सेनानियों की तरह आन्दोलनकारी रहे। उनके संघर्षी प्रयास प्रसंशनीय रहे। भरत जी के आन्दोलनात्मक योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

हल्कू की भूमिका

हल्कू की भी आजादी के संघर्ष में सहभागिता हल्की नहीं रही। उसने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हल्कू ने सरकार विरोधी कार्य करने की जिला मजिस्ट्रेट को नोटिस दी थी जो इस प्रकार थी-

ता० :- ०२.०४.१९४१

जनाव आली,

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० ०५.०४.१९४१ को १२ बजे दिन गाँव जैतपुर, थाना कुलपहाड़ में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करूँगा।[१]

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

हल्कू पुत्र मनप्यारे लोधी

पुरवा पनवाड़ी,

थाना श्रीनगर

नोट - अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

उसके बाद हल्कू ने गाँधी जी के १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह में हिस्सा लिया। सरकार विरोधी नारे लगाये। सत्याग्रह सभा के आयोजन में अगुवायी की। इसी सिलसिले में उसे कुलपहाड़ के थानाध्यक्ष द्वारा गिरफ्तार किया गया।

हल्कू पर धारा ३८/१२१ के अन्तर्गत मुकदमा चला। केस के दौरान उसने देश के लिए सरकारी विरोधी कार्य को स्वीकार किया। इस आचरण पर उसे कोइ मलाल नहीं था।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

उसे आदेश दिनांक १८.०४.१९४१ के द्वारा मुकदमा संख्या १६१ में तीन माह की कठोर सजा दी गयी, साथ ही पच्चीस रुपयों का जुर्माना हुआ, जिसे अदा न करने पर तीन माह की अतिरिक्त जेल सजा हुई।[1] हल्कू ने बड़े फक्र के साथ जेल की यातना सही, उसके बाद भी आजादी के पूर्व तक वह देश धर्मी आचरण पर चलता रहा। देश के प्रति उसके अन्दर भावनात्मक लगाव था। उसका योगदान प्रभावी रहा।[1]

लक्ष्मन का लगाव

लक्ष्मन भी स्वाधीनता प्रेमी थे। इनके पिता का नाम नंदा लोधी था। लक्ष्मन बमनौरा गाँव थाना अजनर के रहने वाले थे। लक्ष्मन ने ०६ अप्रैल १९४१ को जिला मजिस्ट्रेट को सत्याग्रह करने की नोटिस दी थी, जो इस प्रकार है-

ता० :- ०६.०४.१९४१

जनाव आली,

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० २०.०४.१९४१ को ०१ बजे दिन गाँव कुलपहाड़ बाजार, थाना कुलपहाड़ में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करुँगा।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- १७ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

लक्ष्मन पुत्र श्री नंदा लोधी

गाँव- बमनौरा,

थाना अजनर निवासी

नोट – अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

लक्ष्मन ने सरकार विरोधी नारे लगाये, सत्याग्रह किया। लक्ष्मन के सरकार विरोधी कार्यों की जाँच के लिए कुलपहाड़ के थानाध्यक्ष अब्दुल रहीम खान को नियुक्त किया गया।[1]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

थानाध्यक्ष ने २० जुलाई १९४१ को लक्ष्मन को सत्याग्रह करते हुए कैद कर लिया। उसे साढ़े तीन बजे थाना लाया गया। उस पर ३८/१२१ धारा के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया, केस के दौरान उसने देशहित में सरकार विरोध कार्य को सहर्ष स्वीकार किया।

उसे आदेश दिनांक २४.०४.१९४१ के द्वारा मुकदमा संख्या ८९ में तीन माह की सजा हुई, पच्चीस रुपयों का जुर्माना किया गया, जिसे अदा न करने पर तीन माह की अतिरिक्त जेल हुई।[1] लक्ष्मन ने सहर्ष जेल यात्रा पूरी की। उसे अपने अपराध पर जरा भी मलाल नहीं था। लक्ष्मन का योगदान स्मरणीय रहेगा।

सत्याग्रह और बैजनाथ सक्सेना

स्वातन्त्र्य संघर्ष के क्षेत्र में वैसे तो पूरे हमीरपुर जनपद (महोबा सहित) का योगदान रहा है किन्तु उसके गाँवों में एक जुझारू गाँव पहाड़िया ऐसा रहा है, जहाँ के वीरों का किसान आन्दोलन में अपनी एक अलग पहचान रही है। इसी गाँव में १९०७ में बेनी प्रसाद सक्सेना के घर बैजनाथ सक्सेना का जन्म हुआ था। बैजनाथ सक्सेना के पिता ईमानदार एवं संघर्षी व्यक्ति थे। बैजनाथ जी को पिता से ही ईमानदारी एवं जीवटता के गुण प्राप्त हुए थे।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- २२ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

बैजनाथ सक्सेना ने बाल काल से ही राष्ट्र धर्मिता एवं सामाजिकता के क्षेत्र में प्रवेश कर लिया था। ये १६२६ में कांग्रेस के प्राथमिक सदस्य बन गये थे। इन्होंने १६२५ के कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में जनपद का प्रतिनिधित्व किया था।

व्यक्तिगत सत्याग्रह और बैजनाथ सक्सेना

वैसे तो गाँधी जी के सभी आन्दोलनों में बाबू बैजनाथ सक्सेना की सराहनीय भूमिका रही। सक्सेना ने १६३०, १६३२ के गाँधी – आन्दोलनों में भी अपनी वजनदार उपस्थिति का आभास कराया था किन्तु १६४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह में इनकी सक्रियता अग्रणी एवं महत्वपूर्ण थी। बैजनाथ सक्सेना ने १५ जनवरी १६४१ को सत्याग्रह करने की नोटिस आँग्ल सरकार को दी थी, जो इस प्रकार थी–[१]

ता० :- १५.०१.१६४१

जनाव आली,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० १८.०१.१६४१ को ०१ बजे दिन गाँव घुटई, थाना अजनर में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करुँगा।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

नारे

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

बैजनाथ सक्सेना

पहाड़िया

नोट - अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

बाबू बैजनाथ सक्सेना द्वारा जिला मजिस्ट्रेट को सत्याग्रह सम्बन्धी जो नोटिस भेजी गयी थी, उस पर जिला मजिस्ट्रेट ने तुरन्त कार्यवाही की, हीरा सिंह थाना प्रभारी को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उसने अभियुक्त बैजनाथ सक्सेना को १८ जनवरी १९४१ को पूर्वाह्न ११ बजे गिरफ्तार कर लिया।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

सक्सेना पर धारा ३८/१२१ डी०आई०आर० के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया। बैजनाथ सक्सेना को आदेश दिनांक २३.०१.१६४१ के द्वारा मुकदमा संख्या १०/४१ में एक वर्ष की कठोर जेल तथा पच्चीस रुपयों का जुर्माना की सजा हुई।[1] जुर्माना अदा न करने पर तीन माह की और जेल हुई। सक्सेना ने केस के दौरान यह स्वीकार किया कि वह जिला कांग्रेस कमेटी का सदस्य तथा कांग्रेस मण्डल पनवाड़ी का अध्यक्ष है। इस तरह बाबू बैजनाथ सक्सेना का आजादी के संघर्ष में अच्छा सहभाग रहा। बैजनाथ सक्सेना ने कुल मिलाकर ०५ वर्षों तक जेल जीवन बिताया, ०५ फरवरी १६४४ का ऐतिहासिक पहाड़िया काण्ड इन्हीं के नेतृत्व में चर्चित हुआ। १६६० में बाबू बैजनाथ सक्सेना नें पनवाड़ी में नहेरू इण्टर कालेज की स्थापना की।

सत्याग्रह और लालहाबादुर गुसाई

लालबहादुर गुसाई कुलपहाड़ का सपूत था, जिसने कुलपहाड़ के प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी मूलचन्द्र दर्जी से देश भक्ति की प्रेरणा प्राप्त कर राष्ट्रधर्मी बना था। गुसाई का स्वातन्त्र्य प्रेम अद्‌भुद था। वह गाँधी जी के सभी आन्दोलनों में अग्रणी रहा।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- ०२ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

वह १६३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सहभागी हुआ, जिसके कारण उसे ०६ माह का कठोर कारावास तथा पच्चीस रुपयों का जुर्माना हुआ। लाल बह्यदर कुल मिलाकर एक वर्ष तक जेल में रहे। वह मातृभूमि का लाल था। लाल बहादुर दिसम्बर १६३२ में सीतापुर जेल से मुक्त हुआ। इस वीर सेनानी का आजादी के संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान रहा। लाल बहादुर का २६ जून १६८७ को निधन हो गया।

सत्याग्रह और पूरन लाल अग्रवाल

श्रीनगर महोबा जनपद का एक ऐसा जुझारू गाँव है, जिसने मातृभूमि की रक्षार्थ अनेकों वीरों को जन्म दिया, उन्हीं वीर पुत्रों में पूरन लाल अग्रवाल भी एक थे। इनके पिता का नाम मंगल लाल अग्रवाल था। पूरनलाल अग्रवाल श्रीनगर में खादी के ग्राही बन गये थे। इनके पिता कांग्रेस के सक्रिय सदस्य तथा देश भक्त थे।

इन्होंने १६३० के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया था। पूरनलाल अग्रवाल को देश भक्ति की प्रेरणा विरासत में मिली थी। पूरन लाल अग्रवाल ने १६३० के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया, जिसके कारण उन्हें पुलिस के उत्पीडन का शिकार होना पड़ा था।[१]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, महोबा, बसन्त प्रकाशन, १६६५, पृ०सं०- १४३।

पूरनलाल अग्रवाल वर्षों मण्डल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा मंत्री रहे। ये भारत छोड़ो आन्दोलन में भी अग्रणी रहे। इनके नाम सरकार ने वारण्ट निर्गत कर दिया। पूरनलाल २१ दिनों तक फरार रहे, उसके बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वे जेल भेज दिये गये।[1] पूरनलाल अग्रवाल को आन्दोलनों मे भाग लेने के कारण डेढ़ वर्ष का कारावास तथा सौ रुपये का जुर्माना हुआ। ये १९४४ तक जेल में रहे। इस तरह इनका भी आजादी के संघर्ष में सराहनीय सहभाग रहा।

सत्याग्रह और बाबूराम

बाबूराम भी महोबा के उन महत्वपूर्ण सेनानियों मे एक था, जिसने जंगे आजादी में प्रभावी भूमिका निभायी। इसने ०५ मई को सत्याग्रह करने की नोटिस जिलाधीश महोदय को दी थी, जो इस प्रकार थी–

ता० :- ०५.०५.१९४१

जनाव आली,

मुझे गाँधी जी ने सत्याग्रह करने के लिए चुन लिया है। इसलिए मैं आपको सूचना देता हूँ कि मैं ता० ०८.०५.१९४१ को ०४ बजे महोबा बाजार, थाना महोबा में नीचे लिखे नारे लगाकर सत्याग्रह करुँगा।[2]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १४६।

२. जिला रिकार्ड से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

<u>नारे</u>

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे

से मदद देना हराम है।

हमारे लिए यही है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह

के जरिये हर हथियार बंद लड़ाई का विरोध करें।

सेवा में,

श्रीमान् कलेक्टर साहब

हमीरपुर।

आपका

बाबूराम पुत्र

छिद्दी लाल

नोट– अगर उपर्युक्त स्थान पर मेरी गिरफ्तारी न हुई तो मैं दिल्ली की ओर सत्याग्रह करता हुआ बढता चला जाऊँगा।

बाबूराम ने जिलाधीश को महोबा बाजार में ०८ मई १९४१ को चार बजे सत्याग्रह करने की नोटिस दी थी, जिसके कारण थाना महोबा के द्वितीय अधिकारी को जिला मजिस्ट्रेट ने बाबूराम को गिरफ्तार करने का आदेश दिया था। बाबूराम को महोबा की रेलवे क्रासिंग में गिरफ्तार कर लिया गया था।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

दरोगा के वहाँ पहुँचने पर अच्छी खासी भीड़ एकत्रित हो गयी थी। बाबूराम पर धारा ३८/१२१ डी०आई०आर० के अन्तर्गत मुकदमा चला, जिसमें उसने स्वीकार किया था कि सत्याग्रह में शामिल हुआ हूँ। उसने यह भी कहा कि मैं कांग्रेस का सदस्य हूँ।

बाबूराम को आदेश दिनांक १७.०५.१९४१ के तहत मुकदमा नं० १०७ में तीन माह की कैद की सजा तथा पन्द्रह रुपयो का जुर्माना हुआ, जुर्माना अदा न करने पर तीन माह की अतिरिक्त सजा हुई।[१] इस तरह अन्त में कहा जा सकता है कि बाबूराम का आजादी के समर में अच्छा योगदान रहा।

सत्याग्रह और हीरालाल

थाना श्रीनगर के अन्तर्गत आने वाले पवा गाँव का हीरालाल उर्फ हरलाल का भी सत्याग्रह आन्दोलन में सराहनीय योगदान रहा। हरलाल ने १५ अप्रैल १९४१ को थाना श्रीनगर के गाँव के मंझलावारा चौकीदार दुखिया को यह सूचना दी थी कि मैं १६ अप्रैल १९४१ को सत्याग्रह करूँगा। हरलाल की नोटिस पर वहाँ के चौकीदार ने इसकी सूचना प्रभारी थाना को दी।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल नं० २६ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

हरलाल १६ अप्रैल १६४१ को एक बजे मंझलवारा पहुँचा। थाने के हेड कान्सटेबिल हरशरणदास को अभियुक्त को गिरफ्तार करने के लिए भेजा गया। हरलाल ने अपने हाथ में तिरंगा झण्डा लिए मंझलवारा में सरकार विरोधी नारे लगाकर सत्याग्रह किया। हेड कान्सटेबिल ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया। हरलाल को थाने लाया गया। मंझलवारा गाँव के मुखिया भरोसा ने भी घटना की पुष्टि की, महोबा के पी०डब्लू०आई० ऊधामल ने इस केस की जाँच की।

धारा ३८ डी०आई०आर० के अन्तर्गत हरलाल पर मुकदमा चला। उसे आदेश दिनांक २२.०४.१६४१ के द्वारा मुकदमा संख्या- ८३/४१ में हरलाल को तीन माह की सजा तथा पच्चीस रुपयों का जुर्माना हुआ, जुर्माना अदा न करने पर तीन माह की अतिरिक्त सजा हुई।[1] इस तरह से कहा जा सकता है कि हरलाल का आजादी के संघर्ष में योगदान रहा।

सत्याग्रह और बृजगोपाल सक्सेना

बृजगोपाल सक्सेना भी महोबा के उन वीर सेनानियों में से एक थे, जिन्होंने अपनी बहादुरी के झण्डे गाड़ें, बृजगोपाल सक्सेना का १६०५ में श्रीनगर के गाँव ननौरा में जन्म हुआ था। इन्होंने गाँव से प्राथमिक तथा बाँदा से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की, तत्पश्चात् महोबा के डी०ए०वी० कालेज में अध्यापन कार्य करने लगे।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल नं० २६ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

बृजगोपाल १६२३ में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद कानूनी पेशे में आ गाये। बृजगोपाल सक्सेना ने १६२३ में प्रख्यात क्रांतिकारी राधेश्याम मिश्र के केस की पैरवी कर राधेश्याम मिश्र के मुकदमें को जीता। १६२६ में ही गाँधी जी द्वारा कलकत्ते में विदेशी वस्त्रों की होली जलाने पर उन पर एक रुपये का अर्थदण्ड हुआ, इस घटना से सक्सेना बहुत प्रभावित हुए और वे कांग्रेस के सक्रिय सदस्य हो गये।

ये १६३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सहभागी हुए, जिस पर उन्हें एक वर्ष का कठोर करावास तथा पच्चीस रुपयों का जुर्माना का दण्ड मिला। सक्सेना का १६४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी योगदान रहा।[१]

सत्याग्रह और बल्देव प्रसाद गुप्त

बल्देव प्रसाद का महोबा में गंगा प्रसाद गुप्त के घर १६१३ में जन्म हुआ था। बल्देव प्रसाद गुप्त भी समर्पित सेनानी रहे हैं। इनके अन्तःकरण में भी देश प्रेम का ज़ज्बा था। ये बाल जीवन से ही राजनीतिक मुद्दों पर रुचि लेने लगे थें, बल्देव प्रसाद गुप्त का १६२५ में जनपद के प्रमुख नेता दीवान शत्रुघ्न सिंह से सम्पर्क हुआ।

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १४०।

बल्देव प्रसाद गुप्त का विद्यार्थी – पुस्तकालय की स्थापना में सराहनीय योगदान रहा, बल्देव प्रसाद गुप्त प्रारम्भ में क्रांतिकारी रहे, ये १९२७ में महोबा से मेरठ पहुँच गये, वहाँ पर गुप्त गाँधी आश्रम में अध्ययन तथा क्रांतिकारी कार्यों में संलग्न रहे। बल्देव प्रसाद को बुन्देलखण्ड के प्रमुख पत्र 'सत्याग्रही' के प्रकाशन तथा वितरण के सम्बन्ध में १९३० मे गिरफ्तार कर लिया गया।

इन्हें सुरेन्द्र दत्त बाजपेयी के साथ १० माह का कारावास मिला। १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन में बल्देव प्रसाद गुप्त को दो माह की जेल हुई।[1] इस तरह से कहा जा सकता है कि बल्देव प्रसाद गुप्त का राष्ट्रीय आन्दोलन में शानदार सहयोग रहा। इनका २५ दिसम्बर १९९१ में निधन हो गया।

सत्याग्रह और भगवानदास ढीमर

भगवानदास ढीमर एक ऐसा स्वातन्त्र्य धर्मी सेनानी था, जिसका स्वातन्त्र्य आन्दोलन में सराहनीय अनुदान रहा है, किन्तु इस सपूत का इतिहास के पृष्ठों में उल्लेख नहीं है। यह वीर – बाँकुड़ा गाँधी जी के हर आन्दोलन में हाथ में तिरंगा झण्डा लिए सदैव आगे रहता था, यह नंगे पैरो ही चलकर आन्दोलनात्मक आयोजनों का प्रचार प्रसार करता था। यह वीर सपूत बहुत बहादुर था। इसने भारत के महान नेता तथा मास्टर माइण्ड बाबू सुभाष चन्द्र बोस के साथ दिल्ली के बम काण्ड में हिस्सा लिया था।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

भगवानदास डीमर बहुत साहसी था। पं० जवाहर लाल नेहरू जब भी महोबा आते थे तो यह उन्हें तांगा में छिपाकर महोबा रेलवे स्टेशन से शहर लाता था। उन्हें भगवानदास अपने घर भी ले जाता था। दिवान साहब की पत्नी रानी राजेन्द्र कुमारी भी महोबा आने पर भगवानदास डीमर के घर पर ठहरती थीं। यह अपने को बचाने के लिए अंग्रेजों से कहता था कि मैं राजपूत हूँ। भगवानदास डीमर को अंग्रेजों के कोप का शिकार भी होना पड़ा था। गोरों ने उसे रस्सी में बांध कर घोड़ों के द्वारा बहुत दूर तक घसीटा था, भगवानदास डीमर को भले ही जेल न हुई हो किन्तु जेल वाले सेनानियों से इसका कम योगदान नहीं रहा। इसे आजादी के बाद पेंशन नहीं मिली। इसके आश्रितों को भी पेंशन की मदद नहीं दी गयी।[१]

निष्कर्ष

गाँधी जी द्वारा आयोजित आन्दोलनों के कई चरण रहे हैं, जिनमें असहयोग आन्दोलन से लेकर १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन तक लगभग ढाई दशकों के संघर्षी - सफर ने कई उतार - चढ़ाव देखे हैं। गाँधी - आन्दोलन में १६३० से आयोजित सविनय अवज्ञा आन्दोलन का अपना एक अलग महत्व है। इस काल का नमक - आन्दोलन अपनी तरह का एक अलग आन्दोलन था, जिससे सारे देश का भावनात्मक जुड़ाव हो गया।

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी रज्ज़ब अली आजाद की पत्नी कदीरन बेगम से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन गाँधी जी के आन्दोलन में एक प्रभावी पहल थी, जिसमें सारे देश ने सिरकत की थी। इस दृष्टि से महोबा पीछे नहीं रहा। इस अध्याय के अध्ययन से यह उजागर हुआ है कि यहाँ के बहुत से सेनानियों के सहभाग का कहीं पर उल्लेख ही नहीं है, जबकि अनुल्लिखित वीरों की संघर्ष में बराबर की हिस्सेदारी रही है। जिला रिकार्ड के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट हुआ है महोबा के बहुत से महावीरों ने आन्दोलन की प्रभावी अगुवाई की है और हँसते - हँसते पुलिस यातनाओं को झेला है। कुछ वीरों का, जिनका उल्लेख इतिहास में नहीं है, प्रतिभाग निःसन्देह आन्दोलनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है, उनमें से मोहन लाल, हर प्रसाद, सोहन लाल, काशी प्रसाद, बाल मुकुन्द, छोटे लाल, राम नारायण, शिवराम, गौरीशंकर, मुकुन्दलाल, देवी सिंह, जालिम ढीमर, हरजू, नाथूराम, माधव, भरत जी एवं हल्कू जैसे अनेक शूर उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने बिना किसी श्लाधा के संघर्ष कर देश को आजाद कराने में योगदान प्रदान किया।

षष्ठ अध्याय

महोबा के स्वातन्त्र्य संघर्ष में प्रेस की भूमिका

६

महोबा के स्वातन्त्र्य संघर्ष में प्रेस की भूमिका

समाचार पत्र वह शब्द चित्र होता है, जिसमें समस्याओं के सातत्य को निहारा जा सकता है। अशक्य, अकिंचन एवं असमर्थ अवाम की आवाज के आरेख को अवलम्बन प्रदान करना समाचार पत्रों का अहम् दायित्व होता है। प्रेस दीन - दुःखियों का दर्पण होता है, जिसमें दर्दीले दास्तानों को देखा जा सकता है। स्वातन्त्र्य के संघर्ष में समाचार पत्र सत्य का शंखनाद कर संचेतना को सम्बल प्रदान करते हैं।

पत्र समाज का वह थर्मामीटर होता है, जिसमें सामाजिक वातावरण का तापमान परिलक्षित होता है। समाचार पत्र सामाजिक सूचनाओं का वाहक होता है। यह देश - दुनिया की खबरों को पाठकों तक दृष्टिगत कराकर दूरबीन की भूमिका अदा करता है। यह विचाराभिव्यक्ति का जहाँ एक ओर माध्यम है, वहीं दूसरी ओर समाज के सुख - दुःख में मुखरित भी होता है। सामाजिक चेतना को उद्भूत करने में समाचार पत्र विधायक के रूप में दिखायी देता है। यह समाजीकरण का एक सशक्त उपकरण है।[१]

---

१. डॉ० भवानीदीन, वैभव बहे बेतवा धार, कानपुर, साहित्य रत्नालय, २००० पृ०सं०- ६५।

प्रेस समाज का शिक्षक तथा महा निरीक्षक होता है। प्रेस जन सामान्य को यथार्थ बोध कराता है। प्रेस-माहात्म्य को इस प्रकार आंका गया है-

इस अंधियारे विश्व में दीपक है अखबार,

सुपथ दिखावे आपको आँख करत है चार।

ज्यों पारस लगि होत है लोहा कनक समान,

त्यों पत्रन के पढन ते मूर्ख होत मतिमान।

पत्रकारिता आँग्ल भाषा के जर्नलिज्म (Journalism) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। इस शब्द की व्युत्पत्ति फ्रेंच शब्द जर्नील डे आफ वर्क (Journiel day of work) से हुई।[१]

लोकहित की सम्यक प्रस्तुति ही पत्रकारिता है। समय और समाज के सम्बन्ध में सजगता का शंखनाद कर दायित्व से अवगत कराना ही पत्रकारिता है। असत्य, अशिव और असुन्दर पर सत्यं, शिवं, सुन्दरं की शंख ध्वनि ही पत्रकारिता है। पत्रकारिता के प्राध्यापक रोनाल्ड दउल्जे का इस सम्बन्ध में विचार है- पत्रकारिता का अर्थ प्रसार माध्यमों द्वारा व्यवस्थित तथा विश्वसनीय सूचनाओं और विचारों की प्रस्तुति और जन मनोरंजन करना है।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, वैभव बहे बेतवा धार, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६५।

२. वहीं, पृ०सं०- ६५।

बुन्देलखण्ड में पत्रकारिता के उद्भव और विकास का जहाँ तक सवाल है तो इस विषय में यह उल्लेखनीय है कि पत्र प्रकाशन के पूर्व ही बुन्देल काल में पत्रकारिता के बीज बोये जा चुके थे। इस दृष्टि से बुन्देले हर बोलों का योगदान एक अलग प्रकार का रहा है, जिसकी पुष्टि प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान करती हैं-

बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

बुन्देलखण्ड में घुमन्तू जीवन बिताने वाले लोग जिन्हें, हर बोले कहते थे, जगह - जगह घूम - फिर कर विविध प्रकार के समाचारों का लोक प्रसार करते थे। इस तरह कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड में बिना पत्रों के प्रकाशित हुए ही प्रसारण कई वर्षों तक चलता रहा। प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष के तीन वर्षों बाद १८७० में बुन्देलखण्ड में पहला समाचार पत्र 'बुन्देलखण्ड अखबार' ललितपुर से हिन्दी तथा उर्दू में प्रकाशित हुआ।[१]

बुन्देलखण्ड में इस पत्र के प्रकाशन के लगभग पाँच दशक बाद सर्वाधिक पिछड़े जनपद हमीरपुर में २०वीं सदी के दूसरे दशक में पत्रकारिता का उदय हुआ।[२]

---

१. डॉ० सियाराम शरण शर्मा, हिन्दी पत्रकारिता, झाँसी, उ०प्र०, १९८६, पृ०सं- ४४।

२. रजनीश खरे, पत्रकारिता का विकास, हमीरपुर, उ०प्र०, १९९२, पृ०सं०- ०३।

हमीरपुर से 'सुधा' नामक पहला पत्र १६१८ में हिन्दी एवं उर्दू में प्रकाशित हुआ, जिसके संपादक मथुरा प्रसाद शर्मा थे। हमीरपुर जनपद का १६६५ में विभाजन हुआ, ११ फरवरी १६६५ में महोबा एक नव सृजित जनपद बना, पहले हमीरपुर में महोबा जनपद आता था, इस कारण महोबबी आजादी में जहाँ तक प्रेस की भूमिका का सवाल है तो इस सम्बन्ध में महोबा के साथ - साथ हमीरपुर से भी निर्गत आजादी कालीन पत्रों का उल्लेख करना समीचीन होगा। इस अध्याय में स्वातन्त्र्य धर्मी पत्रों तथा पत्रकारों का उल्लेख किया गया है, जिन्होंने अपनी कलम से संघर्षी जमीन को तैयार करने में शानदार भूमिका निभायी। हमीरपुर नगर से लगभग ११ कि०मी० की दूरी पर अवस्थित पौथिया गाँव का सर्जना तथा गर्जना के क्षेत्र में प्रभावी योगदान रहा।[१]

क्रांतिकारी पत्र

पौथिया में भारत समिति का गठन १६२४ में किया गया था, दीवान शत्रुघ्न सिंह, राधेश्याम मिश्र, प्रेम नारायण त्रिपाठी, शोभाराम अग्रवाल एवं हीरानंद दीक्षित जैसे समर्पित स्वातन्त्र्य सेनानी इस संस्था के प्रमुख सदस्य थे। इस समिति ने १६२४ में क्रांतिकारी पत्र का प्रकाशन किया, जिसका सारे जनपद में वितरण होता था। हमीरपुर के शोभाराम अग्रवाल इस पत्र की प्रतियों को मुख्यालय के प्रमुख अधिकारियों के आवास में प्रेषित करने का जोखिम भरा कार्य करते थे। यह पत्र १६३० तक प्रकाशित हुआ।

---

१. रजनीश खरे, पत्रकारिता का विकास, हमीरपुर, उ०प्र०, १६६२, पृ०सं० - ०३।

बुन्देलखण्ड केसरी

बुन्देलखण्ड केसरी बुन्देलखण्ड का अग्नि धर्मा पत्र था। हमीरपुर के प्रमुख स्वातन्त्र्य शूर दीवान शत्रुघ्न सिंह से रामगोपाल गुप्त मिले। उन्होंने दिवान साहब से कहा कि स्वातन्त्र्य चेतना के प्रचार - प्रसार के लिए एक स्वातन्त्र्य धर्मी पत्र के प्रकाशन की अतीव आवश्यकता है।[१]

आँग्ल - अत्याचारों से जनता को एक अखबार के माध्यम से आसानी से अवगत कराया जा सकता है। समाचार पत्र जन चेतना के उद्‌गाता होते हैं। जनता को पत्र से प्रेरणा प्राप्त होगी। रागगोपाल गुप्त के इस प्रस्ताव को दीवान शत्रुघ्न सिंह ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। दीवन शत्रुघ्न सिंह ने अपने घर से दो हजार रुपयों की व्यवस्था कर रामगोपाल गुप्त को दिये। बुन्देलखण्ड केसरी के प्रकाशन के लिए दिवान साहब द्वारा दी गयी सहायता से साइक्लोस्टाइल मशीन की व्यवस्था हुई। उन्होंने प्रकाशनार्थ आवश्यक स्टेशनरी की भी व्यवस्था अपने पास से कर दी। रामगोपाल गुप्त साइक्लोस्टाइल मशीन तथा अन्य आवश्यक सामग्री आदि लेकर मगरौठ पहुँचे।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १०६।

२. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रपीति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

रामगोपाल गुप्त बुन्देलखण्ड केसरी के संपादक बने, रामगोपाल गुप्त के सम्पादकीय, राधेश्याम मिश्र के क्रांतिकारी, हरी भाई के व्यंगात्मक तथा भगवानदास बालेन्दु जी के अग्नि धर्मा लेखों से सुसज्जित बुन्देखण्ड केसरी का पहला अंक प्रकाशित हुआ, जिसने तुरन्त ही जन सामान्य के बीच अपनी पहचान बना ली।[१]

बुन्देलखण्ड केसरी के प्रसार - पुरोधा

१६३२ में जिस समय बुन्देलखण्ड केशरी प्रकाशित हुआ, उसे तुरन्त ही दो प्रसार योद्धा मिल गये, जिन्होंने बुन्देखण्ड केसरी के प्रचार - प्रसार में प्रमुख भूमिका निभायी, जराखर के सुखलाल भाई तथा रामदयाल कोरी इस पत्र की प्रतियाँ लेकर पूरे जनपद में वितरित करते थे। ये दोनो प्रसार पुरोधा एक दिन में लगभग ५० मील की यात्रा तय कर लेते थे। ये दोनो उत्साही युवा पत्र को बांट कर शाम को अपने स्थानों में पहुँच जाते थे। इन दोनो प्रसार वीरों को गोरे पहचानते भी नहीं थे। इससे इन वितरक वीरों को बड़ी सुगमता रहती थी।[२]

---

१. डॉ० भवानीदीन, वैभव बहे बेतवा धार, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६७।

२. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रपीति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

बुन्देलखण्ड केसरी के ये दोनो प्रचार - प्रसार योद्धा जनपद के प्रमुख अधिकारियों यथा- कलेक्टर, एस०पी० तथा तहसीलदार के यहाँ इसे जल्द पहुँचाते थे। पत्र की निर्भीकता, निश्छलता तथा तथ्य निरूपणता ने जनोत्साह में अतीव वृद्धि की। बुन्देलखण्ड केसरी के द्विगुणित प्रसार ने सरकारी कर्मचारियों की नींद उड़ा दी। सारे सरकारी मुलाजिम बुन्देलखण्ड केसरी की मशीन को पकड़ने के लिए जी-जान से जुट गये।[१]

बुन्देलखण्ड केसरी पत्र न होकर एक आन्दोलन था

बुन्देलखण्ड केसरी को गोरी सरकार के नुमाइंदे पकड़ न सके, उनका अभियान तेज अवश्य रहा। पत्र से प्रभावित होकर महिलायें आजादी के पथ में निकल पड़ीं, उस समय जनपद की पाँचो तहसील की वीर नारियाँ अपने पति तथा भाई के साथ संघर्षी समर में कूद पड़ीं। पुलिस महिलाओं के हाथों से ध्वज छीनती किन्तु वे अपनी शक्ति भर उसे छोंड़ती नहीं थीं, महिलायें पुलिस यातना का शिकार होतीं, उनके जुल्म सहती किन्तु उन्होंने अपने पैर नहीं खीचें।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

२. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १०६, ११०।

महिलाओं तथा पुलिस में ध्वज को लेकर अनेकों बार छीना - झपटी होती थी। पुलिस महिलाओं पर भी लाठी तथा डण्डे बरसाने में चूकती नहीं थी। स्वातन्त्र्य समर में सम्पन्न घराने की बहू-बेटियों ने खुलकर भाग लिया। वीर महिलाओ ने अनेकों बार जेल - यातना भी भोगी। महोबा की वीर महिलाओं में भुवनेश्वरी देवी, किशोरी देवी, रानी देवी, सरस्वती देवी तथा रुक्मिणी देवी ने आजादी की लड़ाई में खुलकर भाग लिया। बुन्देलखण्ड केसरी कभी भी जनपद के किसी भी एक स्थान से दो बार प्रकाशित नहीं हुआ। वह सदैव अलग - अलग स्थानों से छपता था। वह सचमुच पत्र न हो कर एक आन्दोलन था, जिसने आजादी के समर के लिए सदैव आश्वयक जमीन तैयार की। उसके माहात्म्य को इस रूप में आंका जा सकता है-

बुन्देलखण्ड केसरी प्रकाशन होता गहरौली में।
मन्नीलाल गुरुदव मिले थे ज्यो दामन चोली में।
गोपाल भाई सम्पादन करते पृथक एक खोली में।
सुखलाल जराखर वितरण करते लेकर के झोली में।
इस जनपद में वितरित होता उदय समय दिन करके।
बुन्देलखण्ड केसरी गरजता हर घर में जा करके।
सम्पादकीय लेखों की गर्जन - तर्जन को पढ़ करके।
निकल पड़े थे वीर सैकड़ों सेनानी बढ़ करके।।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

अंग्रेज पुलिस चक्कर में रहती पता नहीं कुछ पाती।

डण्डा पड़ै एस० पी० के तब रो - रोकर चिल्लाती।

बुन्देलखण्ड केसरी जब छपता तो उनकी फटती छाती।

नदी और नालों में फिरती हर घर में घुस जाती।

सिकरौधा - मगरौठ घेर कर देखैं नदी कछारैं।

खरबूजों की बेलों को भी ऊपर को उल्झारैं।

कैसी बनी मशीन प्रेस की कैसी है वह साली।

पता नहीं कैसे चलती है देते उसको गाली।।[१]

इस तरह से बुन्देलखण्ड केसरी की मशीन को कभी भी पुलिस पकड़ नहीं सकी।

बुन्देलखण्ड केसरी के प्रभावी अंक

बुन्देलखण्ड केसरी के कई ऐसे महत्वपूर्ण अंक निर्गत हुए, जिन्होंने जन चेतना के विकास को उत्तुंग पर लाकर खड़ा कर दिया। केसरी का एक अंक २४ जून १९३९ को प्रकाशित था, जिसमें छपी हुंकार नाम कविता ने स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए जन भावनाओं को बहुत उद्वेलित किया–

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

हुंकार

मानवता के सर्वनाश पर वैभव की दीवारें।

आज न्याय का गला काटती सत्ता की तलवारें।।

चाँदी के टुकड़ों पर पटता है जीवन का सौदा।

जग का मर्मच्छेद कर रहीं सतत् स्वार्थ की मारें।।

थिरक रहे हैं मंदिर - मस्जिद वैभव के इंगित पर।

और इधर शोषण की चोटें पड़ें हमारे सर पर।।

है परलोक तुम्हारा कैसा मीठा सा आश्वासन।

यह सन्तोष सुरा क्यों पीकर सोते रहें निरन्तर।।

हमें न बांध सकेंगी पर अब वे लोहे की कड़ियाँ।

हम जीवन में गूंथ रहे हैं सर्वनाश की लड़ियाँ।।

आँसू बनकर अब न बहेगा इन आँखों का पानी।

सावधान जग निकट आ रही हुंकारों की घड़ियाँ।।[१]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ११०।

आमन्त्रण

जीवन के सुखमय स्वप्नों से, जिसे मृत्यु हो प्यारी।

जलती हो जिसके अन्तर में, विप्लव की चिन्गारी।।

बलि वेदी पर हंस - हंस कर जो अपना शीश चढ़ाये।

मेरे साथ साहसी कोई हो ऐसा तो आये।।

इसी तरह बुन्देलखण्ड केसरी के १६३२ के अंक भी बड़े प्रभावी रहे।[१]

रण-भेरी

बढ़ो - बढ़ों हे भारत वीरो ऋषियों की प्यारी सन्तान।

स्वतन्त्रता के महासमर में हो जाओ सहर्ष बलिदान।।

धर्मयुद्ध में मरना भी है अमर स्वर्ग पद को पाना।

रणभेरी बज चुकी वीर वर पहिनों केसरिया बाना।।

माता के सच्चे पूतों की आज कसौटी होना है।

देखें कौन निकलता पीतल कौन निकलता सोना है।।

उतरेगा जो आज युद्ध में वही शूर है मरदाना।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

रणभेरी बज चुकी वीर वर पहिनों केसरिया बाना।।

यह मदान्ध शासन उलटा दो सत्य शांति मय वारों से।

अन्यायी सरकार मिटा दो अपने प्रबल प्रहारों से।।

स्वतन्त्रता की विजय पताका ऊँची फहराते जाना।

रणभेरी बज चुकी वीर वर पहिनों केसरिया बाना।।

बिना आत्म बलिदानों के कब किसने स्वतन्त्रता पायी।

लाखों भेट हुए माता के चरणों में तब वह आयी।।

आज हमें भी दुनिया को अपना पौरुष है दिखलाना।

रणभेरी बज चुकी वीर वर पहिनों केसरिया बाना।।

साठ वर्ष के बूढ़े गाँधी जेल में जा बैठे है आज।

कैसे तुम हो युवक कहलाते उर में तनिक न आती लाज।।

इस विडम्बना मय जीवन से तो अच्छा है मर जाना।

रणभेरी बज चुकी वीर वर पहिनों केसरिया बाना।।[१]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

वे क्या थे

तूफानों में घर था उनका आजादी के चेले थे।

पले हुए आपत्ति गोद में भूकम्पों से खेलो थे।।

त्याग एक भाई था उनका गले उसी के मेले थे।

प्रेमी थे या पागल थे वे या माँ के अलवेले थे।।

फूल और चन्दन की पूजा से माँ को न मनाते थे।

सर देने के लिए सदा वे बढ़कर आगे आते थे।।

संकट आने पर खिलते थे सुख में मुरझा जाते थे।

कट्टर थे वे कट्टरता के पथ पर पैर बढ़ाते थे।।[१]

अति और मसि के पुरोधा थे भगवानदास बालेन्दु अरजरिया

जहाँ तक महोबा के स्वातन्त्र्य संघर्ष में प्रेस के योगदान का प्रश्न है तो इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड केसरी बुन्देल भूमि का एक ऐसा पत्र-पुत्र था, जो हमीरपुर एवं महोबा जनपद में ही नहीं अपितु सारी बुन्देल धरा में प्रसार - पुरोधत्व के क्षेत्र में बहुत आगे रहा।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

२. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक), अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०-६६।

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया बुन्देलखण्ड केसरी के समर्पित साहित्यकार एवं श्रेष्ठ सम्पादन-शूर थे। इन्होंने केसरी में अनेक राष्ट्रवादी कवितायें लिखीं, जिनसे जन चेतना के प्रसार को एक नया आयाम मिला।

भगवानदास बालेन्दु एक राष्ट्रवादी कवि थे। इनका कवि - कर्म विशाल था। बालेन्दु जी ने १६३८ में अपनी पहली कृति 'किरण' को लोकार्पित किया, जिसमें उन्होनें निज के भावों की जो धारा बहायी है, वह निश्चित रूप से राष्ट्रोन्मुखी एवं पीड़ा-प्रधान है। बालेन्दु जी की दूसरी कृति 'श्रद्धा के फूल' १६६४ में प्रकाशित हुई। उनकी एक अप्रकाशित कृति 'बुन्देल भारती' भी है।[२]

बालेन्दु जी ने कुछ ऐसी राष्ट्र धर्मी रचनाओं को कलम की नोंक पर उतारा, जो राष्ट्र प्रेमियों के लिए नव आह्वान बन गया। उनकी कुछ रचनाओं का यहाँ उल्लेख करना समीचीन होगा। कलम के सिपाही बालेन्दु जी ने नव युवाओं का आह्वान अपनी एक कविता 'बढ़ो' के माध्यम से किया-

बढ़ो! बढ़ो! बढ़ो!
कर्म क्षेत्र में डट कर वीरो देश स्वतन्त्र करो।
आज दासता के बन्धन मे भारत माँ दुःख पाती है।
तीस कोटि सुत होकर हमको फिर भी लाज न आती है।

२. पं० द्वारिकेश मिर (संपादक), अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६६।

बढ़ो!　　बढ़ो!　　बढ़ो!

कर्म क्षेत्र में डट कर वीरो देश स्वतन्त्र करो।

बिगुल बजाकर के गाँधी ने हलचल विकट मचाया है।

सत्य - अहिंसा से स्वराज्य लेने का युद्ध रचाया है।

बढ़ो!　　बढ़ो!　　बढ़ो!

कर्म क्षेत्र में डट कर वीरो देश स्वतन्त्र करो।

तोपों संगीनों के सन्मुख ढेर लगे बलिदानों का।

जेल और फांसी के तख्तों पर हो खेल जवानों का।

इसी तरह बालेन्दु जी ने अपनी एक कविता 'सपूत' में भी सच्चा कौन है, का सुन्दर चित्रण किया है-

जो बलि वेदी पर जननि की, हो जाते बलिदान हैं।

जो सफल बनाते देश - तरु वे सपूत सन्तान हैं।।

इस तरह बालेन्दु जी ने अनेकों स्थानों पर कलम के माध्यम से अपनी आवाज को मुखरित किया है। देश की पीढ़ी में नवजीवन का संचार किया है।[१]

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६६।

निष्कर्ष

प्रेस को लोकतन्त्र में चौथा स्तम्भ माना जाता है, इससे प्रेस की कितनी बड़ी भूमिका होती है, समझा जा सकता है। सूरमाओं ने आन्दोलन को जहाँ भौतिक आधार प्रदान कर आगे बढ़ाया था, वहीं प्रेस ने आन्दोलन को मानसिक सहयोग प्रदान कर अग्रोन्मुख किया था।

संघर्षी अभियान में प्रेस की केन्द्रीय भूमिका रही है। प्रेस के प्रभाव को कभी भी किसी भी काल में कम नहीं आंका गया है। प्रेस सदैव दिश्दर्शक की भूमिका निभाता है।

महोबा के स्वातन्त्र्य संघर्ष को आगे बढ़ाने में प्रेस कभी भी पीछे नहीं रहा है। 'बुन्देलखण्ड केसरी' 'सत्या ग्रही' तथा 'क्रांतिकारी' जैसे समाचार पत्रों ने अग्निधर्मा आलेखों से महोबा में आजादी की अलख जगाने में बहुत शानदार सहभाग किया है। बुन्देलखण्ड केसरी में कुलपहाड़ के भगवानदास बालेन्दु के आलेख आँग्ल विरोधी आग उगलते थे। भगवानदास बालेन्दु कलम के भी सिपाही थे। महोबा के ही पं० बैजनाथ तिवारी, नाथूराम तिवारी एवं बृज गोपाल सक्सेना जैसे कई सेनानी साहित्य धर्मी भी थे, जिन्होंने समय - समय पर अपने विचारों से जन चेतना को जाग्रत किया है। इस अध्याय के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महोबबी धरती साहित्य धर्मी भी रही है। यहाँ के प्रेसकर्मी आन्दोलनकारियों से कम प्रभावशाली नहीं रहे।

सप्तम अध्याय

भारत छोड़ो आन्दोलन और महोबा

७

भारत छोड़ो आन्दोलन और महोबा

भारतीय स्वातन्त्र्य आन्दोलन के इतिहास में कुछ ऐसे पुरुषार्थी - पृष्ठ हैं, जिनमे संघर्ष की आधार शिला अंकित हैं। कालान्तर में उसी आधार भूमि में परतंत्रता - पटाक्षेप का पथ प्रशस्त हुआ। १८५७ के स्वातन्त्र्य संघर्ष ने जहाँ भारतीय आजादी के लिए पूर्व पीठिका तैयार की, वहीं १९१४-१५ के गदर आन्दोलन ने आजादी के अभीष्ट का सशक्त आलम्ब प्रदान किया, गाँधी - आन्दोलन ने उसे प्राप्य - पीयूष का पान कराया, जिसे पीकर स्वातन्त्र्य संघर्षी १९४२ के लोक युद्ध में साफल्य के सन्निकट पहुँच गये और पाँच वर्ष बाद १९४७ में प्राप्य को पाकर भारत का सदियों का संघर्ष साकार हो गया।

स्वातन्त्र्य समर में १९४२ का भारत छोड़ो आन्दोलन अपनी एक अलग पहचान रखता है। १९४२ का अगस्त आन्दोलन जन - जागरण का वह ज्वालामुखी था, जिसका लावा सारे देश में फैल गया था और उस लावा का विस्तार राष्ट्र भर में लौह - ललकार के रूप में परिलक्षित हुआ, जिसको गोरे बारूद के बांध द्वारा भी नहीं रोक पाये।[१]

---

१. अरूण चन्द्र गुप्ता, स्वतन्त्रता-संग्राम के पच्चीस वर्ष, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९९०, पृ०सं०- ७५।

१६४२ के आन्दोलन के अर्थ गाम्भीय को समझने के लिए उसके विकासेतिहास पर दृष्टिपात करना समीचीन होगा, तभी भारत छोड़ो आन्दोलन का अर्थ बोध हो पायेगा।

आन्दोलन की पूर्व पीठिका

१६४२ का भारत छोड़ो आन्दोलन फौरी कारणो की कोख से नहीं जन्मा था, अपितु इस आन्दोलन के अवतरण के मूल में क्रिप्स मिशन का स्वांग, जापानी आक्रमण का भय, आर्थिक असन्तोष और वर्मा में भारतीयों के साथ भेदभाव जैसी घटनायें मुख्यतः जवाबदेह थीं।

इलाहाबाद में ७ अगस्त १६४२ को कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक हुई थी, जिसमें आँग्ल सरकार की नीतियों को कोसा गया। गाँधी जी ने बैठक में अपने विचार रखते हुए कहा कि भारत की समस्या का एक मात्र हल अंग्रेजों द्वारा भारत छोड़ने में है। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने विचार रखते हुए कहा–[१]

१. ब्रिटेन भारत की रक्षा करने में असक्षम है, ब्रिटेन सिर्फ स्वार्थ का साथी है।

२. गोरों को भारत छोड़ देना चाहिए।

३. भारतीय आजादी के लिए वैदेशिक मदद की कोई आवश्यकता नहीं है।

---

१. नरेन्द्र भाई, करा या मरो, वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, १६७६, पृ०सं०- ३६।

४. जापान द्वारा भारत में आक्रमण के समय उसका प्रतिकार अहिंसात्मक साधनों द्वारा किया जायेगा।

५. भारत में विदेशी सैनिकों का ठहराव भारत हित में नहीं है।

जुलाई १९४२ में वर्धा कांग्रेस की कार्य समिति में गाँधी जी के विचारों का समर्थन किया गया। प्रस्ताव पारित कर कहा गया कि अंग्रेज भारत छोंड़ दें। ०७ अग्रस्त १९४२ को मुम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ, जिसमें गाँधी जी ने ०८ अगस्त १९४२ को अपना ऐतिहासिक भाषण किया। गाँधी जी हिन्दी तथा अंग्रेजी में कुल मिलाकर ढाई घण्टे बोले, जो आजादी के इतिहास में एक दुर्लभ दस्तावेज है। प्रत्यक्ष दर्शियों का यह कहना था कि पूरे ढाई घण्टे तक समिति में एक विशेष प्रकार का सन्नाटा रहा, ऐसा लग रहा था कि उनके हर शब्द से राष्ट्र की मर्म - चेतना अंगड़ाई ले रही है।[१]

आन्दोलन के कार्यक्रम

०९ अगस्त को गाँधी जी ने 'हरिजन' पत्र में विस्तार से प्रकाशित किया कि बयालीस के आन्दोलन को किस तरह से संचालित करना है, साथ ही मद्रास, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा अन्य प्रान्तों की कांग्रेस ने भी आन्दोलन चलाने के लिए गाँधी - नीति पर आधारित कार्यक्रम अनुमोदित किए-[२]

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ो आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९८५, पृ०सं०- ०६।

२. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००, पृ०सं०- ७६।

पहला चरण

१. नमक बनाना।

२. गैर कानूनी सभाओं की खुली सदस्यता।

३. आन्दोलन को रोकने वाले सभी आदेशों की अवहेलना।

दूसरा चरण

१. वकील वकालत त्याग दें।

२. छात्र विद्यालय तथा महाविद्यालय छोड़ दें।

३. जज अदालती पेशा त्याग दें।

४. सरकारी नौकर नौकरी छोड़ दें

तीसरा चरण

१. मजदूरों की हड़ताल।

चौथा चरण

१. विदेशी कपड़ों का बहिष्कार।

२. शराब की दुकानों का बहिष्कार।

३. वैदेशिक मुद्रा का व्यापार में बहिष्कार।[१]

---

१. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ८०।

पांचवां चरण

वे विषय जो हड़ताल तथा रोक से बाहर थे-

१. गाड़ियां रोकना।

२. बिना टिकट यात्रा करना।

३. टेलीफोन तथा टेलीग्राफ के तार काटना।

छठा चरण

१. कर न देना।

२. फौजो को रोकना।

३. आन्दोलनकारियों को कैद करने पर भी आन्दोलन को न रोकना।

गाँधी जी के १३ सूत्रीय कार्यक्रम

१. हड़ताल शान्त पूर्वक तथा नेताओं की कैद के विरोध में हो।

२. गाँवों तथा शहरों में कांग्रेस के भारत छोड़ो सन्देश का प्रसार तथा रोक का जन विरोध हो।

३. नमक बनाने का विरोध हो।

४. अहिंसात्मक तथा असहयोगात्मक आन्दोलन ही चलाये जायें।

५. आन्दोलन में छात्रों की प्रमुख भमिका।

६. सभी सरकारी कर्मचारी त्याग पत्र दें।[१]

---

१. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, पूर्व उद्धृत पृ०सं०- ८०, ८१।

७. हर फौजी अपनी आत्मा की आवाज के आधार पर कार्य करे।

८. राजा - महाराजा भी स्वातन्त्र्य आन्दोलन में भाग लें।

९. स्त्रियों के अहिंसात्मक आन्दोलन में ही भाग लेने पर बल दें।

१०. हर कोई 'करो या मरो' के नारा का अपने जीवन का उद्देश्य बनाये।

११. सभी वर्ग यथा हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई तथा पारसी लोग भी आन्दोलन में भाग लें।

१२. गाँधी जी की बंदी के बाद हर भारतीय स्वयं आन्दोलन करे।

१३. हर कोई चरखा चलाये, इससे भारतीय स्वातन्त्र्य समर सशक्त होगा।[१]

आन्दोलन का उत्कर्ष तथा अवसान

१९४२ के आन्दोलन से जुड़े हुए सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। सरकार ने निहत्थे आन्दोलनकारियों पर गोली चलवायी, जिससे जन सामान्य का उद्वेलित होना स्वाभाविक था। अहिंसात्मक आन्दोलन को सरकार के दमन ने ही हिंसावादी बनाया। सरकार का दमन सभी सीमाओं को तोड़ चुका था। सरकारी आँकड़ों के अनुसार १९४२ के आन्दोलन में २०९६ आदमी मारे गये, ८५२१ घायल हुए, ८४८३३ बंदी बनाये गये। गैर सरकारी आँकड़ों के अनुसार इस आन्दोलन में बहुत अधिक आन्दोलनकारी मारे गये।[२]

---

१. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गाँधी का सत्याग्रह, पूर्व उद्धृत पृ०सं०- ८१।

२. अरुण चन्द्र गुप्ता, स्वतंत्रता सग्रांम के पच्चीस वर्ष (१९२१ - १९४६), पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १२४।

इतना सब कुछ होने के बावजूद इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकते कि - अगस्त क्रांति से आँग्ल सरकार की चूलें हिल गयीं। यह भी आभास होने लगा कि वे दिन दूर नहीं जब अंग्रेजों को भारत छोंड़ना ही पड़ेगा।

महोबा की भूमिका

महोबा एक वीर भूमि है, यह वीर प्रसवा धरा कभी धड़ाम नहीं हुई है, हर कालखण्ड तथा चरण में अपनी एक अलग छाप छोंड़ी है। १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी महोबा का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं रहा, यहाँ के अनेकों स्वातन्त्र्य सेनानियों ने इस आन्दोलन में अहम् सहभाग किया है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।[1]

भारत छोड़ो आन्दोलन और रज्ज़ब अली आज़ाद

रज्ज़ब अली आज़ाद सचमुच एक ऐसा जुझारू ज़ांवाज़ रहा, जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता। आजाद का वैसे तो हर गाँधी - आन्दोलन में महत्वपूर्ण सहभाग रहा है किन्तु अगस्त क्रांति में भी ये अगुवा रहे। अगस्त-आन्दोलन में भाग लेने के कारण ये गोरी सरकार की आँख की किरकिरी बन गये थे।

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीप्रति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

४ नवम्बर १९४२ को हमीरपुर के तत्कालीन न्यायाधीश सुल्तान अहमद ने, जो आदेश निर्गत किया, उससे आजाद की अहमियत का अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है, आदेश में कहा गया- दफा ८७-८८ जाब्ता फौजदारी की कार्यवाही की जाये। रज्ज़ब अली आजाद १५ दिनों के भीतर हाजिर हों वरना उनको ०७ वर्ष की कठोर सजा एवं दो सौ रुपयों का जुर्माना किया जायेगा। आजाद उन दिनों टहनगा के जंगलों में थे, वे वहाँ गंभीर रूप से बीमार थे, आजाद को बीमारी हालत में गिरफ्तार कर लिया गया, उन्हें सात वर्ष का कारावास मिला।

इस तरह से यदि देखा जाय तो आजाद की आन्दोलन के अग्रसारण में अहम् भूमिका रही।

अगस्त क्रांति और विशेश्वर दयाल पटेरिया

महोबा के उन वीरों में विशेश्वर दयाल पटेरिया भी एक थे, जिन्होंने मातृभूमि की पूरे मनोयोगसे सेवा की। पटेरिया ने वैसे तो आजादी के हर गाँधी-आन्दोलन में भाग लिया था किन्तु १९४२ के आन्दोलन में उनकी एक अलग पहचान रही। विशेश्वर दयाल पटेरिया ने १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में आगे बढ कर हाथ बटाया। पटेरिया ने अगस्त क्रांति में अंग्रेजों को बहुत छकाया। गोरी सरकार ने पटेरिया को पकड़ने के लिए हर तरह की गोट बिछायी किन्तु सफल न हो सकी।[१]

१. स्वातन्त्र्य सेनानी विशेश्वर दयाल पटेरिया के पुत्र शांति कुमार पटेरिया से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

विशेश्वर दयाल पटेरिया तथा उनकी पत्नी सरयू देवी पटेरिया का आजादी में संघर्ष में सहयोग सराहनीय रहा।

बैजनाथ सक्सेना का वीरत्व

बैजनाथ सक्सेना भी महोबा के उन गिने - चुने सूरमाओं में से एक थे, जो मातृभूमि के मुक्ति आन्दोलन में पीछे नहीं रहे। सक्सेना ने आजादी के सभी आन्दोलन में अच्छी भूमिका निभायी किन्तु १९४२ के आन्दोलन में इनका प्रतिभाग प्रशंसनीय रहा। बैजनाथ सक्सेना अगस्त क्रांति में आगे रहे। इन्हें गोरी सरकार द्वारा बंदी बनाया गया। इन्हें हर आन्दोलन में भाग लेने के कारण कई बार जेल हुई।[1]

बृजगोपाल सक्सेना और अगस्त आन्दोलन

बृजगोपाल सक्सेना महोबा के एक ऐसे प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी रहे हैं, जो आजादी के एक अगुवा आन्दोलनकारी कहे जाते हैं। महोबा में १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन का बृजगोपाल सक्सेना ने ऐसे समय नेतृत्व किया था, जब देश, प्रान्त तथा जनपद के जाने-माने सभी आन्दोलनकारी नेता गिरफ्तार कर लिए गये थे। सक्सेना ने भूमिगत होकर आन्दोलन की अगुवायी की, गोरी सरकार ने बहुत प्रयास किया किन्तु सक्सेना को गिरफ्तार नहीं कर पायी थी।[2]

---

१. डॉ० भवानीदीन, समर गाथा, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- १३१।

२. स्वातन्त्र्य सेनानी बृजगोपाल सक्सेना के पुत्र बती बाबू से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

अगस्त-आन्दोलन और बल्देव प्रसाद गुप्त

बल्देव प्रसाद गुप्त ने भी १६४२ के अगस्त – आन्दोलन का उस समय फरार होकर संचालन किया था, जिस समय प्रमुख नेता जेलों के अन्दर थे। बल्देव प्रसाद गुप्त को गोरी सरकार ने गिरफ्तार करने का हर संभव प्रयास किया किन्तु विफल रही। बल्देव प्रसाद ने गाँधी जी के १३ सूत्रीय कार्यक्रम के कार्यान्यवन में हर संभव पहल की, उन्हें बहुत हद तक सफलता भी मिली, उन्होंने बैठकें कर जनता को अगस्त क्रांति के सम्बन्ध में समझाया। इस तरह अगस्त – क्रांति में गुप्त के प्रयास प्रशंसनीय रहे।[१]

भारत छोड़ो आन्दोलन और गंगा प्रसाद

गंगा प्रसाद की भारत छोड़ो आन्दोलन की अगुवायी महत्वपूर्ण रही है। इन पर यह भी आरोप था कि इन्होंने २६ सितम्बर १६४२ को महोबा की मुख्य बाजार तथा डी०ए०वी० हाई स्कूल के सामने कांग्रेस पम्पलेट वितरित किये थे। महोबा थाने के तत्कालीन थानाध्यक्ष फिदा हुसैन ने केस की जाँच की। थाने के द्वितीय अधिकारी माधव सिंह ने भी इस तथ्य की पुष्टि की कि गंगा प्रसाद ने पम्पलेट बाँटकर आन्दोलन का प्रचार-प्रसार किया।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त अभिलखों के आधार पर।

२. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल सं०- १७ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

गंगा प्रसाद पर आदेश दिनांक २८.०६.१६४२ के द्वारा मुकदमा संख्या १७६/४ के तहत धारा ३८ डी०आई०आर० के अन्तर्गत मुकदमा चला। गंगा प्रसाद ने स्वीकार किया कि मैंने पर्चे बाँटकर आन्दोलनात्मक कार्य किया है। गंगा प्रसाद को ढाई साल की जेल तथा सौ रुपये के जुर्माना की सजा हुई, जुर्माना अदान करने पर उन्हें ०६ माह की अतिरिक्त जेल हुई। इस तरह गंगा प्रसाद का भारत छोड़ो आन्दोलन में शानदार योगदान रहा, जिसे नकारा नहीं जा सकता। उनका संघर्षी अनुदाय याद रहेगा।

अगस्त - आन्दोलन और जुझार सिंह

जुझार सिंह श्रीनगर थाने के सिजहरी गाँव के निवासी थे, जिनकी १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में अच्छी भूमिका रही। जुझार सिंह ने २० अक्टूबर १६४२ को महोबा के मुख्य बाजार के दुकानदारों को प्रेरित कर सत्याग्रह में भाग लेने के लिए आग्रह किया था। इसकी पुष्टि महोबा थाने के तत्कालीन हेड कान्सटेबिल हरिहर शरन की जाँच से हुई, जिसमें उसने कहा कि जुझार सिंह ११ बजे दुकानदारों से कह रहा था कि सभी दुकानदार अपनी दुकानें बंद कर आन्दोलन में भाग लें। जुझार सिंह की हीरा सिंह तथा गुलाब सिंह नामक व्यक्ति ने भी उनके कार्य में मदद की। महोबा के तत्कालीन थानाध्यक्ष फिदा हुसैन ने जुझार सिंह पर लगे आरोपों की पुष्टि की।[१]

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से फाइल संख्या- २३ से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

जुझार सिंह पर आदेश दिनांक २६.१०.१६४२ के द्वारा मुकदमा संख्या १६८/४२ में धारा ३८, भारतीय रक्षा अधिनियम के अन्तर्गत मुकदमा चला। जुझार सिंह को डेढ़ वर्ष की कठोर जेल तथा सौ रुपये का जुर्माना किया गया। जुमार्ना अदा न करने पर इन्हें ०६ माह की अतिरिक्त जेल हुई। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि जुझार सिंह का अगस्त क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान रहा।[१]

निष्कर्ष

भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन विभिन्न विचार धाराओं से परिवेष्टित रहा है, कभी इसे उदारवादी नेतृत्व प्राप्त रहा है तो कभी अग्रवादी, कभी क्रांतिकारियों के हाथ में इसकी बागडोर रही है तो कभी गाँधी वादियों ने इसे संचालित किया है। भारत की आजादी के संघर्ष ने भी कई तरह के पड़ाव पार किये हैं, तब कहीं जाकर १६४७ में इसे स्थिर मुकाम प्राप्त हुआ।

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास में तीन ऐसी क्रांतियाँ हुई हैं, जिनके उल्लेख के बिना आजादी के संग्राम का इतिहास अधूरा माना जाता है। वे संघर्ष, जिन्होंने आँग्ल साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था, सदैव स्मरणीय रहेगें। उनमें १८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम, १६१५ का गदर - समर तथा १६४२ की अगस्त - क्रांति प्रमुख है।

---

१. जिला रिकार्ड हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख के आधार पर।

गाँधी - आन्दोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे जनसामान्य की नब्ज को परखकर तदानुसार निदान करते थे। गाँधी जी की संघर्षी नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि थी कि उन्होंने अपने आन्दोलनों को जनान्दोलन बना दिया था, यही उनकी सफलता का राज था।

इस अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में महोबा की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं रही। रज्ज़ब अली आजादी, भगवानदास बालेन्दु, बैजनाथ तिवारी तथा शंकर लाल जैन जैसे अनेक वीरों ने इस आन्दोलन में सहभाग किया।

अष्टम अध्याय

पहाड़िया काण्ड और महोबा

८

पहाड़िया काण्ड और महोबा

बुन्देल धरा के जनपदों में यदि जनपदवार स्वातन्त्र्य समर में संघर्षी सहभागिता का आकलन किया जाय तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि महोबा जनपद का स्वाधीनता संग्राम का ग्राफ बहुत ऊँचा रहा है। सत्तावनी समर से लेकर आजादी प्राप्ति तक की इस क्षेत्र की सामरिक भूमिका निश्चित रूप से महत्वपूर्ण रही है। महोबा के हर गाँव, कस्बा एवं नगर ने निष्ठा की नींव को युयुत्सी–ईंटों तथा शौर्य - सीमेण्ट से पूरित कर आजादी के भवन की भावी भूमिका में वरेण्य योगदान प्रदान किया। इस महोबबी मेदनी मे जिन गाँवों का स्वातन्त्र्य समर में महत्वपूर्ण सहभाग रहा, उनमें वीर प्रसू पहाड़िया को भुलाया नहीं जा सकता।

महोबा से लगभग ५२ तथा पनवाड़ी से ०६ कि०मी० दूरी पर पहाड़िया ब्यारजू है, जिसका अतीत वैभवशाली रहा है। शौर्य एवं साहस की सुगन्ध से सुवासित इस वसुधा में १६०७ में कायस्थ परिवर में एक ऐसे नौनिहाल का जन्म हुआ था, जिसे बचपन से ही देश धर्मी घुट्टी पीने को मिली और साथ ही विरासत में पौरुष का परिवेश मिला। फलतः बैजनाथ ने वीरता के वैज को लगाकर और नैष्ठिक नाथों का नेह पाकर अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल पर आगे चलकर बाबू बैजनाथ कहलाये।[१]

---

१. दशरथ जैन (प्रधान संपादक), बुन्देलखण्ड का स्वतंत्रता संग्राम, छतरपुर, बुन्देलखण्ड केसरी छत्रसाल स्मारक ट्रस्ट, १६६५, पृ०सं०- २६६।

नामकरण

बैजनाथ सक्सेना से पता करने पर मालूम हुआ कि मुस्करा से ०८ कि०मी० दूरी पर अवस्थित बिहुनी से चार लोधी राजपूत इस क्षेत्र से आगे आये थे। उनमें एक पहाड़िया थे, जिन्होंने पहाड़िया को बसाया था। विरजू सिंह ने ब्यारजू, दुलार सिंह ने दुलारा तथा टोलम सिंह ने टोला नामक गाँव बसाये। पहाड़िया के नामकरण से एक तथ्य और जुड़ा है कि यह गाँव मूलतः पहाड़ी पर अवस्थित है, इसी कारण इसे पहाड़िया कहा जाता है। पहाड़िया उस सोंधी माटी की साक्षी रहा है, जिसके छाँव तले पुरोधाओं की परवरिश हुई है।

महाराज पारीछत के काल में भैया सिंह नामक उनके एक सिपह सालार थे, जिन्होंने इस गाँव की पहाड़ी पर एक गढ़ी निर्मित करवायी थी। भैया सिंह का एक सहयोगी नूर खाँ पहाड़िया के किनारे से प्रवाहित हो रही वर्मा तथा गोंची नामक नदियों के संगम के किनारे बैठा था, उसी समय वहाँ से सुगिरा के शासक नौने अर्जुन सिंह का एक घुड़सवार उस संगम स्थल से निकला। संगम से निकलते समय घोड़े द्वारा कुछ छींटे नूर खाँ के ऊपर पड़ गये। इस पर उसने घुड़सवार से आपत्ति की, जिस पर उस सिपाही ने नौने अर्जुन सिंह के शौर्य का स्मरण कराते हुए नूर खाँ को धमकाया किन्तु नूर खाँ झुका नहीं। नूर खाँ ने आकर भैया सिंह जागीरदार से सारा हाल बताया, उधर घुड़सवार ने अर्जुन सिंह को घटना की जानकारी भेजी। अर्जुन सिंह ने पहाड़िया पर हमला बोल दिया।[१]

---

१. दशरथ जैन (प्रधान संपादक), बुन्देलखण्ड का स्वतंत्रता संग्राम, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- २६६, २६७।

नामकरण

बैजनाथ सक्सेना से पता करने पर मालूम हुआ कि मुस्करा से ०८ कि०मी० दूरी पर अवस्थित बिहुनी से चार लोधी राजपूत इस क्षेत्र से आगे आये थे। उनमें एक पहाड़िया थे, जिन्होंने पहाड़िया को बसाया था। विरजू सिंह ने ब्यारजू, दुलार सिंह ने दुलारा तथा टोलम सिंह ने टोला नामक गाँव बसाये। पहाड़िया के नामकरण से एक तथ्य और जुड़ा है कि यह गाँव मूलतः पहाड़ी पर अवस्थित है, इसी कारण इसे पहाड़िया कहा जाता है। पहाड़िया उस सोंधी माटी की साक्षी रहा है, जिसके छाँव तले पुरोधाओं की परवरिश हुई है।

महाराज पारीछत के काल में भैया सिंह नामक उनके एक सिपह सालार थे, जिन्होंने इस गाँव की पहाड़ी पर एक गढ़ी निर्मित करवायी थी। भैया सिंह का एक सहयोगी नूर खाँ पहाड़िया के किनारे से प्रवाहित हो रही वर्मा तथा गोंची नामक नदियों के संगम के किनारे बैठा था, उसी समय वहाँ से सुगिरा के शासक नौने अर्जुन सिंह का एक घुड़सवार उस संगम स्थल से निकला। संगम से निकलते समय घोड़े द्वारा कुछ छींटे नूर खाँ के ऊपर पड़ गये। इस पर उसने घुड़सवार से आपत्ति की, जिस पर उस सिपाही ने नौने अर्जुन सिंह के शौर्य का स्मरण कराते हुए नूर खाँ को धमकाया किन्तु नूर खाँ झुका नहीं। नूर खाँ ने आकर भैया सिंह जागीरदार से सारा हाल बताया, उधर घुड़सवार ने अर्जुन सिंह को घटना की जानकारी भेजी। अर्जुन सिंह ने पहाड़िया पर हमला बोल दिया।[१]

१. दशरथ जैन (प्रधान संपादक), बुन्देलखण्ड का स्वतंत्रता संग्राम, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- २६६, २६७।

भैया सिंह ने उसका सामना किया। पहाड़िया की गढ़ी से एक निशानेबाज ने निशाना साध कर एक ऐसा तीर चलाया कि अर्जुन सिंह के ऊपर आम की डाली गिर पड़ी, जिससे उनकी पगड़ी गिर गयी। निशानेबाज अगर चाहता तो अर्जुन सिंह पर वार भी कर सकता था किन्तु उसने अपने मालिक के निर्देशानुसार कार्य किया। अर्जुन सिंह ने खतरे को भाँप कर भैया सिंह से समझौता कर लिया और गाँव के बाहर की घास - फूस की झोपड़ियों को जलाकर अपनी शान को बचाते हुए सुगिरा वापस चला गया। इस तरह यह कहा जा सकता है कि पहाड़िया गाँव एक संघर्षी गाँव रहा है।[१]

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्षी इतिहास में १९४२ की अगस्त - क्रांति का एक अलग महत्व है। हमीरपुर के सेशन जज ने यहाँ के मुख्य अभियुक्तों को आजन्म कारावास की सजा सुनायी थी, जिसकी इलाहाबाद हाई कोर्ट में गोविन्द बल्लभ पन्त द्वारा अपील की गयी थी, जिसके द्वारा आजन्म सजा चार वर्ष की जेल में बदली थी। न्यायाधीश ने अपने निर्णय में कहा था कि- ''युद्ध चन्दे के शासकीय विरोध के कारण सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं को देशद्रोही घोषित किया जाता है।'' इसी निर्णय ने उन्हें राजनैतिक बंदियों का स्थान दिलाया।[२] रामगोपाल गुप्त एवं सालिग राम जैसे राष्ट्र धर्मी विधायकों की पहल से उस समय के जेल मंत्री रफी अहमद किदवई ने पहाड़िया काण्ड को राजनैतिक आन्दोलन घोषित कराया।

---

१. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६२।

२. वही, पृ०सं०- ६३।

गाँधी कालीन आन्दोलन में पहाड़िया की भूमिका

पहाड़िया एक ऐसा गाँव है जो स्वयं अभावों में भी रहकर राष्ट्र के प्रति सदैव भावना प्रधान रहा है। इस गाँव में अनेक ऐसे राष्ट्रधर्मी पुरुष हुए हैं, जिन्होंने अवसर पड़ने पर राष्ट्रहित में पूरी सिद्दत के साथ आगे आये है, उनमें गाँव, क्षेत्र तथा जनपद महोबा के एक प्रमुख पुरोधा बाबू बैजनाथ सक्सेना को कहा जा सकता है।[१]

इनका पहाड़िया के एक प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में जन्म हुआ था। सक्सेना जीवन के ऊषाकाल में ही देशधर्मी भावों को आत्मसात कर चुके थे। बैजनाथ सक्सेना ने १९२४ में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की और उसके बाद गाँव तथा आस-पास के क्षेत्रों में आजादी की अलख जगाने लगे। सक्सेना ने १९२४ में कानपुर में आयोजित काग्रेस - अधिवेशन में सहभागी होकर जनपद का प्रतिनिधित्व किया। सक्सेना ने गाँधी जी के सभी आन्दोलनों में पूरे मनोयोग के साथ भाग लिया, वे १९३० के सविनय अवज्ञा आन्दोलन, १९३२ के किसान आन्दोलन तथा १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में अग्रणी रहे। इसके साथ ही गाँव के अन्य स्वातन्त्र्य सेनानियों का भी कम योगदान नहीं रहा।[२]

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

१९४२ का अगस्त - समर और पहाड़िया

महोबा पहले हमीरपुर जनपद का ही एक हिस्सा था, इसलिए लगभग हर योगदान में हम्मीरी धरा के सूरमाओं का उल्लेख आना स्वाभाविक है। हम्मीर क्षेत्र के वीरों में पं० परमानंद, दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपति सहाय राव एवं नवल किशोर गुरुदेव, मन्नीलाल गुरुदेव, रानी राजेन्द्र कुमारी एवं रामगोपाल गुप्त का अगस्त-क्रांति में शानदार सहभाग रहा। इसके साथ ही पहाड़िया के प्रमुख पुरोधा बाबू बैजनाथ सक्सेना का भी इस आन्दोलन में अनुदाय आधा अधूरा नहीं रहा। इन्हें १९४२ के स्वातन्त्र्य संघर्ष में हीरा सिंह भदौरिया नामक थानाध्यक्ष ने कैद किया था। ये हमीरपुर जेल में तीन माह, नैनी जेल में एक वर्ष तक रहे। सक्सेना नवम्बर १९४३ में जेल से रिहा हुए।

युद्ध चन्दा और पहाड़िया का ऐतिहासिक समर

परतंत्र भारत पहले विश्व-युद्ध के जान - माल की क्षति से उबर नहीं पाया था कि १९३९ में उसे दूसरे महा युद्ध की विभीषिका से जूझना पड़ा। इस युद्ध में ब्रिटिश सरकार ने भारत से युद्ध चन्दा वसूलना प्रारम्भ किया, जिसका गाँधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक विरोध हुआ।[१]

---

१. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६३।

पहाड़िया के बाबू बैजनाथ सक्सेना ने इस सन्दर्भ में पहाड़िया गाँव में युद्ध चन्दा विरोधी आन्दोलन का नेतृत्व किया। सक्सेना ने गाँव वालों से कहा कि अंग्रेजों को चन्दा के नाम पर एक पायी भी नहीं देना, परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों को इस गाँव से चंदा के नाम पर कोई सहयोग नहीं मिला। महोबा के नायब तहसीलदार इफ्तियार अली अहमद ०५ जनवरी १९४४ को चन्दा वसूलने की दृष्टि से पहाड़िया आये, गाँव वालों ने चंदा देने से मना कर दिया। नायब तहसीलदार इससे नाराज होकर गोरे सिपाहियों को गाँव वालों की पिटाई का आदेश दिया। इस घटना की जानकारी मिलने पर ब्यारजो के वीर सपूत छक्की लाल राजपूत दस-बारह क्रांतिकारियों को लेकर आ गये। नायब तहसीलदार तथा सिपाहियों की अच्छी-खासी मरम्मत (पिटाई) की गयी।

युद्ध चन्दा विरोधी इस संघर्ष का नेतृत्व बेनी प्रसाद सक्सेना, बैजनाथ सक्सेना, छक्की लाल राजपूत, सुखई दाऊ तथा वीर सिंह लोधी ने किया, जिनका सारे गाँव ने साथ दिया। नायब तहसीलदार ने जान खतरे में पड़ती देखकर पुलिस वालों को गोली चलाने का आदेश दिया। इस गोली काण्ड में पहाड़िया तथा आस - पास के गाँव के वीर सिंह लोधी, लोटन, राम दयाल, फदाली तथा ठाकुरदास मिश्र बुरी तरह घायल हुए। इस घटना को गोरी सरकार के दम्भी अधिकारी भला कैसे पचा पाते। ०६ जनवरी १९४४ को हमीरपुर के तत्कालीन कलेक्टर सुल्तान अहमद बेग तथा एस०पी० श्याम सिंह ने पनवाड़ी के थाना प्रभारी अब्दुल रहमान को आदेश दिया कि गाँव वालों को जाकर सबक सिखाओ।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी बाबू बैजनाथ सक्सेना से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

अब्दुल रहमान दो सौ पुलिस वालों के साथ जाकर पहाड़िया गाँव को घेर लिया। उसने बेनी प्रसाद सक्सेना की जबरदस्त पिटाई करवायी। कलेक्टर ने एस०पी० से कहा कि पहाड़िया तथा ब्यारजो गाँव को आग लगा दो, किन्तु एस०पी० को डी०एम० का लिखित आदेश न मिलने पर गाँव में आग नहीं लगायी जा सकी। डी०एम० तथा एस०पी० ने आपस में विचार-विमर्श कर पूरे गाँव के ऊपर चौबीस हजार रुपयों का जुर्माना ठोक दिया। इस कार्यवाही के पहले क्रम में रज्जू लोधी, बल्देव कुम्हार तथा बेनी प्रसाद के घर कुर्की कर ली गयी।

युद्ध चन्दा के विरोध में पुलिस ने कई राउण्ड गोली चलायी, जिसमें ४५ लोग बुरी तरह से घायल हुए, इस काण्ड में ८२ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। इस रक्तरंजित संघर्ष में बंदी वीरों में से पहाड़िया के सुखई दाऊ लोधी की हमीरपुर जेल में मृत्यु हो गयी। उनकी इस शहादत पर पहाड़िया गाँव को आज भी गर्व है।[१]

केस की पैरवी

पहाड़िया गोलीकाण्ड के बाद बैजनाथ सक्सेना फरार हो गये। वे फरारी अवस्था में इलाहाबाद के नामी - गिरामी वकील कैलाश नाथ काटजू से मिले, उन्हें सारी घटना से अवगत कराया। काटजू ने तत्कालीन गवर्नर मारिस हैलिट से मिलकर चौबीस हजार के सामूहिक जुर्माना को माफ करने का अनुरोध किया, जिसे गवर्नर ने गौरहारी आकर २१ जनवरी १६४४ को माफ कर दिया।

---

१. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६४।

०८ फरवरी १९४४ को बैजनाथ सक्सेना ने डी०एम० के सामने आत्म समर्पण कर दिया। इस काण्ड से जुडे पहाड़िया तथा आस - पास के गाँव वालों की तीन माह से अधिक की जेल हुई। जेल की सजा पाने वालों में बैजनाथ सक्सेना, टीकाराम साहू, मातादीन, धनीराम, सुखई दाऊ, बल्देव कुम्हार, ठाकुरदास, लोटन, रज्जू लोधी, वीर सिंह एवं राम दयाल के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस तरह पहाड़िया एक ऐसा गाँव है, जिसका आँग्ल विरोधी संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान रहा, इस गाँव की पुरुषार्थी प्रतिभागिता को भुलाया नहीं जा सकता।[1]

निष्कर्ष

१९४७ में आजादी प्राप्ति से ठीक पहले भी कुछ ऐसे आँग्ल विरोधी आन्दोलन हुए हैं, जिन्हें इतिहास में यथोचित स्थान नहीं मिला। उनमें से कुछ किसान तथा युद्ध चन्दा विरोधी आन्दोलन प्रमुख रहे हैं। १९३९ में द्वितीय विश्व युद्ध शुरु हुआ था। आँग्ल सरकार ने भारत को सदैव कोरे आश्वासनों के आधार पर मूर्ख बनाया है। १९३९ के विश्व युद्ध काल में अंग्रेजों ने भारत पर चंदा का बोझ लादने में भी नहीं चूक की। गोरों ने भारतीयों से चंदा वसूलना प्रारंभ किया, जिसका भारतीयों ने विरोध किया, यह सिलसिला पूरे देश में चल रहा था।

---

१. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, पूर्व उद्धृत, पृ०सं०- ६४।

इस क्रम में महोबा के एक जुझारू गाँव पहाड़िया का कम योगदान नहीं रहा। इस गाँव में वारफण्ड के विरोध में गोरो तथा जनता के संघर्ष बीच संघर्ष हुआ था, जिसमें पुलिस ने जनता पर गोली चलायी थी, जिसमें ४५ वीरों को चोंटे आयी थीं। इनमें से सुखई दाऊ लोधी गंभीर रूप से घायल हुआ था, जिसकी जेल में मृत्यु हो गयी थी। इस बलिदानी पर आज भी पहाड़िया गाँव को गर्व है।

छक्की लाल राजपूत, बाबू बैजनाथ सक्सेना, वीर सिंह लोधी, सुखई दाऊ तथा बल्देव कुम्हार इस वार फण्ड आन्दोलन के अगुवा कार थे। इस अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महोबा की आन्दोलन के हर चरण में प्रभावी भूमिका रही है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

नवम् अध्याय

उपसंहार

9

उपसंहार

देश की आजादी की आयुधी - अर्चना में यथा संभव आसेतु हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक हर क्षेत्र ने अपने क्षात्र धर्म का अर्घ्य दिया है, कहीं - कहीं पर पुरोधत्व के प्रतिभाग का प्रतिशत अधिक रहा है तो कहीं पर कम। भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के फलक में वैसे तो हर क्षेत्र का अपना - अपना स्थान निर्धारित है किन्तु कुछ ऐसे भी क्षेत्र रहे हैं, जिन्होंने हिन्दुस्तान की तवारीख में अपनी अलग पहचान बनायी है। इस दृष्टि से महोबा जनपद का आगणन किया जा सकता है। वीर भूमि के रूप में विश्रुत महोबा का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में एक अलग स्थान है।

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के आलोक में बुन्देल क्षेत्र के क्षात्रधर्म का उल्लेख तो इतिहास में दृष्टि गोचर होता है किन्तु उसके जनपदों में हमीरपुर एवं महोबा जनपद का १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम में योगदान का विवेचन बहुत कम दृष्टव्य है। स्वातन्त्र्य समर के अनुशीलन से यह तथ्य सुस्पष्ट हुआ है कि महोबा का सत्तावनी संघर्ष का ग्राफ बहुत ऊँचा है। महोबा जनपद के अजनर थाने के गाँव झींझन के महान दिमान देशपत बुन्देला ने वस्तुतः १८५७ के महान संग्राम में गोरी सरकार के नाक में दम कर रखा था।

दिमान देशपत को स्वातन्त्र्य सघर्ष की युयुत्स-यज्ञ में उसके भाई नन्हे दिमान, भान्जा कुन्जलशाह, भतीजे रघुनाथ सिंह तथा अन्य क्रांतिवीरों में फरजंद अली, बरवत सिंह, मुकुन्द सिंह तथा बरजोर सिंह आदि ने संघर्षी सहभाग की समिधायें डाली थीं।

देशपत द्वारा विटलॉक साबर्स, रिशटन, जान्सटर्न, टी०राइट तथा प्राइमरोज जैसे जाने - माने आँग्ल सेना पतियों से टक्कर लेना तथा कईयों को पराजित करना उसके रण तथा बुद्धि कौशल के जीवन्त उदाहरण हैं। जैतपुर के महाराज पारीछत की रानी फत्तमवीर ने भी १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम में कम योगदान नहीं प्रदान किया। उसने भी अंग्रेजों से लोहा लेकर आपनी लौह - ललकार से उनको कई बार अवगत कराया। प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत उन संघर्षी शूरों का उल्लेख है, जिनका इतिहास में स्फुट उल्लेख भी नहीं मिलता। देशपत बुन्देला ने १८५८ से १८६३ तक बगौरा, मुरारी, चरखारी रियासत के राजा रतन सिंह तथा राठ, झींझन एवं फतेहपुर जैसे कई स्थानों पर आँग्ल परस्त राजाओं तथा आँग्ल सेनापतियों से जिस सिद्दत के साथ संघर्ष किया, वह वस्तुतः हिन्दुस्तान की तवारीखों में कम मिलता है।

उसके साथ दौनी गाँव के मिहीलाल पुरोहित द्वारा यदि भितरघात न किया जाता तो बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों के न पैर जम पाते और न ही वे भारत को अधिक दिनों तक गुलाम बना कर रख सकते थे।

इस तरह से निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि १८५७ की स्वातन्त्र्य समर में प्रतिभागिता की दृष्टि से महोबा पौरुष के ऊँचे पायदान पर अवस्थित है।

भारतीय आजादी के लिए संघर्षों में गाँधी जी द्वारा लड़े गये युद्धों में असहयोग आन्दोलन अपनी तरह का लड़ा गया एक अलग प्रकार का अहिंसक सग्राम था। वैश्विक समरों में गाँधी जी के अहिंसक संग्रामों का कोई सानी नहीं था। गाँधी जी के स्वातन्त्र्य आन्दोलनों में वैसे तो पूरे बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) ने प्रभावी पहल की किन्तु इस क्षेत्र में महोबा पीछे नहीं रहा। यहाँ के पं० बैजनाथ तिवारी, नाथूराम तिवारी, रज्ज़ब अली आजाद, बैजनाथ सक्सेना, दीनदयाल तिवारी, पूरनलाल अग्रवाल, बृजगोपाल सक्सेना तथा विशेश्वर दयाल पटेरिया जैसे अनेक स्वातन्त्र्य शूरों ने गाँधी जी के आन्दोलनों में अग्रणी भूमिका निभायी।

कुलपहाड़ के भगवानदास बालेन्दु अरजरिया, उनकी पत्नी किशोरी देवी अरजरिया, सरयू देवी पटेरिया, भुवनेश्वरी देवी सहित अनेक वीर महिलाऐं तथा पनवाड़ी, अजनर, महोब कंठ तथा श्रीनगर थाने के कई गाँवों के वीरों ने आजादी की लडाई में आगे आने में जरा भी संकोच नहीं किया, वे बिना किसी लाग - लपेट के आन्दोलन में कूद पड़े और पूरे मनोयोग से संघर्ष किया।

इस अध्याय में किये अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि महोबा जनपद के स्वातन्त्र्य सेनानियों का संघर्षी सहभाग किसी भी दृष्टि से कम नहीं रहा, विभिन्न अभिलेखों, सर्वेक्षणों तथा साक्षात्कारों से इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि महोबा की धरा अग्निधर्मा रही है और यहाँ के शूरों ने असहयोग आन्दोलन की अगुवाई की है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना १८८५ में हुई थी। कांग्रेस की स्थापना के बाद भारतीय आजादी के संघर्ष को एक बैनर मिल गया था, जिसके तले देश के अनेक तरस्वियों ने जुझारू संघर्ष किये। कांग्रेस प्रतिवर्ष देश के किसी न किसी महानगर या कहीं भी कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन आयोजित करती थी, अधिवेशन एक तरह से पुरोधाओं का पंचांग होता था। इसलिए देश भर से नेता तथा अन्य कार्यकर्ता एवं सेनानी अधिवेशन में अवश्य ही शामिल होते थे, ताकि उन्हें वहाँ से कार्यों का कलेण्डर प्राप्त हो जाय।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में वैसे बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) का सदैव प्रतिनिधत्व होता था, अधिवेशन में हर जनपद से प्रतिनिधि पहुँचते थे। जहाँ तक महोबा की अधिवेशन में प्रतिभागिता का प्रश्न है तो इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन इस तथ्य कि पुष्टि करता है कि हर कांग्रेस अधिवेशन में महोबा का प्रतिनिधित्व रहा है, जहाँ से दिशा – निर्देश लेकर स्वातन्त्र्य सेनानियों ने हर आन्दोलन में और जोर-शोर से प्रतिभाग किया है।

महोबा के शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, पं० बैजनाथ तिवारी एवं भगवानदास बालेन्दु अरजरिया जैसे अनेक स्वातन्त्र्य वीर हुए हैं, जिन्होंने अधिवेशन को राष्ट्रीय आरेख में शामिल किया है।

आजादी के संघर्ष काल में राष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह से कांग्रेस के अधिवेशन सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए भावी आन्दोलन के स्वरूप हेतु कलेण्डर घोषित करते थे, उसी तरह से जिले स्तर पर आयोजित जिला राजनैतिक आन्दोलनों के आयोजन का भी उद्देश्य यही रहता था कि कार्यकर्ताओं के लिए जिले स्तर पर दिशा - निर्देश जारी हो जायें और उन्हीं के अनुसार स्वातन्त्र्य आन्दोलन का अनुगमन अनुमन्य हो।

महोबा चूँकि पहले हमीरपुर जनपद का एक भाग था। इस कारण हमीरपुर के सहभाग में महोबा की प्रतिभागिता शामिल रहती थी। हमीरपुर जनपद के जराखर तथा गहरौली गाँव में आयोजित जिला राजनैतिक कान्फ्रेस से जिले के स्वातन्त्र्य संग्राम को नई दिशा मिली थी। इन सम्मेलनों में महोबा के बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन तथा भगवानदास बालेन्दु अरजरिया इत्यादि सहभागियों का शानदार अनुदाय रहा।

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि जिला राजनैतिक सम्मेलनों की संस्कृति महोबा में भी रही। झाँसी के १९२१ के राजनैतिक सम्मेलन में महोबा का प्रतिनिधित्व हुआ था।

इसके अतिरिक्त महोबा में १६२२ में भी राजनैतिक सम्मेलन हुआ था, जिसके आयोजन के मूल में महोबा के पं० बैजनाथ तिवारी, शंकर लाल जैन, चुन्नी लाल जैन, भगवानदास बालेन्दु अरजरिया सहित कई स्वातन्त्र्य सेनानियों का सराहनीय सहयोग रहा।

गाँधी जी द्वारा आयोजित आन्दोलनों के कई चरण रहे हैं, जिनमें असहयोग आन्दोलन से लेकर १६४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन तक लगभग ढाई दशकों के संघर्षी - सफर ने कई उतार - चढ़ाव देखे हैं। गाँधी - आन्दोलन में १६३० में आयोजित सविनय अवज्ञा आन्दोलन का अपना एक अलग महत्व है। इस काल का नमक - आन्दोलन अपनी तरह का एक अलग आन्दोलन था, जिससे सारे देश का भावनात्मक जुड़ाव हो गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन गाँधी जी के आन्दोलन में एक प्रभावी पहल थी, जिसमें सारे देश ने सिरकत की थी। इस दृष्टि से महोबा पीछे नहीं रहा। इस अध्याय के अध्ययन से यह उजागर हुआ है कि यहाँ के बहुत से सेनानियों के सहभाग का कहीं पर उल्लेख ही नहीं है, जबकि अनुल्लिखित वीरों की संघर्ष में बराबर की हिस्सेदारी रही है। जिला रिकार्ड के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट हुआ है महोबा के बहुत से महावीरों ने आन्दोलन की प्रभावी अगुवाई की है और हँसते - हँसते पुलिस यातनाओं को झेला है।

कुछ वीरों का, जिनका उल्लेख इतिहास में नहीं है, प्रतिभाग निःसन्देह आन्दोलनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है, उनमें से मोहन लाल, हर प्रसाद, सोहन लाल, काशी प्रसाद, बाल मुकुन्द, छोटे लाल, राम नारायण, शिवराम, गौरीशंकर, मुकुन्दलाल, देवी सिंह, जालिम ढीमर, हरजू, नाथूराम, माधव, भरत जी एवं हल्कू जैसे अनेक शूर उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने बिना किसी श्लाघा के संघर्ष कर देश को आजाद कराने में योगदान प्रदान किया।

प्रेस को लोकतन्त्र में चौथा स्तम्भ माना जाता है, इससे प्रेस की कितनी बड़ी भूमिका होती है, समझा जा सकता है। सूरमाओं ने आन्दोलन को जहाँ भौतिक आधार प्रदान कर आगे बढ़ाया था, वहीं प्रेस ने आन्दोलन को मानसिक सहयोग प्रदान कर अग्रोन्मुख किया था। संघर्षी अभियान में प्रेस की केन्द्रीय भूमिका रही है। प्रेस के प्रभाव को कभी भी किसी भी काल में कम नहीं आंका गया है। प्रेस सदैव दिश्दर्शक की भूमिका निभाता है।

महोबा के स्वातन्त्र्य संघर्ष को आगे बढ़ाने में प्रेस कभी भी पीछे नहीं रहा है। 'बुन्देलखण्ड केसरी' 'सत्या ग्रही' तथा 'क्रांतिकारी' जैसे समाचार पत्रों ने अग्निधर्मा आलेखों से महोबा में आजादी की अलख जगाने में बहुत शानदार सहभाग किया है। बुन्देलखण्ड केसरी में कुलपहाड़ के भगवानदास बालेन्दु के आलेख आँग्ल विरोधी आग उगलते थे। भगवानदास बालेन्दु कलम के भी सिपाही थे।

महोबा के ही पं० बैजनाथ तिवारी, नाथूराम तिवारी एवं बृज गोपाल सक्सेना जैसे कई सेनानी साहित्य धर्मी भी थे, जिन्होंने समय - समय पर अपने विचारों से जन चेतना को जाग्रत किया है। इस अध्याय के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महोबबी धरती साहित्य धर्मी भी रही है। यहाँ के प्रेस कर्मी आन्दोलनकारियों से कम प्रभावशाली नहीं रहे।

भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन विभिन्न विचार धाराओं से परिवेष्टित रहा है, कभी इसे उदारवादी नेतृत्व प्राप्त रहा है तो कभी अग्रवादी, कभी क्रांतिकारियों के हाथ में इसकी बागडोर रही है तो कभी गाँधी वादियों ने इसे संचालित किया है। भारत की आजादी के संघर्ष ने भी कई तरह के पड़ाव पार किये हैं, तब कहीं जाकर १९४७ में इसे स्थिर मुकाम प्राप्त हुआ।

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास में तीन ऐसी क्रांतियाँ हुई हैं, जिनके उल्लेख के बिना आजादी के संग्राम का इतिहास अधूरा माना जाता है। वे संघर्ष, जिन्होंने आँग्ल साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था, सदैव स्मरणीय रहेगें। उनमें १८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम, १९१५ का गदर - समर तथा १९४२ की अगस्त - क्रांति प्रमुख है। गाँधी - आन्दोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे जनसामान्य की नब्ज को परखकर तदानुसार निदान करते थे। गाँधी जी की संघर्षी नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि थी कि उन्होंने अपने आन्दोलनों को जनान्दोलन बना दिया था। यही उनकी सफलता का राज था।

इस अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में महोबा की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं रही। रज्ज़ब अली आजादी, भगवानदास बालेन्दु, बैजनाथ तिवारी तथा शंकर लाल जैन जैसे अनेक वीरों ने इस आन्दोलन में सहभाग किया।

१९४७ में आजादी प्राप्ति से ठीक पहले भी कुछ ऐसे आँग्ल विरोधी आन्दोलन हुए हैं, जिन्हें इतिहास में यथोचित स्थान नहीं मिला। उनमें से कुछ किसान तथा युद्ध चन्दा विरोधी आन्दोलन प्रमुख रहे हैं। १९३९ में द्वितीय विश्व युद्ध शुरु हुआ था। आँग्ल सरकार ने भारत को सदैव कोरे आश्वासनों के आधार पर मूर्ख बनाया है। १९३९ के विश्व युद्ध काल में अंग्रेजों ने भारत पर चंदा का बोझ लादने में भी नहीं चूक की। गोरों ने भारतीयों से चंदा वसूलना प्रारंभ किया, जिसका भारतीयों ने विरोध किया, यह सिलसिला पूरे देश में चल रहा था।

इस क्रम में महोबा के एक जुझारू गाँव पहाड़िया का कम योगदान नहीं रहा। इस गाँव में वारफण्ड के विरोध में गोरो तथा जनता के संघर्ष बीच संघर्ष हुआ था, जिसमें पुलिस ने जनता पर गोली चलायी थी, जिसमें ४५ वीरों को चोंटे आयी थीं। इनमें से सुखई दाऊ लोधी गंभीर रूप से घायल हुआ था, जिसकी जेल में मृत्यु हो गयी थी। इस बलिदानी पर आज भी पहाड़िया गाँव को गर्व है।

छक्की लाल राजपूत, बाबू बैजनाथ सक्सेना, वीर सिंह लोधी, सुखई दाऊ तथा बल्देव कुम्हार इस वार फण्ड आन्दोलन के अगुवा कार थे। इस अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महोबा की आन्दोलन के हर चरण में प्रभावी भूमिका रही है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

परिशिष्ट

स्वातन्त्र्य सेनानियों की सूची

क्रमांक	नाम	स्थान/थाना
१.	पं० बैजनाथ तिवारी	महोबा
२.	नाथूराम तिवारी	महोबा
३.	शंकर लाल जैन	महोबा
४.	बृज गोपाल सक्सेना	महोबा
५.	बल्देव प्रसाद गुप्त	महोबा
६.	विशेश्वर दयाल पटेरिया	महोबा
७.	भगवानदास बालेन्दु अरजरिया	कुलपहाड़
८.	चुन्नी लाल जैन	महोबा
९.	मुंशी मण्टी लाल	जैतपुर
१०.	लक्ष्मी प्रसाद	महोबा
११.	बूचा	महोबा
१२.	विश्वम्भर नाथ	महोबा
१३.	मनप्यारे	महोबा
१४.	रघुनाथ प्रसाद	महोबा
१५.	रामगोपाल	महोबा
१६.	घासीराम	महोबा
१७.	मुरलीधर	महोबा

१८.	लक्ष्मन प्रसाद	महोबा
१९.	हर प्रसाद	महोबा
२०.	घसीटामल	महोबा
२१.	जमनादास	महोबा
२२.	हजारी लाल	महोबा
२३.	शंकर लाल	महोबा
२४.	कन्हैया लाल	महोबा
२५.	गया प्रसाद	महोबा
२६.	बद्दू लाल	महोबा
२७.	गंगा प्रसाद	मझगवां, महोबा
२८.	हीरालाल उर्फ हरलाल	पवा, महोबा
२९.	मथुरा	महोबा
३०.	जुझार सिंह	सिजहरी, महोबा
३१.	बाबूराम	महोबा
३२.	दुर्गा	महोबा
३३.	छुट्टू	महोबा
३४.	मान खाँ	महोबकण्ठ
३५.	बाबू लाल	महोबकण्ठ
३६.	सुखदयाल	महोबकण्ठ

३७.	गंगाराम	महोबकण्ठ
३८.	चिरंजी लाल	टोला पांतर, महोबा
३६.	छवि लाल	महोबकण्ठ
४०.	पृथ्वी सिंह	महोबकण्ठ
४१.	सिद्ध गोपाल	महोकण्ठ
४२.	टीकाराम	महोबकण्ठ
४३.	धनीराम, परशुराम, जुकिया	महोबकण्ठ
४४.	बिहारी लाल	महोबकण्ठ
४५.	पारीछत	महोबकण्ठ
४६.	बाबूलाल	महोबकण्ठ
४७.	बालीराम	कुलपहाड़
४८.	मोहन लाल	महुआ बाँध
४६.	दिबिया तेली	कुलपहाड़
५०.	स्वामी प्रसाद	कुलपहाड़
५१.	घसीटा	कुलपहाड़
५२.	हर प्रसाद	लुहारी
५३.	सोहन लाल, काशी प्रसाद, बाल मुकुन्द	मुडेरी
५४.	छोटे लाल, राम नारायन	
	शिवराम, गौरी शंकर	मुडेरी

५५.	लीलाधर,	मुडेरी
५६.	मुकुन्द लाल	कुलपहाड़
५७.	जालिम	मुडेरी
५८.	हरजू	अकठौहा
५६.	नाथूराम	सिवान
६०.	माधव	कुलपहाड़
६१.	भरत जी	कुलपहाड़
६२	हरीदास	कुलपहाड़
६३.	हल्कू	कुलपहाड़
६४.	लक्ष्मन	कुलपहाड़
६५.	सर्मन	कुलपहाड़
६६.	क्षमाधर	कुलपहाड़
६७.	रामनाथ	कुलपहाड़
६८.	मुल्लू	पनवाड़ी
६६.	गोरेलाल	पनवाड़ी
७०.	अवधेश सिंह	पनवाड़ी
७१.	गफूर	पनवाड़ी
७२.	मनमोहन, गोरेलाल	पनवाड़ी
७३.	जियालाल	पनवाड़ी

७४.	चरनदास	पनवाड़ी
७५.	कल्याण, शिवदयाल	
	कटोरा, कलैया	पनवाड़ी
७६.	चुन्नी	पनवाड़ी
७७.	भवानीदीन, सूरज सिंह, रामप्रसाद	पनवाड़ी
७८.	मातादीन	पनवाड़ी
७६.	राजाराम पंखिया	पनवाड़ी
८०.	बलराम	पनवाड़ी
८१.	चुंटा	पनवाड़ी
८२.	राम प्रसाद	पनवाड़ी
८३	हर प्रसाद	पनवाड़ी
८४	शिवदीन	पनवाड़ी
८५	मुरलीदास	पनवाड़ी
८६.	रतन सिंह	पनवाड़ी
८७.	बिहारी	पनवाड़ी
८८.	तुलसीराम	पनवाड़ी
८६.	गोकुल, बैजनाथ, गोविन्दा	पनवाड़ी
६०.	हरीदास, मतैयाँ	
	रामदास, कँधिया, पूरना	पनवाड़ी।

९१.	किशोरी देवी अरजरिया	कुलपहाड़
९२.	भुवनेश्वरी देवी	महोबा
९३.	सरस्वती देवी	जैतपुर
९४.	सरयू देवी पटेरिया	महोबा
९५.	रज्ज़ब अली आजाद	महोबा
९६.	दीनदयाल तिवारी	भड़रा
९७.	पूरन लाल अग्रवाल	श्रीनगर
९८.	उमा दत्त शुक्ला	महोबा
९९.	रुक्मणी देवी	महोबा
१००.	भगवानदास ढीमर	महोबा

साक्षात्कार - सूची

(स्वातन्त्र्य सेनानियों तथा उनके परिवारीजनों से लिए गये साक्षात्कार)

क्रमांक	नाम	स्थान/ थाना
१.	परमेश्वरी दयाल सक्सेना	जैतपुर
२.	किशोरी देवी अरजरिया	कुलपहाड़
३.	पूरन लाल अग्रवाल	महोबा
४.	क्रांति कुमार	जराखर
५.	शांति कुमार पटेरिया	महोबा
६.	वीरेन्द्र मोहन तिवारी	महोबा
७.	कर्नल प्रेम प्रताप सिंह	करगवाँ
८.	शरद चन्द्र गुरुदेव	गहरौली
९.	कृष्ण पाल सिंह	झींझन
१०.	पुष्पराज सिंह	झींझन
११.	मोती लाल सक्सेना	झींझन
१२.	रामशरण सक्सेना	झींझन

सेनानी चित्रावलि

Puran lal

Moti lal
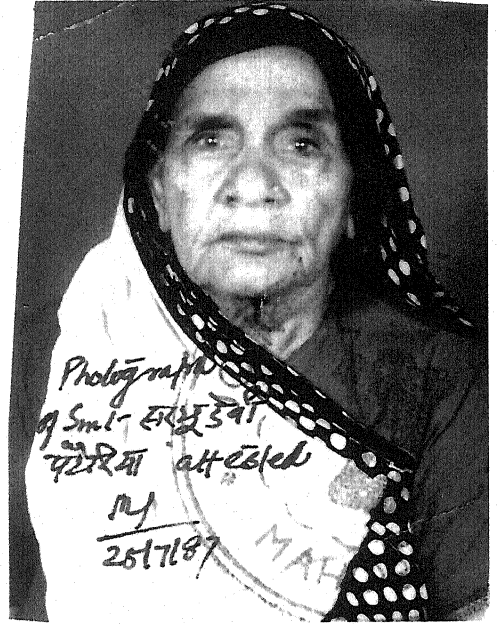
Saryu devi
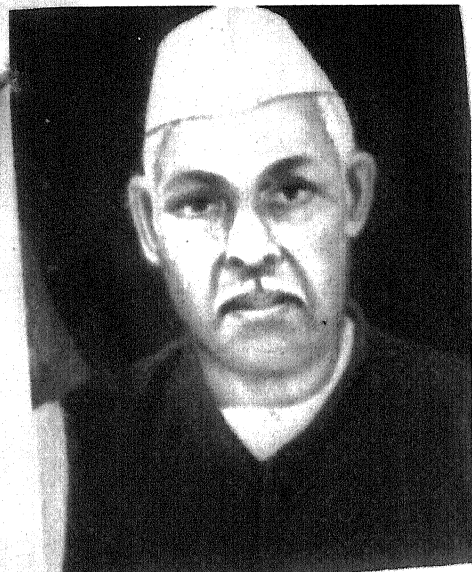
Shankar lal

Lal bahadur
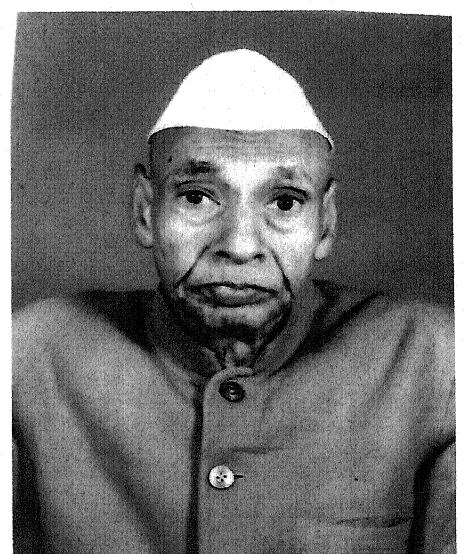
Chunni lal
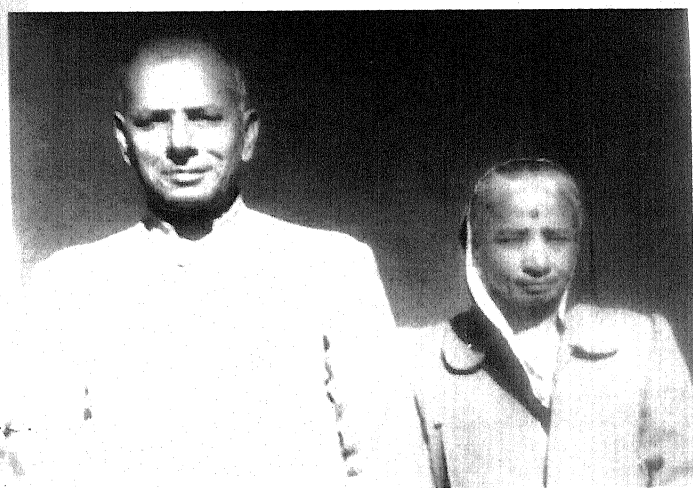
Brija gopal

Har dayal

Jhijhan ki pahadiyan

Jhijhan ka jangal
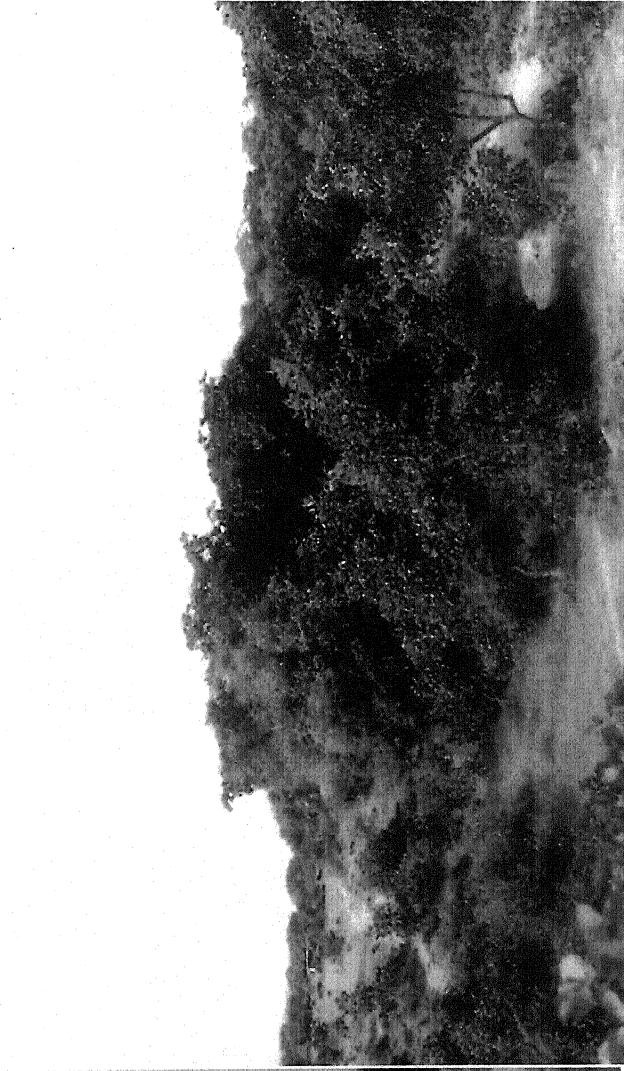
Jhijhan ka sarovar
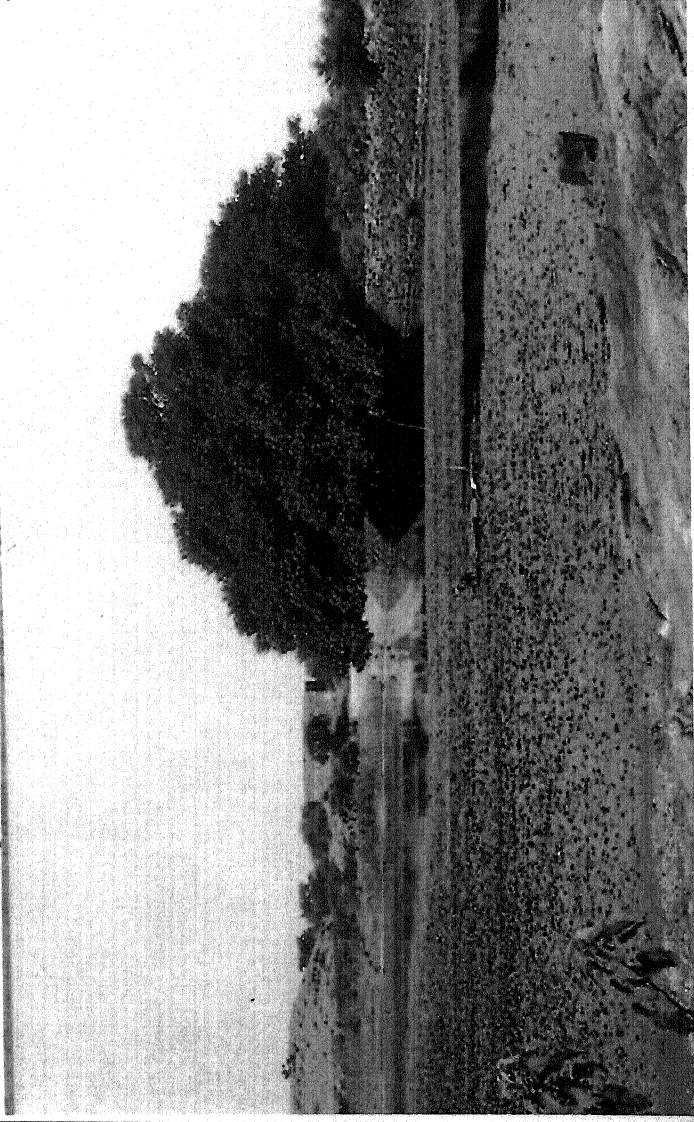
Jhijhan ki pahadiyan
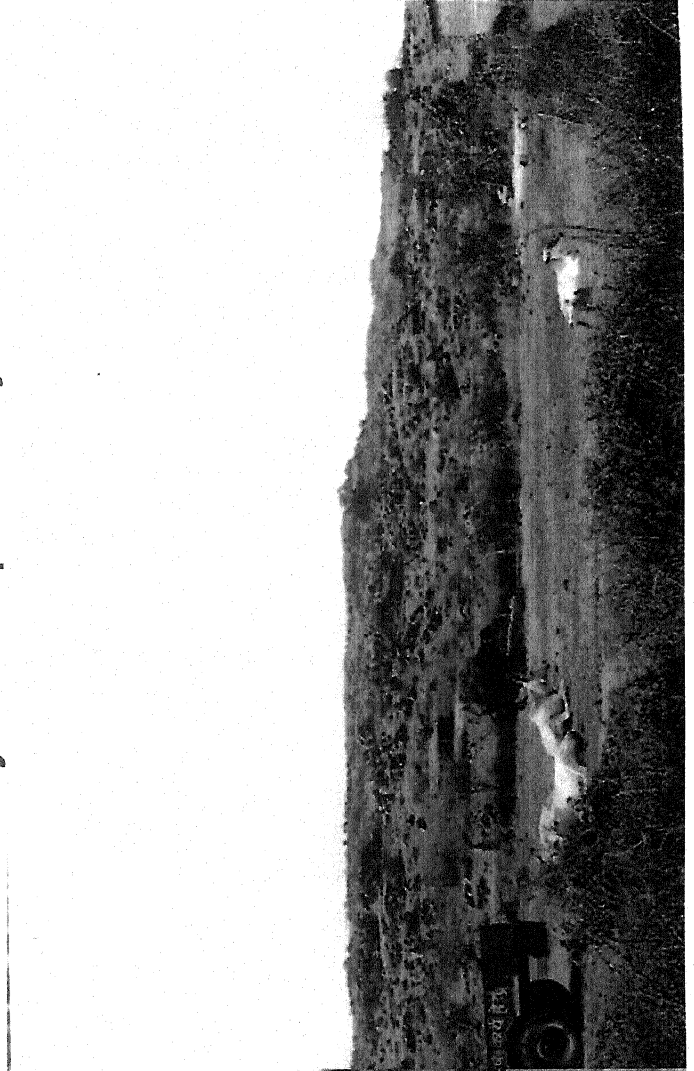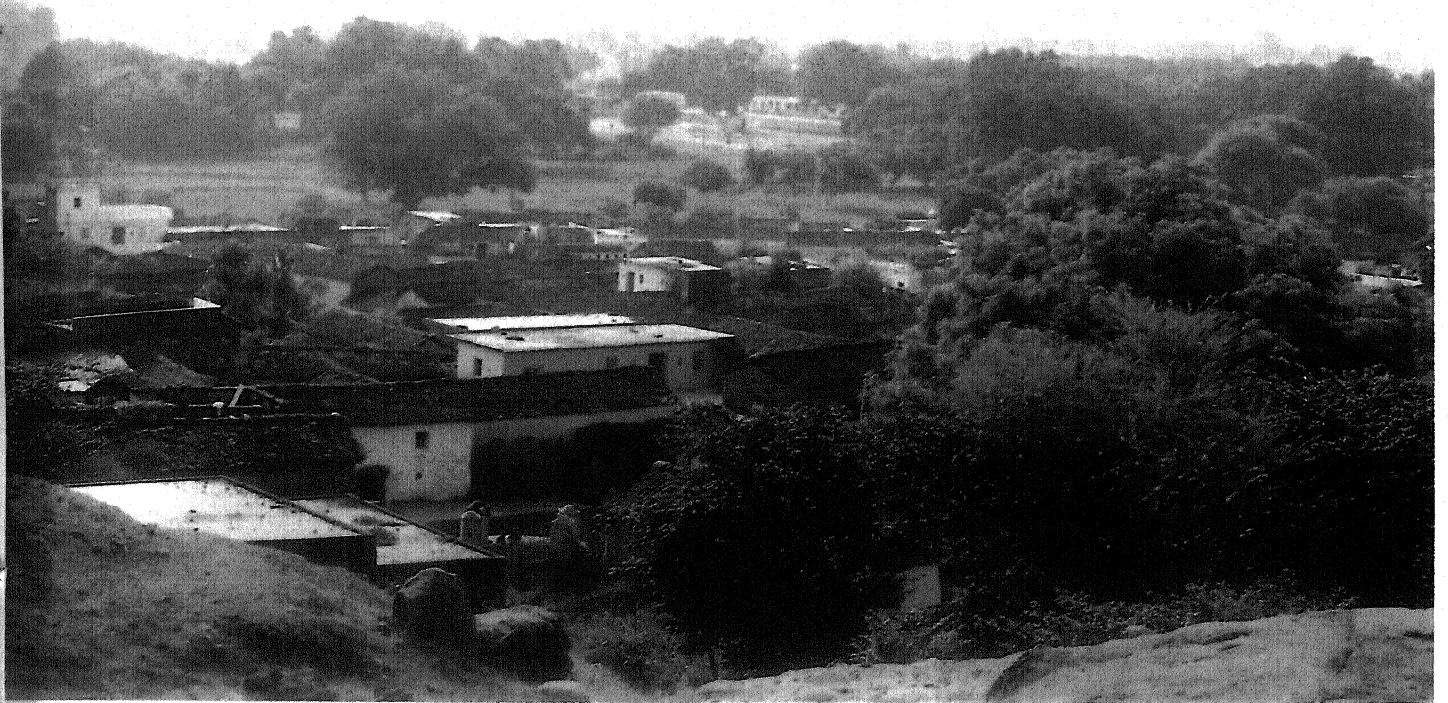
Jhijhan

Diman despat ki gadhi   Jait pur ki burj
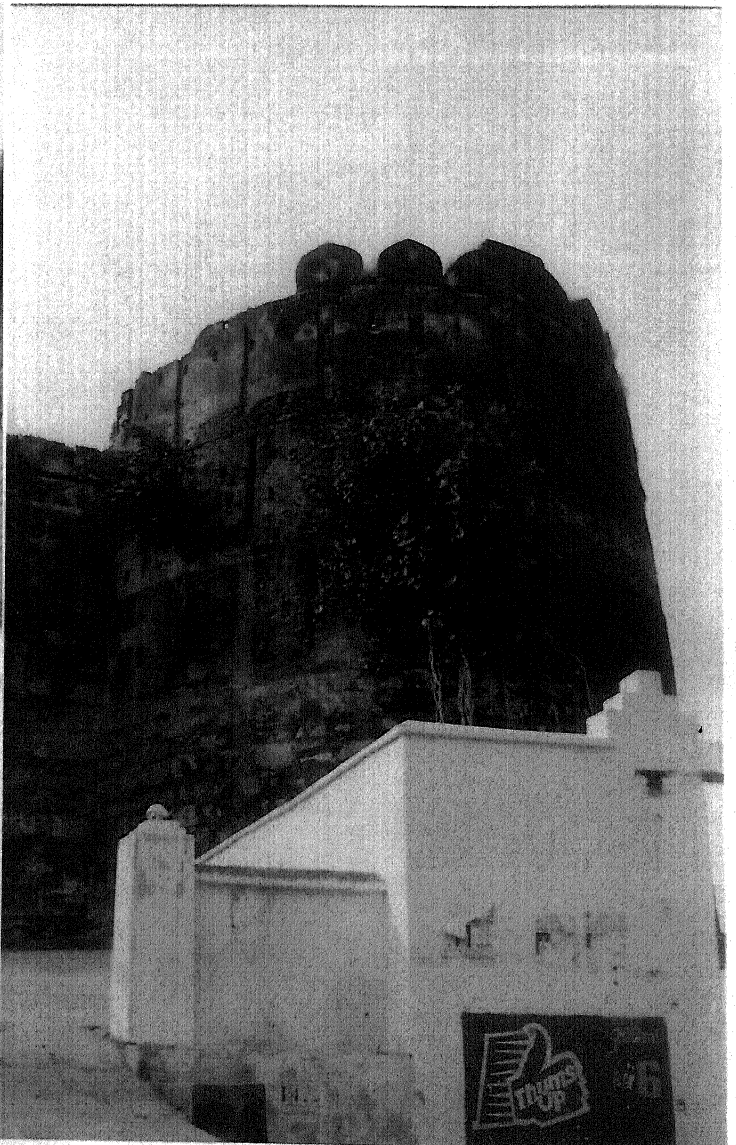
Lugasi makbara

Jhijhan

lugasi makbara
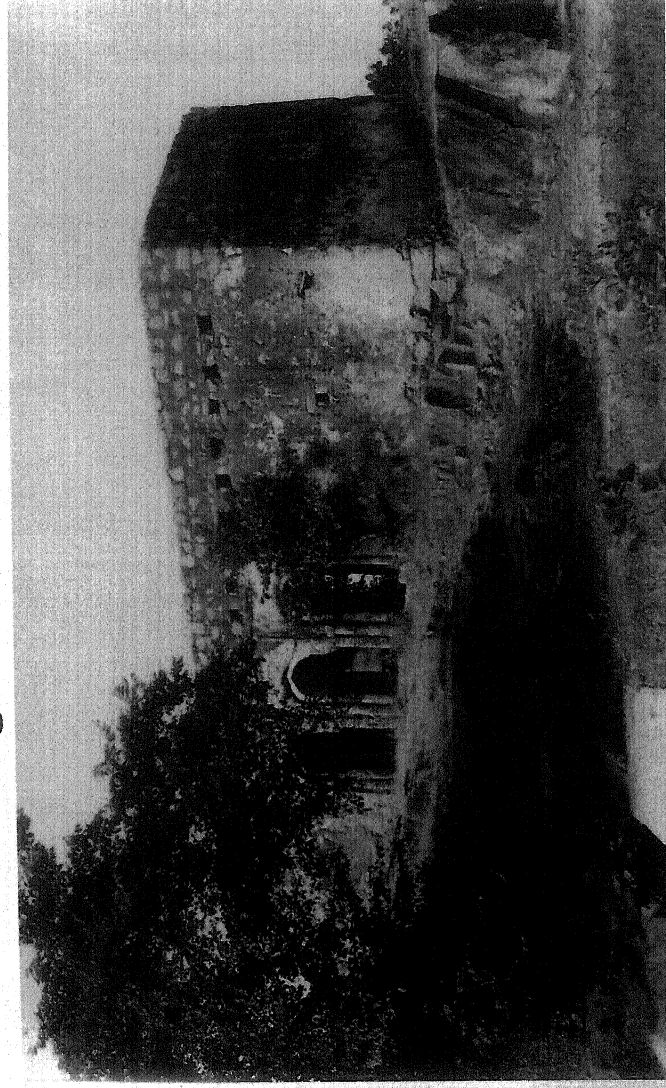
Lugasi makbara
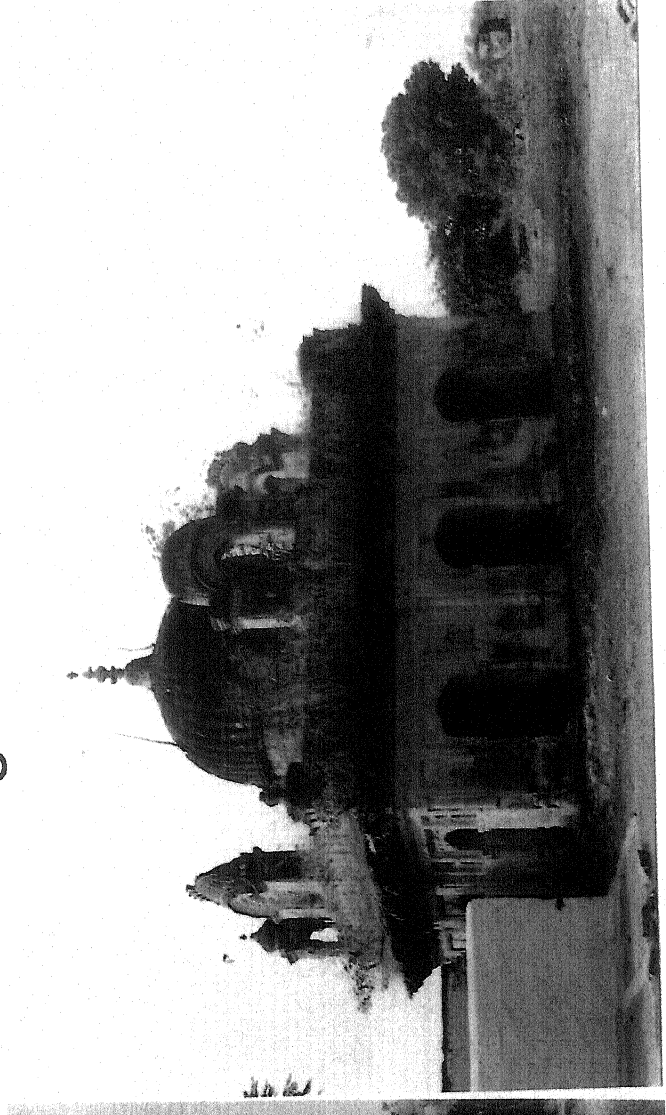
Jait pur ka kila
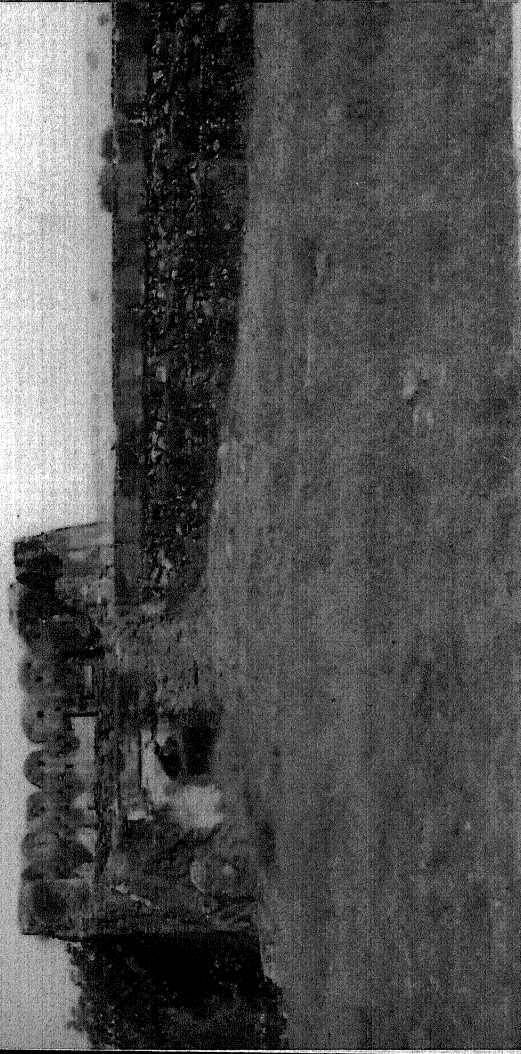
Jait pur ka rani mahal

Jait pur kile ka main gate
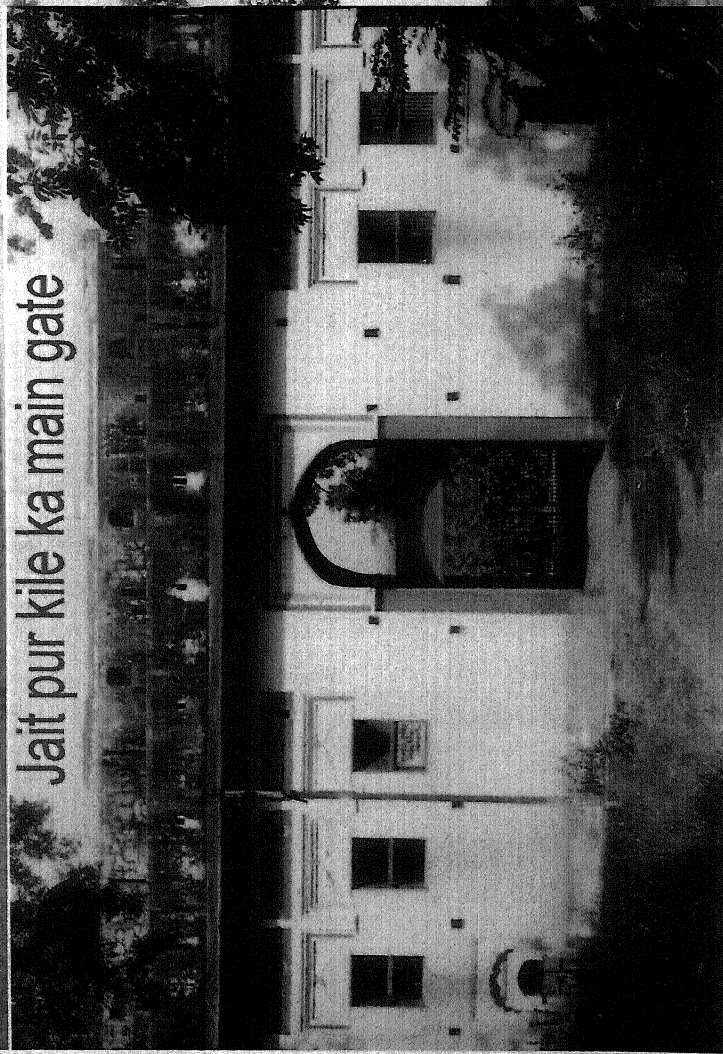
Despat ki gadhi
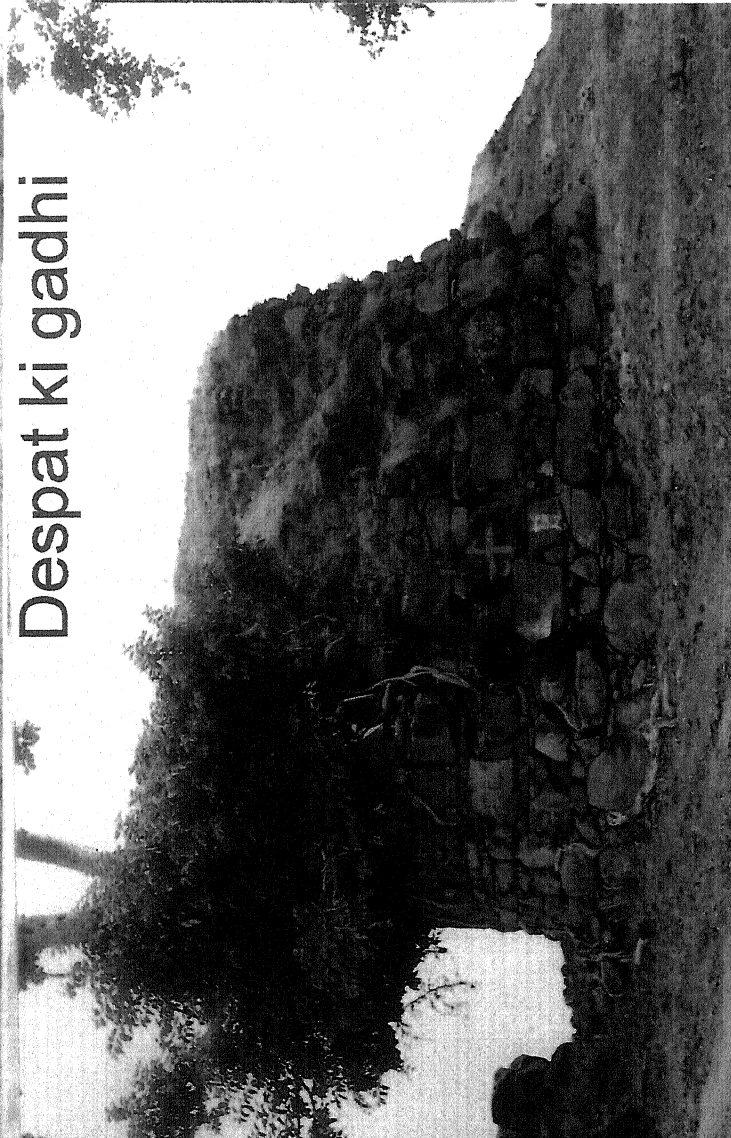
Jait pur kila
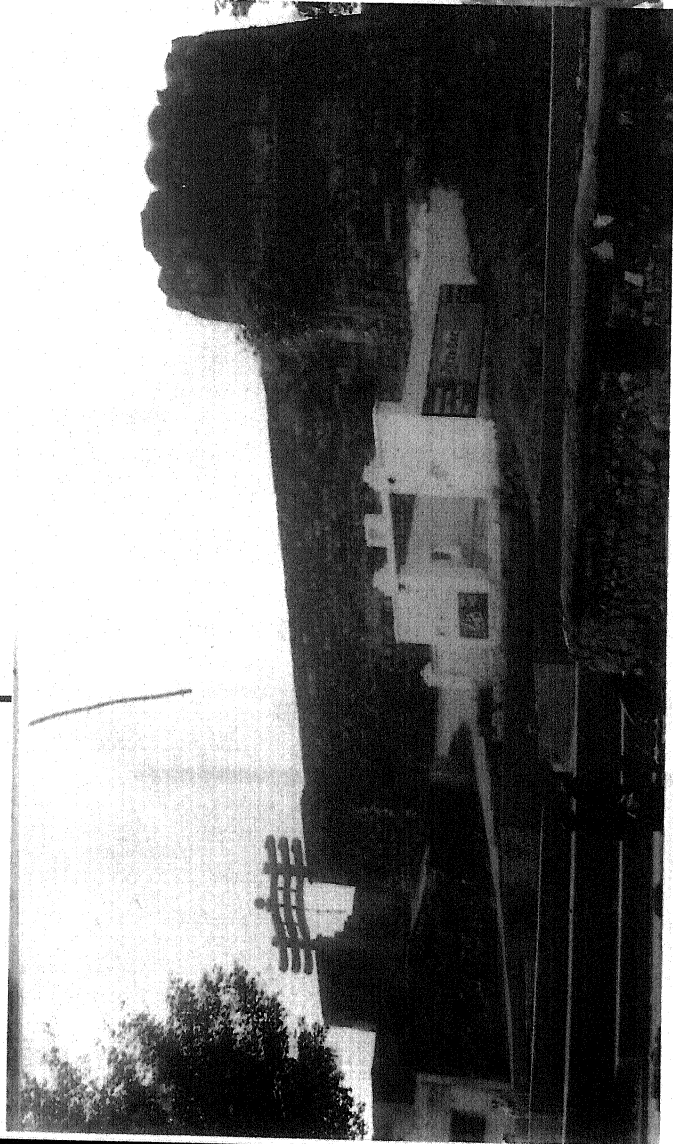
Despat ka balidan place

Sri nagar kila
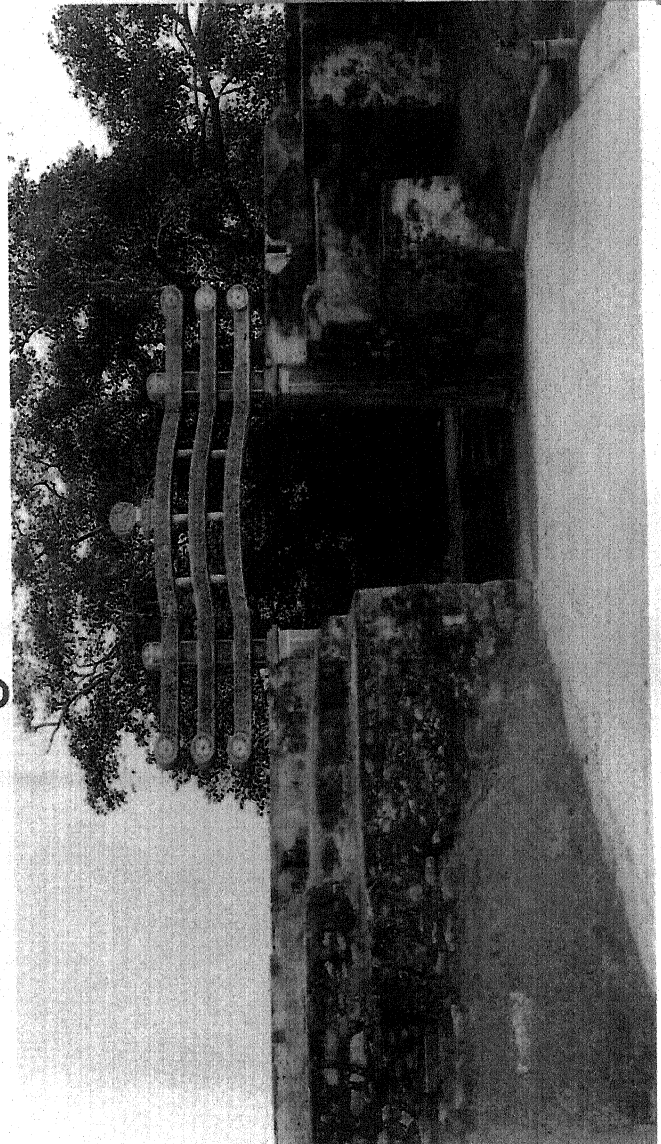
Doni village
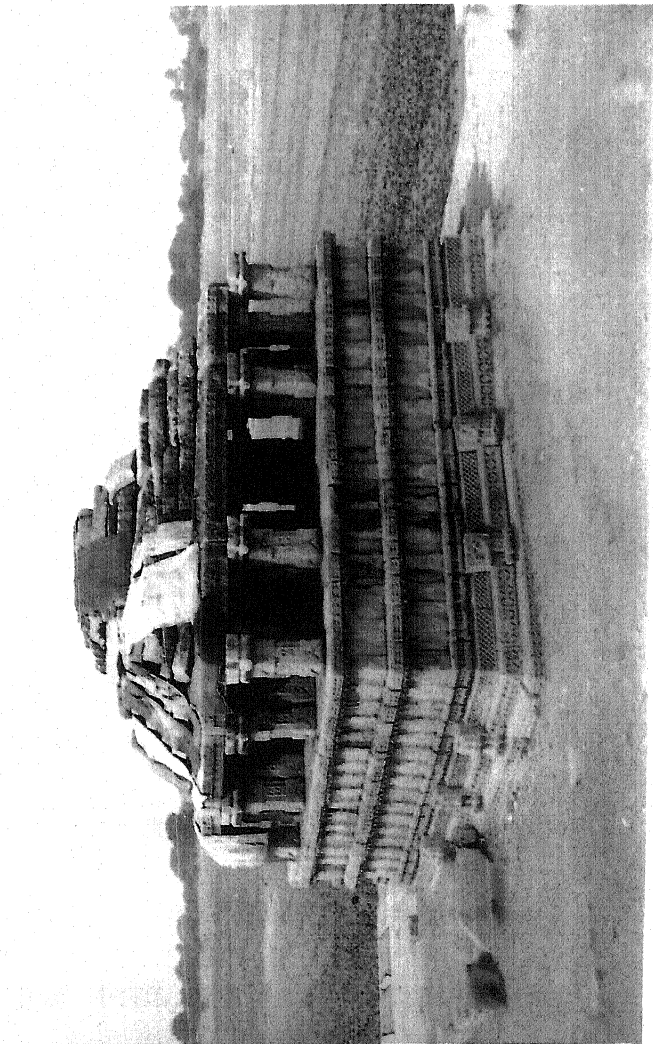
सन्दर्भ - ग्रन्थ

हिन्दी सन्दर्भ - ग्रन्थ

१- व्होरा, आशारानी, महिलायें और स्वराज, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९८८।

२- गुप्ता, विश्वप्रकाश, मोहिनी, स्वतन्त्रता संग्राम और महिलायें, नई दिल्ली, नमन प्रकाशन, १९९९।

३- डॉ० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५।

४- डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, भरुवा सुमेरपुर, सन्दर्शिता, २००१।

५- डॉ० भवानीदीन, वैभव बहे बेतवा धार, कानपुर, साहित्य रत्नालय, १९९८।

६- मिश्र, पं० द्वारिकेश (संपादक), अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन - समिति, १९८३।

७- बादल, श्याम सुन्दर (संपादक), दीवान शत्रुघ्न सिंह, अभिनन्दन ग्रंथ, राठ, जी० आर० वी० इं० का०, १९६०।

८- सिंह, दरयाव, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, बाबू बिहारीलाल विश्वकर्मा, सरीला, १९६७।

९- प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००।

१०- शर्मा, डॉ० एस० के०, डॉ० उर्मिला, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, नई दिल्ली एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, १९९९।

११- बघेल रामसिह, शहीद परिचय माला ५, ग्वालियर, नई सड़क, १९८५।

१२- गुप्त, मन्मथनाथ, भूले बिसरे क्रांतिकारी, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९७६।

१३- गुप्त, मन्मथनाथ, भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९८६।

१४- खत्री, रामकृष्ण, शहीदों की छाया में, हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, १९८३।

१५- मिश्र, कन्हैयालाल, उ०प्र० स्वाधीनता संग्राम की झलकियां, लखनऊ, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, १९७२।

१६ राय, (डॉ०), सत्या, भारत में राष्ट्रवाद, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, १९८७।

१७ सुन्दरलाल, भारत में अंग्रेजी राज, प्रथम तथा द्वितीय खण्ड, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९८२।

१८- सिंह, अयोध्या, भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली, मैकमिलन कम्पनी, १९८७।

१९- शुक्ला, चिन्तामणि, गाँधी युगीन स्वतंत्रता संग्राम में उ०प्र० का योगदान, मथुरा, राष्ट्रीय, प्रेस, १९८८।

२०- सरल, श्री कृष्ण, क्रांति कथायें, उज्जैन, बलिदान भारती, दशहरा मैदान, म०प्र०, १९८४।

२१- वर्मा, शिव, संस्मृतियाँ, दिल्ली, निधि प्रकशन, १६८५।

२२- सिंह, शंकर दयाल, भारत छोड़ो आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १६८५।

२३- ताराचन्द, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १६७७, १६८२, १६८२, १६८४।

२४- उपाध्याय, विश्वमित्र, शचीन्द्रनाथ सान्याल और उनका युग, नई दिल्ली, प्रगतिशील जन प्रकाशन, १६८३।

२५- जैन, दशरथ (प्रधान संपादक), बुन्देलखण्ड का स्वतंत्रता संग्राम, बुन्देलखण्ड केसरी छत्रसाल स्मारक ट्रस्ट, छतरपुर (म०प्र०), १६६५।

२६- १६२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकिया, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, १६७१।

२७- गुप्ता, अरुण चन्द्र, स्वतंत्रता संग्राम के पच्चीस वर्ष (१६२१ - १६४६), प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, प्रथम एवं द्वितीय खण्ड, १६६०,।

२८- श्रीवास्तव, भगवानदास, १८५७ का महान क्रांतिकारी, दिमान देशपत बुन्देला, बर्ग अकादमी, बाँदा, २०००।

२६- श्रीवास्तव, भगवानदास, स्वाधीनता आन्दोलन (१८५७-१८८६) शांति प्रकाशन, भोपाल, १६६५।

३०- माचवे, प्रभाकर (डॉ०), नमक आन्दोलन, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, १९८४।

३१- हसन, मोईनुद्दीन, गदर- १८५७, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली वि०वि०, १९९९।

३२- श्रीवास्तव, भगवानदास, १८५७ की क्रांति और विद्रोही राजा बरवत वली, १९९५।

३३- श्रीवास्तव, भगवानदास, बुन्देलखण्ड का इतिहास, विचार प्रकाशन, दिल्ली, १९८२।

३४- श्रीवास्तव, भगवानदास, १८५७ की क्रांति, नौगांव छावनी से अंग्रेजों का पलायन, २००२।

३५- शर्मा, रामविलास, स्वाधीनता संग्राम बदलते परिप्रेक्ष्य, हिन्दी माध्यम, कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, वि०वि०, १९९२।

३६- मेहरोत्रा, डॉ० एन०सी०, उ०प्र० में क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १९९९।

३७- वर्मा, वृन्दावन लाल, १८५७ के अमर वीर, मयूर प्रकाशन, प्रा० लिमि०, झाँसी, १९८९।

३८- सिंह, देवेन्द्र कुमार, १८५७ का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन, जालौन, २०००।

३६- कश्यम डॉ० सुभाष, स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली वि०वि०, १६६७।

४०- नरेन्द्र भाई, विद्रोह की रणनीति, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, १६७६।

४१- नरेन्द्र भाई, गाँधी जी के सत्याग्रह और उपवास, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, १६७६।

४२- नरेन्द्र भाई, करो या मरो, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, १६७६।

४३- नरेन्द्र भाई, आत्म बलिदान, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, १६७६।

४४- नरेन्द्र भाई, स्वतंत्रता संग्राम, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, १६७६।

४५- नरेन्द्र भाई, लोक विद्रोह के आयाम, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, १६७६।

४६- साहू श्याम लाल, विन्ध्य प्रदेश के राज्यों का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, निवाड़ी, १६७५।

अंग्रेजी सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची

1. Gupta, Manmath Nath, They lived Dangerously. Hyderabad, Hindi Prachar Shabha, 1983.
2. Majumdar, R.C. History of freedom movement, part- 1, Culcutta, firlma K.L. Ganguli street, 1977.
3. Rizvi, S.A.A. freedom struggle in U.P. Part- 1 & 5. Lucknow Pub. Deptt. U.P., 1957.
4. Sharma, S.R. Freedom movement, Delhi, B.R. Publishing Corporation, 1988.
5. Singh Balwant I.A.S. U.P. Distt. Gazetteers Hamirpur, Govt. of U.P. Allahabad, 1988.

स्मारिका, पत्र, पत्रिकायें, पाण्डुलिपियाँ एवं अन्य रिपोर्ट्स

१– अग्रवाल, डोरीलाल एवं अन्य (संपा० मण्डल) स्मारिका, आगरा, शहीद भगत सिंह स्मारक समिति, ४, ५, ६, अप्रैल, १६८६।

२– अवस्थी, राजेन्द्र (संपा०) साप्ताहिक हिन्दुस्तान, स्वाधीनता दिवस विशेषांक, दिल्ली, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, १७ से २३ अगस्त १६८६।

३- चतुर्वेदी, पं० बनारसीदास एवं अन्य (संपादक मण्डल), स्मारिका, आगरा, शहीद भगत सिंह स्मारिका समिति, ६, १० अप्रैल १९८५।

४- गणेश मंत्री, (कार्यकारी संपादक), धर्मयुग (सम्पूर्ण स्वतन्त्रता संग्राम भाग- दो), बम्बई, टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, १४ से २० अगस्त १९८८।

५- रावत्, श्रीपति सहाय, महान स्वतन्त्रता सेनानी, हस्त लिखित अप्रकाशित अभिलेख, जराखर, हमीरपुर।

६- पटेरिया, विशेश्वरदयाल, स्वातन्त्र्य सेनानी, हस्तलिखित अप्रकाशित अभिलेख, महोबा।

७- अग्रवाल, अनिल कुमार (प्र० संपा०) अमर उजाला आगरा, १५ अगस्त १९८९।

जिला अभिलेखागार, हमीरपुर से प्राप्त अभिलेख
थानेवार अभिलेख

१. थाना पनवाड़ी, जिला- महोबा, फाइल सं०- ०१ से २८ तक

२. थाना कुलपहाड़, महोबा, फाइल सं०- ०१ से २५ तक

३. थाना- महोबकण्ठ, महोबा, फाइल सं०- ०१ से १५ तक

४. थाना- महोबा, महोबा, फाइल सं०- ०१ से २६ तक

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से प्राप्त अभिलेख

१. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ पोलिटिकल प्रोसिडिंग्स ३०.१२.१८५६, भाग- ७ (अनुक्रमांक- १३००) के आधार पर।

२. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ पोलिटिकल प्रोसिडिंग्स ३०.१२.१८५६, भाग- ७ (अनुक्रमांक- १२७०) के आधार पर।

३. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ६५/६७ जून १८६३ के आधार पर।

४. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- १७८ दिनांक ०४ नवम्बर १८५६ - फारेन पोलिटिकल पत्र क्रमांक १३२ दिनांक २० नवम्बर १८५६ के आधार पर।

५. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ३४ अक्टूबर १८५८ के आधार पर।

६. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ पोलिटिकल पार्ट- ५ दिनांक ३० दिसम्बर १८५६ के क्रमांक ११३० के आधार पर।

७. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ११२१ दिनांक ३१ दिसम्बर १८५८ पार्ट- ११ क्रमांक २१४० के आधार पर।

८. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ६१ दिनांक २२ नवम्बर १८५६ के आधार पर।

९. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- ४३३४ दिनांक ३० दिसम्बर १८५६ के आधार पर।

१०. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं०- १४१५ दिनांक १७ नवम्बर १८५६ के आधार पर।